हिन्दीऋग्वेदभाष्य

जिसको

श्री श्रीभगवत्तात्मज पं॰ माधवप्रसाद त्रिपाठी सामवेदी
हेडमास्टर हाईस्कूल लखीमपुर व सभापति
सनातन द्विज धर्मसभा लखीमपुर ने
संस्कृतमूल से हिन्दी में धर्म रक्षा
की अर्थ भाषानुवाद किया ॥

धर्मसभा लखीमपुर की आज्ञानुसार

लखीमपुर ॥

पं॰ मथुराप्रसाद व प्रयागदत्त मिश्र के हिन्दीप्रभा प्रेस
में मुद्रित हुवा ता॰ २५ जनवरी सन् १८८१ ई॰

प्रथमवार २००० प्रति मूल्य प्रति पुस्तक ॥)

सूचीपत्र ॥

—:

प्रथम अनुवाक ॥

द्वितीय अनुवाक ॥

ओ३म नमः

हिन्दी ऋग्वेद संहिता

अथ दशम मण्डल ॥

अथ प्रथम अनुवाक

अग्रेबृहन्निति सप्तस्य प्रथमं सूक्तं

१—हे महान् अग्नि उषाकाल के पूर्व प्रज्वलित होकर ज्वाला रूप से उठते हो रात्रि के अन्धकार को निकाल कर अपने ज्योतिरूप से लक्षित होते हो शोभन ज्वाला युक्त कर्मार्थ अग्नि आप प्रकाशमान ज्वाला से सर्वलोक को और सम्पूर्ण यज्ञ गृह को पूर्ण करते हो ॥

२—हे कल्याणरूप ओषधियों को विशेष मथने से उत्पन्न ओषधियों में वर्तमान अग्नि द्यावापृथिवी के गर्भ आपहैं आप चित्रवर्ण बालक हो रात्रि वत् अन्धकार को अपने तेज से दूर करते हो मातृरूप ओषधियों से आप शब्द करके उत्पन्न होते हो ॥

३—हे उत्कृष्ट विद्वान् महत् उत्पन्न इस प्रकार से व्याप्त गुण युक्त अग्नि इस तीसरी यज्ञ में हमारी रक्षाकरो जो अग्नि कि अपने मुखसे जल उत्पन्न करता है उस अग्नि को इस लोक में स्थित स्तोतागण समान मन से प्रार्थना करते हैं ॥

४—हे अग्नि जगत् के धारण करने वाली और पैदा करने वाली ओषधि अन्नकेदहके आप की सेवा करती है और आप इन ओषधियोंमें प्राप्त होते हैं—आप जीर्ण ओषधियों में दाहभूत होकर जाते हैं—मनुष्य प्रजा के मध्य आप देवतों के बोलानेवाले है ॥

सूक्त	ऋषि	देवता	विनियोग
६	तथा	तथा	गत
७	अंगिरा के पुत्र अयास्य	तथा	तथा
८	तथा	तथा	तथा

षष्ठ अनुवाक ॥

सूक्त	ऋषि	देवता	विनियोग
१	वध्र्यश्व पुत्र सुमित्र	अग्नि	तथा
२	तथा	तथा	तथा
३	अङ्गिरापुत्र बृहस्पति	तथा	तथा
४	तथा	तथा	तथा
५	शक्ति पुत्र गौरवीत	तथा	तथा
६	तथा	तथा	तथा
७	प्रियमेधपुत्र सिन्धुक्षित	तथा	तथा
८	इरावत्पुत्र जरत्कर्ण	ग्रावाण	तथा
९	भृगुगोत्री स्यूमरश्मि	मरुत	तथा
१०	तथा	तथा	तथा
११	वाजंभरपुत्र सप्ति	अग्नि	तथा
१२	तथा	तथा	तथा
१३	भुवनपुत्र विश्वकर्मा	विश्वकर्मा	तथा
१४	तथा	तथा	तथा
१५	तपसपुत्र मन्यु	मन्यु	तथा
१६	तथा	तथा	

इति

६—हे अग्नि संपूर्ण यज्ञोंके सुख भावार्थकेतु प्रज्ञापक आपको प्रजापति ने उत्पन्न किया और मनुष्य युक्त सुदर्शनीय पृथिवी और सर्व जन के हित वृष्टि को पैदाकिया और हवि लेजाने वाले देवतों को देता भया ॥

७—हे अग्नि द्यावापृथिवी ने वा जल ने वा त्वष्टा सुजनिमा ने आप को जिस मार्ग से उत्पन्न किया है और हे अग्नि जिस मार्गसे पितर गये हैं उसी पंथ से हवि लेजाने वाले आप को हम प्रज्वलित करते हैं। कि आप प्रकाश मान हो ॥

इन इति सप्तमं तृतीयं सूक्तं

१—हे राजन् अग्नि आप सबके स्वामी हो हवि लेकर और देवतों के पास जाने वाले हो संदीप्त रुद्र असुरों को भय देनेवाले हो यजमान को धन देने में शुद्ध दर्शन योग्यहो सबके जाननेवाले विशेष दीप्यमान हो और बड़ी ज्योति से रात्रि को आते और श्वेत वर्ण दीप्त को उत्पन्न करते हो ॥

२—वह अग्नि कृष्ण वर्ण रात्रि को अपनी ज्वाला से प्रकाश देता है आदित्य बड़ा पिता उषा स्त्रीको उत्पन्न करताहै (सूर्य्य से उषाभिकलतीहै) अग्नि दिवलोक से वसु के साथ सूर्य्य के दीप्तिको ऊपर स्तंभित करके प्रकाशतीहै ॥

३—भद्र अग्नि कल्याण कारी उषा के साथ आता है असुरों की जारयिता अग्नि अपनी स्वसा उषा के साथ आता है अच्छे दीप्तवाले तेज के साथ वर्त्त मान श्वेत वर्ण तेज से युक्त (आदित्य) कृष्णवर्ण अन्धकार में स्थित होता है॥

४—अग्नि के सम्बन्धी किरण धारण करने वाले बृहत् स्तुति करने वाले जनों को नहीं बाधता है वह सखि मित्र पूजनीय कामनाका देनेवाला महत् शोभन मुखवाला तम का दूर करनेवाला आदित्य अग्नि देवतों को तृप्त करने वाला और जानने वाला है ॥

५—महत् रोचमान शोभन दीप्ति वाले अग्नि की किरणें मरुत् के समान शब्द करती हैं वह अग्नि अत्यन्त प्रशस्त तेज से युक्त प्रकाशमान खेलता भया स्वर्ग लोक को प्राप्त होता है ॥

६—वह शोषक दर्शनीय वज्रायुध वाला अग्नि जिस्की किरणें वायु के साथ शब्दको करती हैं देवतों का मुख्य चलाने वाला त्रिभुवन शील महत् अग्नि पुराने श्वेत वर्ण शब्दायमान तेज से प्रकाश करता है ॥

५—हम महत् श्री पाने के अर्थ यजमानों के अतिथि अग्निकी स्तुति करते हैं यह अग्नि मित्र रूप यज्ञ का होता सब यज्ञों का हेतु श्वेत वर्ण अपनी महत्व से सब देवतो के मर्यादि को प्राप्त है ॥

६—हे दीप्यमान अग्नि हिरण्यरूपी तन और तेज रूपी वस्त्र के धारण करने वाले पृथिवी की नाभि अर्थात् उत्तर वेदीपर स्थित इडासे उत्पन्न आ-होयमान अग्नि आप पुरोहित हैं इस यज्ञ में इन्द्रादि देवतों का आप पूजन कीजिये ॥

७—हे अग्नि आप सर्वदा द्यावापृथिवी को विस्तार देतेहैं जैसे पुत्र माता पिता को अपने देह को भोजन से विस्तृत करता है—हे युवतम आप हविकी कामना से आइये और इस यज्ञ में इन्द्रादि देवतों को पहुंचाइये ॥

पिप्रीहीति सप्तर्षं द्वितीयं सूक्तं

१—हे यविष्ठ अग्नि स्तुति सुनने की कामना करने वाले देवतों को हविसे संतुष्ट कीजिये—हे यज्ञपति यज्ञ कालके जानने वाले आप उन देवतों को इस यज्ञ में पूजा कीजिये हे अग्नि जो देवतोंके ऋत्विज हैं उनके साथ देवतो का पूजन कीजिये हे अग्नि आप देवतों के मध्य में यष्टृतम हो ॥

२—हे अग्नि आप यजमानके होत्र और पोत्रकर्म की कामना करते हो मेधावी सत्यवान् धन के देने वाले आप हो—हम देवतों को हवि से स्वाहादि हैं—प्रशस्य अग्निदेव देवतों के पूजनको करता है ॥

३—हम देवतों के मार्ग के चलने वाले होवें जिन में देवतालोग चलते हैं उन्ही मार्ग से हमको भी चलने की शक्ति होवे वह विद्वान् अग्नि देवतों का पूजन करता है वह यज्ञ और काल की कल्पना करता है ॥

४—हे देवता अत्यन्त अज्ञानी हम आपके कर्म के न जानने वाले होकर कर्म को दूषित करते हैं सर्व कर्म के जानने वाले अग्नि सम्पूर्ण विश्व को प-लित करते हो और वही अग्नि देव याग योग्य कालसे देवतों को कर्माङ्गभाव को समर्थ देता है ॥

५—हीन उत्साह वाला मनुष्य विशिष्ट ज्ञान रहित अल्पबुद्धि से युक्त यज्ञ के कर्म को नहीं जानता है कर्म का जानने वाला वजिष्ट होताग्नि योग्य काल में देवतों को हविसे पूजन करता है ॥

६—हे अग्नि संपूर्ण यज्ञोंके सुख नानावर्णकेतु प्रज्ञापक आपको प्रजापति ने उत्पन्न किया और मनुष्य युक्त सुदर्शनीय पृथिवी और सर्व जन के हित सृष्टि को पैदा किया और हवि लक्षण अन्न देवतों को देता भया॥

७—हे अग्नि द्यावापृथिवी ने वा जल ने वा त्वष्टा सृजनिमा ने आप को श्रेष्ठ मार्ग से उत्पन्न किया है और हे अग्नि जिस मार्गसे पितर गये हैं उसी पंथ से हवि लेजाने वाले आप को हम प्रज्वलित करते हैं। कि आप प्रकाशमान हो॥

इन इति समर्पं तृतीयं सूक्तं

१—हे राजन् अग्नि आप सबके स्वामी हो हवि लेकर और देवतों के पास जाने वाले हो संदीप्त रुद्र असुरों को भय देनेवाले हो यजमान को धन देने में शुद्ध दर्शन योग्यहो सबके जाननेवाले विशेष दीप्यमान हो और बड़ी ज्योति से रात्रि को आते और श्वेत वर्ण दीप्ति को उत्पन्न करते हो॥

२—वह अग्नि कृष्ण वर्ण रात्रि को अपनी ज्वाला से प्रकाश देता है आदित्य बड़ा पिता उषा स्त्रीको उत्पन्न करताहै (सूर्य से उषानिकलतीहै) अग्नि द्युलोक से वसु के साथ सूर्य के दीप्तिको ऊपर स्तंभित करके प्रकाशतीहै॥

३—भद्र अग्नि कल्याण कारी उषा के साथ आता है असुरों को जारयित अग्नि अपनी स्वसा उषा के साथ आता है अच्छे दीप्तवाले तेज से साथ वर्त्तमान श्वेत वर्ण तेज से युक्त (आदित्य) कृष्णवर्ण अन्धकार में स्थित होता है॥

४—अग्नि के सम्बन्धी किरण धारण करने वाले हवन् स्तुति करने वाले जनों को नहीं बाधता है वह सखि शिव पूजनीय कामनाका देनेवाला महत् शोभन मुखवाला तम का दूर करनेवाला आदित्य अग्नि देवतों को यज्ञ करने वाला और जानने वाला है॥

५—महत् रोचमान शोभन दीप्ति वाले अग्नि की किरणें महत् के समान शब्द करती हैं वह अग्नि अत्यन्त प्रशस्त तेज से युक्त प्रकाशमान दिखता भया स्वर्ग लोक को प्राप्त होता है॥

६—वह शोधक दर्शनीय वज्रायुध वाला अग्नि जिसकी किरणें वायु के साथ शब्दको करती हैं देवतों का मुख्य बलाने वाला त्रिभुवन शील महत् अग्नि पुराने श्वेत वर्ण शब्दायमान तेज से प्रकाश करता है॥

७—हे अग्नि आप हमारी यज्ञ में देवतों को लाइये। आप द्यावा पृथिवी युवती के बीचमें चलने वाले अग्नि हमारी यज्ञ में बैठिये। हे अग्नि सुख देनेवाली चाल से शीघ्र चलनेवाले घोड़ों पर हमारी यज्ञ में आवो॥

अत इति सप्तम चतुर्थ सूक्तं

१—हे अग्नि मैं आप को हवि देता हूं आपके अर्थ उत्तम स्तोत्र पढ़ताहूं। आप सब के वन्दनीय हैं हमारी यज्ञ में आप सन्निहित हूजिये—आप निरूदक देश में जल देने वाले के समान हैं यज्ञ करने वाले मनुष्य को हे जगत् के स्वामी आप धन दो॥

२—हे युवतम अग्नि आपको यजमान फल प्राप्ति अर्थ सेवते हैं जैसे गवें शीत स्थान के दुःख दूर करने के अर्थ उष्ण गोष्ठ को जाती हैं। वैसेही आप इन्द्रादि देवतों को हवि पहुंचाने में मनुष्य के दूत होकर जाते हो आप द्यावा पृथिवी के बीच में बृहत् हो आप अन्तरिक्ष द्वारा हवि लेकर जाते हो ऐसे आप की स्तुति मैं करता हूं॥

३—हे अग्नि जयशील आप को पुत्र के समान पृथिवी माता धारण करती है इस लोक में प्रकाशमान अन्तरिक्ष के मार्ग से आप जाते हो आप हवि लेकर देवतों में उस पशु के समान जो गोष्ठमें छोड़दिया जाता है जाते हो॥

४—हे अमूढ़ अग्नि आप का माहात्म्य हम मूढ़ नहीं जानते हैं आप अपना माहात्म्य जानते हो आप से अन्य कोई जानने के योग्य नहीं है किन्तु आप जीर्ण ओषधि के साथ सोते हो और जिह्वा ज्वाला से खाते हो हे विश्पति आप युवती आकृति का दीर्घ ज्वाला से अच्छी प्रकार स्वाद लेते हो॥

५—हे स्तुति योग्य अग्नि जिस स्थान में आप उत्पन्न हुए जिस पुरानी जीर्ण ओषधि की अरणी से रक्षा पाई धूम्र केतु अग्नि सम्पूर्ण वन में आप बैठते हो सर्वदा शुद्ध उदक में व्याप्त वृषभ अग्नि उस स्थान में जाता है और मनुष्य अच्छी बुद्धिवाला होकर उस अग्नि की हवि से पूजन करता है॥

६—हे अग्नि वन गामी देह छोड़ने वाले चोर के समान जो पथिक को लूटने के अर्थ रस्सीसे खींच कर किसी स्थान में बांध कर रखता है वैसे ही दशों अंगुलियों से रज्जु को लेकर आप को बांध कर मथते हैं अग्नि आप के

अर्द यह नई स्तुति मैं करता हूं अपने प्रकाशमान पद से मेरी यज्ञ को यो-
जित कीजिये जैसे रथ को घोड़े योजित करते हैं ॥

७—हे जातवेद अग्नि आप के अर्थ हवि वृद्धि को पाती है किन्तु यह किसी द्वारा स्तुति मर्यादा बढ़े इस कारण हे अग्नि हमारे पुत्रों और पौत्रों को पालिये और आप हमारे यज्ञ की रक्षा कीजिये ॥

एक समुद्र इति सप्तर्च पञ्चमं सूक्तं

१—असहाय धन का धारण करनेवाला बहु जन्म लेनेवाला उत्तम जल उत्पादक अग्नि हमारे हृदय को देखता है और वह अन्तर हित ज्योतिवाला प्रातर और सायंकाल के समीप वर्ती रात्रि को सेवन करता है—हे अग्नि जल के मध्य में निहितपद से आप मेघ में जावो ॥

२—मंत्र को जानने वाले बड़े यजमान एकनीलवर्ण कामनाके देनेवाले अग्नि को पाते हैं—कवि लोग ऋतके पदको सर्वदा रक्षा करते हैं—अन्तरिक्ष में स्थित दिव्य उदक को धारण करते हैं ॥

३—सत्ययमी प्रज्ञावती द्यावा पृथिवी इस अग्नि को धारण करती है काल परिमाण करके यज्ञ में उत्पन्न बालक को वृद्धि देती है—स्थावर जंगम की नाभि वह मेधावी अग्नि है विविध प्रकार के मनवाले यजमान इस अग्नि को पूजन करते हैं ॥

४—यज्ञ के करने वाले पुरातन यजमान शीघ्र उत्पन्न अग्नि के अन्नार्थ सेवन करते हैं। द्यावापृथिवी इसके रहने का स्थान कहा जाता है। उदक से उत्पन्न आप का पूजन घृत और अन्न से यज्ञ में होता है ॥

५—स्तूयमान विद्वान् अग्नि शोभमान सात भगनी के साथ मद के करने वाले यज्ञ में अपने तेज से दिख पड़ा। जो पुराजात अग्नि द्यावापृथिवी के मध्य में उन के साथ विराजता है पृथिवी का पृथिवर्ण रूप वह अग्नि जानता है ॥

६—(क) मेधावी ऋषि सात मर्यादाओं के कर्म करता है उनमें से एक का भी न करने वाला पाप को पाता है। वह मनुष्य का निरोधक अग्नि हमारे समीप रश्मि के विसर्जन मार्ग में और उदक में बैठता है ॥

७—सत् और असत् अर्थात् सम्पूर्ण जगत् परमकारणात्मा में था पृथिवी के समीप दक्षप्रजापति का जन्म होता भया—अग्नि [illegible] ों में

पहिला था और इस्से पूर्व काल में अग्नि वृषभ और धेनु दोनों रूप से था ॥

अयं समत्थेति समर्चं षष्टं सूक्तं

१—यह दीप्यमान अग्नि जिस की पालना से अपने गृह में यज्ञ करके स्तोता सुख को पाता है सूर्य के किरणों में समस्त तेज से परिवीत होकर सर्वस्थान में जाता है ॥

२—सत्यवान अर्च्चित दीप्यमान अग्नि देव विविध तेज से प्रकाश करता है जो अग्नि सत्यकर्म्म वाले अर्थात् हवि देने वाले यजमान के अर्थ बिना थके हुए चला करता है जैसे सर्वदा चलनेवाला घोड़ा चलने में नहीं थकता ॥

३—जो अग्नि सम्पूर्ण यज्ञ का स्वामी है और विश्वायु है उषा के उदय और यज्ञ काल में अन्न बल से अर्च्चित रथ पर चढ़ता है और जिसके अर्थ यजमान माननीय हवि को आदर पूर्वक छोड़ता है उसी अग्नि को यज्ञ अर्थ यजमान बुलाता है ॥

४—बल से हृष्ट स्तोत्रों से सेव्यमान सप्रपतन अग्नि की स्तुति करता हूं मन्द्र होता यजिष्ट अग्नि देवतों से युक्त देवतों को हवि खिलाता है ॥

५—हे ऋत्विज भोगके देनेवाले ज्वालात्माकाम्यमान अग्निको इन्द्र के समान स्तुति और हवि से सन्मुख पूजन कीजिए मेधावी स्तुति करनेवाले मनु बल से हराने वाले देवतों के बुलानेवाले जातवेद अग्नि की आदर से स्तुति कीजिए ॥

६—हे अग्नि आपका यह सम्पूर्ण वसु धन है जैसे जल्दी चलनेवाले घोड़े संग्राम में चलते हैं हे अग्नि वैसेही आप इन्द्र के तुल्य रक्षा हमको दीजिए ॥

७—हे अग्नि उत्पन्न आप ज्वाला में बैठकर आहुती के लेने वाले होते हो इस कारण से हवि के देने वाले यजमान आप के उस केतु को जानते हैं—विद्या गुण युक्त आप से रक्षित होकर वृद्धि को पाते हैं ॥

स्वस्तिन इति सप्तर्चं सप्तमं सूक्तं

१—हे देव अग्नि आप द्यावापृथिवी में सब प्रकार का धन हमारे स्वस्ति और यज्ञ अर्थ दीजिए हे दर्शनीय अग्नि अपने संभजनीय बाहु से पालन उपाय से रक्षा कीजिये हे अग्नि आप को हम बुलाते हैं ॥

२—हे अग्नि यह प्रार्थना आप के अर्थ उच्चारित है गो और अश्व के स-

दिन आप के दिये हुए हिरण्यादिक धन प्राप्त होवें मनुष्य आप के दिए हुए भोग को पाता है हे वरमन आप तेज युक्त हो हे सुजात आप स्तुति पाते हो ॥

३—मैं स्तोता अग्नि को पितर बन्धु भ्रातर संबन्धी सदा जानता हूं अग्नि के आहुनीय मुख का मैं पूजन करता हूं दिव लोक स्थित पूजनीय सूर्य के सम्बन्धी दीप्त मण्डल वालेको मित्र के अर्थ आराधन करता हूं ॥

४—हे अग्नि अनुश्री हमारी स्तुति जिसको कि हम लोगों ने आप के अर्थ किया है उस यज्ञ गृह में होम निष्पादक देवतों के बुलानेवाली आप के द्वारा होवें आप हमारी रक्षा करो आप के प्रसाद से हम यजमान होवें हम रोहिताश्व आप को दीप्तमान दिन में उत्तम हवि देते हैं ॥

५—प्रकाश से दीप्त मित्र के समान युक्त पुराने ऋत्विज यज्ञ के समाप्त कर्मी वाले अग्नि को यतमान बाहु से उत्पन्न करता है और होता पदवी पर बिठलाता है ॥

६—हे द्योतमान अग्नि दिव लोक में स्थित इन्द्रादि का पूजन आप ही कीजिए आप को अपकृष्ट ज्ञान वाला मनुष्य क्या जानता है आप को कुछ भी नहीं जानता है देव आप ठीक काल में देवतों का पूजन करके हे सुजात शोभन अग्नि आप अपनी देह को पूजिये ॥

७—हे अग्नि आप हमारे दृष्ट और अदृष्ट भय के रक्षक हूजिए आप अन्न के देने वाले हूजिए पूजनीय अग्नि आप हवि हम को पहुंचाइये आप हमारे शरीर को पालिए ॥

प्रकेतुनेति नवर्च अष्टमं सूक्तं

१—बड़े केतु से युक्त अग्नि द्यावा पृथिवी पर जाता है और देवतों के बुलाने के समय में वृषभ के समान शब्द करता है दिव लोक के अन्त और समीप के देशों के ऊपर पहुंचता है जल के स्थान अन्तरिक्ष में विस्तृत रूप से महत् अग्नि प्रकाशमान है ॥

२—कामना का देनेवाला उन्नत तेजस्क अग्नि आनन्द को पावे प्रशस्त धर्मवान् वत्स देवतोंको बुलावे देवतों के यज्ञमें वह अग्नि उत्साह के कर्मों को करे अपने आहुनीय स्थान में वह गुप्त है ॥

३—हे अग्नि द्यावापृथिवी से उत्पन्न सुस्नता को प्राप्त आप को यज्ञ के लि-

सायन काल में यष्टा लोग नियम से धारण करते हैं हे गमन शील अग्नि अपने तन में प्रकाशमान यज्ञ स्थान में व्याप्त हवि आहार से आप की देह को कवि लोग सेवते हैं ॥

४—हे वसु अग्नि आप अपने तेज से प्रत्येक उषा के पूर्व प्राप्त हूजिये आप रात्रि दिन के दीप्त देने वाले हूजिये—आप ने अपने शरीर से आदित्य को उत्पन्न किया—और यज्ञ के अर्थ सप्त पद को धारण किया ॥

५—हे अग्नि बड़ी यज्ञ के आप प्रकाशक हो और आप यज्ञ के रक्षक हो आप उदक देने के निमित्त आदित्य में जाते हो हे जातवेद अग्नि आप वृष्टि लक्षण उदक के नाती हो हे अग्नि आप जिस यजमान के हवि को सेवन करते हो उस के दूत हूजिये ॥

६—हे अग्नि कल्याण देने वाले वायु के साथ आप जाते हो भूयश और रजस लोक के नेता स्वर्ग लोक में प्रधान आदित्य को धारण किये हो हे अग्नि आप ज्वालों को हव्य वाहक करते हो ॥

७—हे त्रित संपूर्ण आयुध के जाननेवाले रक्षा से युक्त यज्ञ के मध्य में भाग के चाहने वाले आपको जगत् के पिता इन्द्रने अपने कर्मके निमित्त भजा बनाया—द्यावा पृथिवी की यज्ञमें सेव्यमान त्रितने इन्द्रके योग्यस्तुति की और आयुधों को जाना ॥

८—इस इन्द्रपृ रित त्रित ने अपने पिता के अस्त्र को जानकर गैरे साथ युद्ध किया और सात किरण वाले आदित्य के समान शुभ्र त्रिशीर्षा को इसने मारा और मूर्च्छा आने पर शुभ्र त्वष्टृ पुत्र की गवें चोरा ले गया ॥

९—मतपालक इन्द्रने क्रोधव्याप्त बल से शुभ्र त्वष्टृ पुत्र को विदारित किया—शुभ्र विश्वरूप त्वष्टृ पुत्र गवों के स्वामी के तीन सिर किये और शस्त्र से उनको काट डाला ॥

आपोहिष्ठेति नवर्चं नवमं सूक्तं

१—जैसे हे जल आप सुख के देने वाले हो वैसेही आप हमारे अर्थ अन्न के धारण करने वाले हो आप हमारे अर्थ बड़े रमणीय ज्ञान को धारण कीजिये ॥

२—हे जल आपका जो अत्यन्त सुख देने वाला रस है इस लोक में उस

हम को कर्म सेवन करावेंगी और वह जल वैसेही होवे जैसे माता का दुग्ध होता है ॥

३—जैसे आप के गायके अर्थ हमको आप आनन्द देते हो वैसेही आप के रस के अद्य शब्दों से आप को हम प्राप्त करें हे जल हम को पुत्र पौत्र दीजिये ॥

४—हमारे पाप के उद्धार के अर्थ जल देवता सुख देने वाला होवे प्राण और यश की वृद्धि देनेवाले और रोग और अनुत्पन्न पाप नाश के ,कारण को दूरकरने वाले हूजिये और सुदार्स हमारे ऊपर अपनी धारा दीजिये ॥

५—हे जल से उत्पन्न धन के स्वामी मनुष्यों के निवास के वृद्धि देने वाले जल देवता भेषज रूपी जल की हम प्रार्थना करते हैं ॥

६.७,८,९—ऋचा का प्रथम मण्डल के ५ अनुवाक में अर्थ कह आये हैं ॥

ओचिदिति चतुर्दशर्च दशमं सूक्तं

१—अन्तर्हित विस्तीर्ण समुद्र देश को जाने वाली (यमी) श्रेष्ठ सख्यार्थी मैं सामनेस्थितहोकर आप का संभोग चाहती हूं मैं आप को उत्तम अपत्य के पिता होनेके अर्थ बोलाती हूं । हे विधाता प्रजापति पृथिवी पर पुत्र जननार्थ हमारा ध्यान कीजिये ॥

२—हे यमि आप का सखा मैं आपकी ऐसी चाहीहुई सखित्व की कामना नहीं पूर्ण करसक्ता हूं आप समानलक्षणवाली विषमरूप भगनी होती हो महत्प्रजापति वीरपुत्र द्विलोकके धर्त्ता आप असुरों को विविधप्रकार के दुःख देनेवाले हैं ॥

३—हे यम प्रसिद्ध देवता प्रजापति आदि आप के शास्त्र को त्याग करते हैं और स्त्री की कामना करते हैं प्रजापति ने ऐसा सम्बन्ध किया है । इस कारण आप का मन मुझ में हो और मैं आपको अपने चित में रख आपकी कामना करूं आप मेरी कामना करो जैसे प्रजापति अपनी दुहिता में प्रवेशभया वैसे ही आप हमारे शरीर मे प्रवेश कीजिये ॥

४—पूर्व काल में प्रजापति ने जो किया वह अपरिमित सामर्थ से था वह हम नहीं कर सक्ते हम सत्य के बोलने वाले हैं असत्य कभी नहीं बोलेंगे अन्तरिक्ष में स्थित गन्धर्व जो किरण का धारण करने वाला आदित्य है और

उस प्रसिद्ध स्त्री सरण्यू से हमारी उत्पत्ति है इस कारण हमारे परम उत्कृष्ट बान्धव आप हैं॥

५—हम स्त्री पुरुष ने एक उदर में स्थित होकर क्या किया त्वष्टा देवता शुभाशुभ का भेजने वाला सर्वात्मक है उसके कर्मों को कोई नहीं तोड़ सकता है इस कारण गर्भावस्था में हम प्रजापति के बनाए हुए दम्पति को प्राप्त हुए उस माता के उदर में हमारा सहवास पृथिवी और दिव लोक जानता है॥

६—प्रथम दिन के संगमन को कौन जानता है इस देश में किसने इस संगमन को देखा और कौन कह सकता है मित्र और वरुण का जो बड़ाधाम है उसमें मनुष्य स्वर्ग और नर्क को अपने शुभ और अशुभ कर्मों की अपेक्षा से पाते हैं इसको जान कर हे यमी तुम यह कैसे वचन कहती हो॥

७—आप का कामाभिलाष मुझ यमी पर होवे हम और आप समान योनिवाले हैं एकही शय्या के सोनेवाले होवें जैसे पति के अर्थ स्त्री शरीर को रखती है अथवा जैसे रथ के साथ में चक्र है वैसेही हम तुम्हारे साथमें होवें॥

८—इस लोक में देवता सम्बन्धी जो अहोरात्र चलाकरते हैं नहीं बैठते हैं शुभ और अशुभ सब को देखते हैं हे असह्य भाषण दुख देने वाले यदि आप विना हमारे आदरी और धर्मार्थ काम में उद्यत हूजिये—तो आप का मार्ग बिना चक्रवाले रथ के समान होगा॥

९—रात्रि और दिन सब यजमान यमको उसका भाग देते हैं और सूर्य के चक्षु को बारबार खोलते हैं—अहोरात्र में दिव औ पृथिवी समान बन्धु हैं यह जान यमी यम को धारण करती है॥

१०—जिस काल में भगनी अभ्रातर पति करती है उस काल में भ्रातर पति होने से पूर्व युग आजायगा—इससे हे शुभगी मुझ से अन्य पति आप ढूंढिये—उसके पश्चात् आप शयन कालमें वृषभ पुरुष के अर्थ हाथ फैलाइये॥

११—जब भाई के होने पर भगनी नाथ रहित है वह भाई न होने के तुल्य है किन्तु जो दुःख के साथ भाई को प्राप्त होवे वह स्वसा कामभूत हो बहुत कुछ इसतौर से कहती है इससे मेरे शरीर को आप संभोग दीजिए॥

१२ हे यमी तुम्हारे शरीर में मैं अपना शरीर न लगाऊंगा। जो भाई स्वसा के साथ भोग कर्ता है उसको पाप कारी कहते हैं—इससे हे यमी तुम

म को छोड़ कर किसी अन्य पुरुष से संभोग की कामना करो तुम्हारा भाई हे सुभगे तुम्हारे साथ मैथुन की कामना नहीं करता ॥

१३ हे यम तुम दुर्बल हो तुम कांपते हो आप के मन और हृदय को हम नहीं जानते जैसे रस्सी घोड़े को बांधना चाहती है अथवा जैसे लिवुजा वृक्ष को ढूंढती है वैसेही कोई और अन्य स्त्री आपको भोग अर्थ ढूंढती हो ॥

१४ हे यमि तुम अन्य पुरुष को ढूंढो जैसे लिवुजा वृक्षको—तुम अन्य पुरुष के मन की कामना करो—वह पुरुष तुम्हारी इच्छा करेगा—उस के साथ सुकल्याण संगति करके आप सुख पावोगी ॥

इपेति नड्ढं एकादशं सूक्तं

१—अछोड़ यज्ञ स्तुतियों के दोहने वाले महत् अहिंसित अग्नि ने आकाश से जल को दुहा—जो अग्नि वरुण के समान सब वस्तु का जानने वाला है वह यथार्थ अग्नि ऋतुवों का पूजन करता है ॥

२—गुणवाली गन्धर्वी आहुति जल से अग्नि को तर्पित करती है—शुभ्र स्तोता के मन की स्तुति और यज्ञ मेलगावे औरइंद्र की आहुतिकी रक्षा करे हमारे भाई और हम से जेष्ट पुरुषों ने आप की स्तुति प्रथम की है ॥

३—भद्र मस्त्वाली यशवाली कीर्तिवाली प्रसिद्ध उषा—यजमान के अर्थ आदित्य के साथ जल्दी उदय होवे हवि यज्ञ की कामना करने वाले देवतों के होता अग्नि देवता को यज्ञ अर्थ यजमान मथते हैं ॥

४—स्येन पक्षी यज्ञ में बड़े विशेष देखने वाले प्रसिद्ध यज्ञ सोमको लेजाता है जब पूजा उस दर्शनीय असुवों के मारने वाले होता अग्नि की प्रार्थना करते हैं तब बुद्धि उत्पन्न होती है ॥

५—हे अग्नि आप सर्वदा रमणीय हो और दम से अपनी पुष्टि को करते हो—आप शोभन यज्ञवाले हूजिए और मनुष्य स्तोता के स्तुति और अन्न के ग्रहण करनेवाले बहुत देवतों के साथ से हूजिए ॥

६—हे अग्नि आप की ज्योति सम्पूर्ण प्राणियों की माता पिता द्यावापृथिवी में उदय हो द्यावापृथिवी के बिदे आदित्य के समान अपनी ज्योति से आप उदय कीजिए यजमान हृदय से आप की इच्छा करता है देवता यज्ञ में आते हैं अग्निके लेजानेवाले स्तुति करनेवाले देवतों के पहुंचानेवाले होता अपना

जान करना चाहती हैं आप यज्ञ को स्तुति को बढ़ाते हो आप की बुद्धि से असुर कांपते हैं ॥

७—हे बल के पुत्र अग्नि आप की सुमति का यजमान सेवन करता है वह यजमान सम्पूर्ण लोक में प्रसिद्ध होता है अन्न को वह धारण करता है वह दीप्तमान बलवान आकाश की शोभा देता है ॥

८—हे यष्टव्य अग्नि यदि हमारी वह किई हुई स्तुति पूजन करनेवालों के मध्य में प्रकाश मान होवे—हे हवि लक्षण वाले अग्नि आप रमणीय धन को भजते हो—तौ उस में से बहुमन्त भाग हम को दीजिए ॥

९—हे अग्नि यज्ञ स्थान में हमारे वचनों को सुनो—सोम पान अर्थ रथ को तयार करो हमारी यज्ञ में देवोत्पन्न रोदसीको बोलावो—कोईदेवता हमारी यज्ञ से लौटजाने वाला न होवे—आप हमारी इस यज्ञ में स्थित हूजिए ॥

द्यावेति नवर्च द्वादशं सूक्तं

१—सत्य वादिनी द्यावापृथिवी देवतों की यज्ञ में जानेवाली सुनी जाती हैं हमारे यज्ञ निमित्त अग्नि के बोलाने वाले आपही अग्नि मनुष्यको यज्ञ में लगाता है अपने ज्वाला लक्षण प्राण को पाकर देवतों को बुलाने वाला होकर वेदी पर बैठता है ॥

२—दीप्तमान अग्नि इन्द्रादि देवतों को आवाहन करता है यज्ञ में—हमारी हविको पहुंचाता है वह अग्नि देवतों में मुख्य सबका जानने वाला धूमकेतु दीप्तमान जहं ज्वालास्तुति योग्य नित्य होता है—वचनों से अतिशय करके पूजन पाता है ॥

३—अग्नि उदक को अपने तेज से उत्पन्न करता भया इस कारण उदक से उत्पन्न औषधि को द्यावा पृथिवी ने धारण किया संपूर्ण स्तोता लोग उसे जलदान को गाते हैं वे स्वेत दीप्ति वाले दुग्ध को दुहते हैं ॥

४—हे अग्नि आप हमारे यज्ञरूपी कर्म्म को बढ़ाइए हे उदक के उत्पन्न करने वाले द्यावापृथिवी आप को मैं स्तुति करता हूं हे रोदसी आप मेरे स्तोत्र को सुनिये इस अहोरात्र साधन कर्म्म में स्तोताओं को स्तुति को सिखाइये और हमारे कर्म्म को हे आप यज्ञ के माता पिता मधु से पवित्र कीजिए ॥

५—दीप्तमान अग्नि हमारी हवि को ग्रहण कीजिए हम आप के प्रति पू-

शिप द्रम को करते हैं—पाप्यमान मित्र आदि हमारे स्तुति लक्षण वाले वचन इन्द्रादि में जावें और जो हमारी हवि है उसको देवता ग्रहण करें॥

६—इस लोक मे नानाप्रकार के रूप उदक धारण करता है जो उदक अपने स्वभाव से निरपराध है और जो अनन्त सूर्य का सम्बन्धी और मधुर रस से युक्त है और वह सूर्य संयमनी पति के बड़े अपराध को क्षमा करता है—हे अग्नि एसे अप्रमाद जल जनक सूर्य की आप रक्षा कीजिये॥

७—यज्ञ में देवता आनन्द को पाते हैं और हवि से अपने को तृप्त करते हैं और मनुष्य वेदी नाम स्थान पर अपने को स्थापित करते हैं—देवतों ने सूर्य में ज्योति को स्थापित किया—और चन्द्रमा में रात्रि को स्थापित किया और उसके पश्चात् सूर्य चन्द्रमा को द्योत के मार्ग में परिगमन की आज्ञा दी॥

८—देवताओं ने ज्ञानरूप अपने अधिकार से अग्नि रूप में अपने को प्रवर्त्त किया। उस अग्नि के अन्तरहित रूप को हम नहीं जानते हैं अग्नि को मित्र अदिति सविता देवता हमारे पाप नाशक कहते हैं॥

९—पूर्व सूक्ते व्याख्याता॥

युजेवामिति पञ्चर्चं चतुर्दशं सूक्तं

१—हे दोनो शकट सोमादि हवि लक्षण अन्न से आप को मैं योजित करता हूं ब्रह्म मंत्र उच्चारण करके जो पूर्व काल से चले आते हैं। आप का शब्द देवतों में जावे स्तुति करने वाले को सुख देने वाली आहुति जैसे देवतों को पहुंचती है वैसेही दिव्य स्थान में स्थित सम्पूर्ण देवतारूपी प्रजापति के पुत्र आप के शब्द को सुनें॥

२—हे दोनो शकट जैसे सद्योत्पन्न अपत्य मार्ग में जाते हैं वैसेही आप हवि धारण कर्म में प्रवर्त्तमान हो—जो आप इस हविधान के स्थान पर आये हो आप देव कामी मनुष्य यजमान को आनन्द दो और अपने लोक को जान कर आप बैठो—और अपने शोभन निवास स्थान पर आप हमारे यथार्थ स्थित हो॥

३—स्वर्ग के अर्थ पांच पदवाले यूप पर मैं चढ़ता हूं (धाना सोम पशु पुरोडाश आज्य नामहीन यह पांच पद हैं) और चतुष्पदी मंत्र उसी के अर्थ

पढ़ता हूं और व्रत अर्थात् प्रयोगादि कर्म को करता हूं और वेदों को इस अपवित्र वस्तु से सीखता हूं ॥

४—देवतों के अर्थ मृत्यु को कौन बुलाता है मनुष्य को विनाशफल कौन देता है। यजमान मंत्र के पालक और दृष्ट और अदृष्ट फल के देखने वाले ऋषियों की आज्ञानुसारिक यज्ञ करता है—इस कारण यम हमारे इस श-रीर से कर्मों के वैगुण्य जनित दोष रहित जीव को नहीं अकाल हरता है ॥

५—सातो छन्द स्तुति द्वाराही उत्पन्न सकट से सुख पाये हुवे सोम के पास जाते हैं—और यज्ञ युत्र ऋत्विज सत् गुण ग्राहिणी स्तुति को करते हैं और उन दोनो विराजमान शकटों को जिस्से दोनो देवता और मनुष्य की पुष्टि है—कर्मानुष्ठान प्रयतन करते हैं ॥

परेयिवांसमिति षोड़शर्चं चतुर्दशं सूक्तं

१—हे यजमान आप पितृ के स्वामी यम की हवि से पूजन करो—उन के पूजन से अच्छे २ स्थान में पुण्यवान् पुरुष प्राप्त होते हैं। मरण के पीछे बहुत से स्वर्गार्थी पुण्य करनेवाले पुरुष खुले हुवे स्वर्ग की राह में चलते हैं और पापी पुरुष नरक मार्ग में जाते हैं ॥

२—प्रथम यम हमारे शुभाशुभ को जानता है यम के प्रसन्न करने की यही मार्ग है और इसी मार्ग से हमारे पूर्व्व पितर गये हैं और इसी स्वकर्म मार्ग से जाते हैं ॥

३—इन्द्र देवता काव्यभागवालेपितरों के साथ यम अंगिरादिपितरों के साथ और बृहस्पति ऋक्वपितर के साथ वृद्धि को पावें और इन देवतों के साथ में पितर वृद्धि को पावें और इन पितरों के साथ में देवता वृद्धि को पावें और कोइ स्वहा से और कोइ स्वधा से तृप्ति को पावें ॥

४—हे यम हे अंगिरादि पितर एक मति वाले आप सब आइये और इस कुशा पर बैठिये आप को विद्वानों के बनाये हुये मंत्रों से बोलाते हैं। हे रा-जन् यम इस हवि से तुष्ट होकर यजमान को आनन्द दीजिये ॥

५—हे यम नाना रूप युक्त यज्ञ योग्य अंगिरा के साथ आइये इस यज्ञ में आनन्द को पाइये और यजमान को वर्द्धित कीजिये—विवस्वान् जो आप के पिता हैं उन को मैं आवाहन करता हूं वह भी इस बिछौने कुशा पर आकर

बैठें और यजमान को आनन्द देवें ॥

६—अङ्गिरा अथर्व और भृगु यह हमारे पितर जो अभिनव गमन से युक्त हैं और प्रीति के उत्पन्न करनेवाले जो सोम यज्ञ के योग्य हैं उन की अनुग्रह युक्त मति में सर्व्वदा हम स्थित रहैं ॥

७—जिस मार्ग से पूर्व्व काल में हमारे पूर्व्व पितर गये हैं सो हे मेरे पिता उसी स्थान में आप आइये और जाकर अमृतान्न से तृप्त होकर यम और वरुण को देखिए ॥

८—हे मेरे पिता आप परम उत्कृष्ट स्वर्ग के विषे पितरों के साथ में जाइए—और फिर इष्टापूर्ति यम के साथ पाप रहित होकर फिर अस्त गृह में आइए और शोभन दीप्ति से शरीर को युक्त करके उन्ही के साथ में जाइए ॥

९—यहा से भागो भागो दूर चले जाव—हे पितर इस दहन स्थान को छोड़कर अलग जाइए—यम ने इस स्थान को रात्रि दिन जल से शुद्ध कराकर इस मरे हुवे यजमान के अर्थ दहन स्थान बनाया है ॥

१०—हे अग्नि समीचीन मार्ग से सारमेयी के पुत्र चार आंख वाले कर्वुर रङ्ग के बलवान्‌कुत्तोंसे बचाकर इस प्रेत को लेजाइए—ऐसे पितर स्वर्ग को प्राप्त होते हैं—और यम के साथ में विराजमान हैं—उन पितरों के बीच में यह प्रेत भी जावे ॥

११—हे राजन् यम आप के दोनो रक्षक कुत्ते जो चार आंख वाले और मार्ग के पालक हैं उनसे इस प्रेत को रक्षा कीजिए—और स्वस्ति और रोगाभाव इस प्रेत को दीजिए ॥

१२—यम सम्बन्धी लम्बीनासिका वाले दोनो उत्तानदृत प्राणियों को अति दिखने वाले जल्दी तृप्त होजाने वाले विस्तीर्ण बलवाले आज के दिन इस कर्म में समीचीन बल सूर्य के दर्शनार्थ हम को देवें ॥

१३—यम के अर्थ सोम लता का सोम बनाते हैं यम के अर्थ हवि को हवन करते हैं—यज्ञ जो देवतों के दूत अग्नि से शोभायमान है यम को प्राप्त होवे ॥

१४—हे ऋत्विज घृतवत् आज्य संयुक्त हवि को आप यम के—अर्थ हवन कीजिए—देवतों के मध्य में उस यम को प्रतिष्ठित कीजिए—वह देवता हमारे जीवन अर्थ दीर्घ आयु देता है ॥

१५—हे ऋत्विज यम राजा को बहुत मधुर हवि से हवन करो और इस प्रकार नमस्कार करो कि ये पूर्व ऋषि जिन्हों ने हमारे अर्थ शोभन मार्ग बनाया है प्रत्यक्ष होवें ॥

१६—यम उन की रक्षा करता है जो ज्योति गौ और आयु यज्ञ को करते हैं अर्थात् त्रिक द्रुक हैं और यम छः प्रकार की उर्वी को प्राप्त होता है और इस महत् जगत् को प्राप्त होता है और गायत्र्यादि छन्द यम को प्राप्त होते हैं॥

उदीरतामिति चतुर्दशर्चं पञ्चमं सूक्तं

१—वह पितर जो उत्तम मध्यम और निकृष्ट पदवी को प्राप्त हैं वह सौम्यास अर्थात् उत्तम हवि के ग्रहण करने वाले होवें और जो पितर वृक के समान घूमते हैं परन्तु हिंसा नहीं करते हैं और यज्ञ को जानते हैं और हमारे प्राण की रक्षा करते हैं वह यज्ञ में हमारी रक्षा करें ॥

२—इन सब पितरन के नमस्कार हैं अर्थात् वह जो बड़े हैं और वह छोटे हैं वह जो इस रजो कार्य्य में आकर बैठे हैं और जो वस्तु रूप से आए हैं और जिन के उत्तम धन हैं उनके नमस्कार हैं ॥

३—मैं उन पितरों को जो मेरी भक्ति को जानते हैं पाउं और विष्णु के विनाशाभाव और विशेष पूर्त्ति को पाउं जो पितर कुशा पर बैठे हैं वह इस कर्म में आवें और सुधा अन्न के साथ सोम को पीवें और निश्चय करके अपने भाग का सेवन करें ॥

४—हे कुशपर बैठनेवाले पितर आप सम्मुख हमारे रक्षा कीजिए आप के अर्थ यह हवि बनायी है उस को सेवन कीजिए आप अत्यन्त सुख से रक्षा के निमित्त हम को प्राप्त हूजिए और हमारे दुःख को दुःख वियोग और पाप से रहित कीजिए ॥

५—सौम्य पितर यागार्हप्रिय विधि हवि को लेने के अर्थ बुलाए हुए पितर आवें और इस कर्म में हमारी स्तुति को सुनें और साधु वचन कहें और हमारी रक्षा करें ॥

६—हे विज्ञ पितर आप जानु को भूमि में रख कर और दक्षिण तरफ बैठकर इस हमारी यज्ञ को प्रशंसा कीजिए और जो अपराध मैंने मनुष्य होने के कारण किए हैं उन मेरे अपराधों के कारण मुझ को न मारिए ॥

७—आत्मा के पास बैठेहुए जो पितर हैं वह यजमान को धन देवें उन के पुत्रों को धन देवें और हमारे इस कर्म्म के अर्थ धन देवें॥

८—अपने सोमके प्रकाशकरनेवाले पूर्व पितर को सोमपानके अर्थ बुलाता हूं जो पितर कि यम के साथ में संभोग की इच्छा करते हैं और यमभी जो कि उन पितरों के साथ संभोग की कमना रखता है—वह यमहमारी दी हुई हवि को ग्रहण करें॥

९—देवताओं के पास क्रमसेजानेवाले सम्पूर्ण यज्ञकोजाननेवाले अर्च-नीय स्तोत्रों से स्तुति पाने वाले पितर उन के साथ में हे अग्नि आप हमारे सन्मुख आइए वह पितर सत्य कव्य और यज्ञ साधक हैं॥

१०—सत्य.पितर हवि के खाने वाले सोम के पीने वाले इन्द्र और देवतों के साथ एकही रथ पर सवार होते हैं। हे अग्नि सहस्रों यज्ञ साधक देव सम्बन्धी स्तुति से युक्त पूर्व्व और पर काल के पितरों के साथ आइए॥

११—हे अग्निखाता पितर आप इस पितृ कर्म्म में आइए और आकर पू-जन पाकर अपने अपने स्थान में बैठिए और अच्छी हविको खाइए और पुत्र पौत्र युक्त धन हम को दीजिए॥

१२—हे जातवेद अग्नि हम से पूजन पाकर हमारी हवि को सुगन्धित कीजिये आप को इसी कारण हम बुलाते हैं और यह हवि पितरों को दी-जिये—पितर स्वधा युक्त प्राप्तहुये हवि को खाते हैं सो आप भी हे अग्नि देव प्रयत्न संपादित हवि को खाइये॥

१३—जो पितर हमारे समीप वर्त्तमान हैं और जो यहां नहीं हैं और वह जिन को हम जानते हैं और जिन को नहीं जानते हैं हे जातवेद अग्नि जिन को आप जानते हैं हवि युक्त अन्न से साधुकृत यज्ञ को उन के अर्थ आप ग्रहण कीजिये॥

१४—जो पितर अग्नि से भस्म होकर आकाश को प्राप्त हुए हैं और जो पितर अग्नि से नहीं दग्ध हुए हैं वह द्युलोक के मध्य में स्वधा से तृप्ति को प्राप्त होवें और जो अपने अर्थ से दीप्यमान है उन पितरों के साथ में हे अग्नि असुनीति देवता शरीर को जैसा चाहिए वैसी कामना दीजिए॥

मैनमिति चतुर्दशचं षोड्शं सूक्तं

१—हे अग्नि इस प्रेत को भस्मीभूत न कीजिए और विशेष शोक से दुःख न कीजिए इस त्वचा को विक्षिप्त न कीजिए हे जातवेद अग्नि यदि आप सुदग्ध करते हो उस काल में आप इस पित्र को पितर समीप लेजाइए॥

२—हे जातवेद जब आप प्रेत शरीर को पक्व करते हो तब इसको आप पित्र में पहुंचाते हो यदि यह प्रेत अग्नि से बनाई हुई असुनीति को पाता है तब वह देवतों के वश होता है॥

३—हे प्रेत आप का इन्द्रियबल सूर्य में जाता है प्राण वायु में जाता है और आप सुकृत फल के भोक्ता आकाश को वा पृथिवी को वा अन्तरिक्ष को जाते हो यदि इनस्थानों में स्थापित हो तो आप का शरीरओषधि में बैठा॥

४—पुरुष लक्षण रहित जो भाग है वह आप के ताप से तप्त होवे आप की ज्वाला इसी भाग को तप्त करे आप की अर्चि आपके उत्तम अङ्ग का सुख देने वाला होवे हे जातवेद उस को उस स्थान में लेजावो जो शोभन कर्म कारियों के अर्थ है॥

५—हे अग्नि जिस पुरुष ने आप को चित्त में मंत्र से बुलाया और हव उदक दिया है उस प्रेत पुरुष को पित्र में आप भेजिए वह प्रेत आयु से युक्त विशेष शरीरमें प्राप्त होवे हे जातवेद आपके प्रसाद से वह शरीर को पावे॥

६—मृत शरीर सम्बन्धी जो अङ्ग है उस को काली पक्षी पिपील सर्प वा सृगाल यदि खाए हों तो उस सोम रूप से जो ब्राह्मणों में प्रविष्ट करता है हे अग्नि उस विश्व रूपी को पाप रहित करो॥

७—हे प्रेत अनुस्तरणी गऊचर्म से लपेटे मुख पर अग्नि के ज्वाला रूपी कवच को लो और स्थूल मेद से आच्छादित हो इनसे युक्त होकर आनन्द को धारण करो भस्म करने वाली ऋलिग् अग्नि आप को सब प्रकार से विस्तार देवे॥

८—हे अग्नि यह चमसा को मति चलावो यह चमसा इन्द्रादि देवतों को प्रिय है सोमार्ह पित्रयों को प्रिय है यह चमसा से देवतों ने पिया है उसी चमसा से अमर देवता आनन्द को पाते हैं॥

९—क्रव्य खाने वाले अग्नि को हम दूर देश में भेजते हैं पाप के लेजाने-वाले यमराज के देश में उस अग्नि को भेजते हैं और जो दूसरे प्रकार की जातवेद अग्नि है उस को हम जानते हैं—वह देवतों को हवि लेजाने के अर्थ इस देश में रहे ॥

१०—जो क्रव्य खाने वाला अग्नि गृह के विषे प्रवेश करे तो हम उस देवता को गृह से बाहर निकालें और गृह के विषे दूसरी प्रकार की अग्नि देखें और उत्कृष्ट स्थान में पितृ यज्ञ के अर्थ उस अग्नि को प्राप्त करें ॥

११—जो अग्नि क्रव्य के लेजानें वाला यज्ञ के बढ़ाने वाला पितरों को स्तुति से पूजन करता है वह अग्नि यज्ञ में हवि को लेता है और देवतों और पितरों को इकट्ठा पहुंचाता है ॥

१२—कामायमान हम आप को स्थापित करते हैं और हम आप को संदीप्तमान करते हैं आप भी हवि की कामना करके कामना करनेवाले पितृ को यज्ञ के विषे स्वधा पाने के अर्थ बुलाइए ॥

१३—हे अग्नि जिस देश को आपने दग्ध किया है पितृ दहन काल में उस को फिरसे आप बुझाइए औरे से उदक की पुष्करणी बनाइए और उस में अनेक शाखा वाली दूर्वा लगाइए ॥

१४—हे शीतिका ओषधियों के तुल्य हे आह्लाद के आच्छादक फल युक्त हर्षों के प्रिय दृष्टि से आप प्राप्त होवें और यह कर्म अग्नि को आनन्द देवे ॥

इति प्रथम अनुवाक

अथ द्वितीय अनुवाक

त्वष्टा दुहित्र इति एतच्चतुर्दशर्चं प्रथमं सूक्तम्

१—त्वष्टा देवता ने अपनी कन्या का विवाह करना चाहा इस कारण विश्व भुवन को इकट्ठा किया वह छाया महत् विवस्वत की भार्या यम यमी की माता नाश को प्राप्त भयी ॥

२—उस अमृत स्त्री को मनुष्य के उपकार अर्थ देवता लेजाते भये और दूसरी स्त्री को उसी के समान विवस्वत को देवता देते भये और अपने उदर के लिये सरण्यू ने अश्विन के गर्भ को धारण किया और यम यमी मिथुन को भी उत्पन्न किया

३—पूषा देवता आप को इस देश से दूसरे उत्तम लोक को लेजावे वह विद्वान् जिस के लिये सम्पूर्ण पशु स्थित हैं और जो नाश को नहीं पाता है और जो सम्पूर्ण भुवन का रक्षक है—वह अग्नि देवता आप को इन धनवाले और ज्ञानवाले पितृ और देवतों के लोक को देवे ॥

४—विश्वायु वायु पूषा की अनुज्ञा से सब ओर रक्षा करता है प्रकृष्ट मार्ग में प्रथम वर्त्तमान पूषा आप यजमानकी रक्षा करता है सुकृत पुरुष जहां रहते हैं जहां आप जातेहो और सविता देवता वहांपर आप को धारण करते हैं ॥

५—पूषा देवता इन सब दिशों को जानता है वह हम को अत्यन्त भय रहित मार्ग से लेजाता है वह कल्याण का देने वाला आदित्य दीप्तियुक्त और कर्म्म को करने की सामर्थ्य रखने वाला अप्रमाद्य हमारे फलाफल का जानने वाला हमारे आगे चलता है ॥

६—स्वर्ग के मार्ग में जो प्रकृष्ट मार्ग है उस को पूषा ने बनाया है और दिव और पृथिवी दोनों लोक के मार्ग के मध्य में जो प्रकृष्ट मार्ग है उसको पूषा ने प्रादुरभूत किया सोई पूषा इष्टतम स्थान में सुकृत फल के दरशाने के अनुकूल और दुःकर्म्मों के प्रतिकूल कर्म्म फल को जानकर आचरण करता है ॥

७—देवयन्त यजमान सरस्वती को बुलाते हैं वह विस्तृत यज्ञ में सुकृत कर्म्म वाली सरस्वती को बुलाते हैं और पूजन करते हैं सरस्वती देवी हवि के देने वाले यजमान को उत्तम वरणीय फल देती है ॥

८—हे सरस्वति देवि पितरों के समान रथमें आप इस यज्ञ में आइये और स्वधा से पितरों के साथ आनन्द को प्राप्त हो आप इस विस्तृत कुशोंपर बैठकर हवि से तृप्त हूजिये और तृप्त होकर रोग रहित अन्न को हमें दीजिये ॥

९—हे सरस्वति पितर ने आप को आवाहन किया है—वह पितर दक्षिण दिशा से यज्ञ में आये हैं बहुत पूजनीय धन और धन की पुष्टि को आप यजमान को दीजिये ॥

१०—जल हम को शुद्ध करता है घृत द्वारा जल हम को शुद्ध करता है जल देवता विघ्न के पाप को बहाले जाती हों ऐसे जल से शुचि को पाकर हम स्वर्ग लोक को जाते हैं ॥

११—सोम रस की पूर्व भावी देवता दिव लोक में लेते भये और वह रस उस लोक को जो हम से पूर्व हैं जाता भया और फिर समान योनि में अर्थात् द्यावापृथिवी में जाता भया उस सोम रस को हम सात प्रकार के होता हवन करते भये ॥

१२—हे सोम आप का रस जो निकलता है, जो अंश अध्वर्यु की बाहु से गिरि जाता है, वा पत्थरों से गिरि जाता है वा चरम पात्र से वा अध्वर्यु के हाथ से गिरता है वा पवित्र दशा से अपवित्र दशा में गिरता है वह सब रस अन्तः करण के स्तोत्र से वषट्कार करके मैं अग्नि में फेंकता हूं ॥

१३—हे सोम जो रस आप का गिर गया है और जो लता खण्ड रस से रहित है और सुचा में लिया हुआ जो सोम है उससे जो गिर गया बृहस्पति देवता उस सब को हमारे प्रजा पश्वादि अर्थ धोवें ॥

१४—हे जल देवता औषधि उदक से युक्त होकर सारवती होवे और हमारे वचन सारवत होवें जो इस लोक के विषे उदक और घृत होवे उस उदक के सार से आप हम को शोधिये ॥

परस्तर्या इति चतुर्दशर्च द्वितीयं सूक्तं

१—हे मृत्यु देव अन्य मार्ग के होकर आप पैदि से जाइये आप का देवताओं के मार्ग से अलग जो मार्ग है उससे जाइये केवल मेरे ही पास से नहीं परन्तु मेरी प्रजा के पास से भी—आप से जो देखने और सुनने वाले हैं यह वचन कहता हूं कि पुत्र पौत्र की हिंसा न कीजिएगा ॥

२—मृत्यु के पद को जो बचाता है उस की आयु बढ़ती है परन्तु हे यज्ञ करने वाले यजमानों प्रजा और धन सहित शुद्ध और पवित्र हूजिए ॥

३—जीवित पुरुषों को मरे पितरों की विदा लेना चाहिए—आज के दिन हमारे विघ्न यज्ञ में बोलाये हुये देवता कल्याण करें तदनन्तर हम पूर्व मुख को जाते हैं हंसने और नाचने के लिए दीर्घ आयु को अच्छी प्रकार हम धारण करते हैं ॥

४—इस मृत्यु की परिध पाषाण की पुत्र पौत्रादि के अर्थ में धारण करता हूं की इन जीवों के पास इस मार्ग से मृत्यु जल्दी न जावे पुरुषों की वर्ष तक जीवें और पर्वत की परिध बनाकर मृत्यु को आने से रोकें॥

५—जैसे अहोरात्र पूर्वानुक्रम से वर्तमान है और ऋतु ऋतु के क्रम से चलता है और जैसे पूर्व अपर को नहीं छोड़ता वैसेही हे धाता देवता जीवों के आयु को समर्थ वान् करो॥

६—हे जरायुक्त आप आयु को प्राप्त हूजिए ज्येष्ठ प्रयत्न करने वाले आप जातिस्थ हैं शोभन जन्म वाला त्वष्टा देवता आप का संगती होकर आप लोगों को जो इस कर्म में प्रवृत्त हो दीर्घ आयु देवे॥

७—यह सुभागिल स्त्रियां शोभन पति से युक्त घृत से बने हुये अञ्जन से नयनों को अञ्जित किये गृह में प्रवेश करें सो अश्रु वर्जित रोग रहित रत्न से शोभित पुत्र सहित गृह के विषे विराजमान हों॥

८—हे नारि मृतपति जीव लोक अर्थात् पुत्र पौत्र के स्थान को देखकर उठो गत प्राणपति के समीप से उठो अपने पति के सम्बन्ध से अलग हो॥

९—मृत क्षत्री के हाथ से धनुष को लेलो हमारे प्रजा पालन वाले तेजवान बल के अर्थ आप हे मृत पितर इस स्थान के विषे रहो और हम अच्छे पुत्र युक्त होवें सम्पूर्ण अभिमान करने वाले स्पर्धा युक्त शत्रुओं को हम जीतें॥

१०—मातृभूत पृथिवी में आप प्रवेश कीजिये वह बहुव्याप्त विस्तीर्ण सुख देनेवाली है यौवन युक्त स्त्री रूप दक्षिणा देनेवाली सुकुमार है सो पृथिवी निऋति देवता के समीप से अस्थि रूप यजमान की रक्षा करती है॥

११—हे पृथिवी उच्छ्वास युक्त कीजिये और हम को दुःख न दीजिये यजमान के अर्थ सूपचारिका हूजिये और सुप्रतिष्ठित हूजिये जैसे माता अपने बालक को अञ्चल से आच्छादित करती है वैसेही हे भूमि आप अस्थि रूपी यजमान को आच्छादित कीजिये॥

१२—ऊर्द्ध चलने वाली पृथिवी अस्थि कुंभ पर सुप्रतिष्ठित होवे सहस्रों राजा उस की सेवा करते हैं वे गृह वाले और घृत वाले होवें और इस लोक में सब की शरण वह होवे॥

१३—हे अग्नि कुंभ आप के ऊपर पृथिवी को मैं बांधता हूं उसके ऊपर लोष्ट को रखता हूं शुभ स्थापना करने वाले की मति मारियो इस स्थल को पितर नियम करें जो आप इस स्थान पर यम सदन को बनावें॥

१४—हे प्रजापति मुख्य दिन में मुझ को सम्पूर्ण देवता धारण करें जैसे बांण के मूल में पक्ष रहता है वैसेही मुझ को स्थापित करें और मेरे स्तुति रूपी वचन को घोड़े के बाग के समान पकड़ें॥

निवर्तध्वं इत्यष्टर्चं तृतीयं सूक्तं

१—हे जल देवता हमारे पास आइये और हमसे व्यतिरिक्त यजमान के पास न जाइये हे रेवति आप हमको धनसे न छिपाये हे दोनों पुनर्वसु अग्नि सोमआप हमको धन दीजिये॥

२—हे जल देवता मुझ से पृथक् जाते हुये आप मुझ में फिर लौट आइये आप पुनः पुनः हूजिये इन्द्र भी आपके सहायक होकर इस बातको देवें अग्नि भी आप को इस कर्म के उपयोग्य करे॥

३—जल देवता बार २ मुझको प्राप्त होवे और इस जलके रक्षा करने वाले मुझको पुष्ट करें हे अग्नि मुझको नियम से स्थापित कीजिये और इस लोक के धनको मुझमें बसाइये॥

४—गवों के रहने का स्थान गोष्ठ को नियान और गो युक्त नियान को न्ययन गवों के एक साथ जाने को संज्ञान गवों का जंगल में चरने जाने को परायन वन में उनके रहने को आवर्तन और उनके लौट करआने को निवर्तन कहते हैं ऐसी सर्व गुण युक्त गवों की मैं प्रार्थना करता हूं॥

५—जो गोपाल खोई हुयी गवों को ढूढ लाता है जो वनको गवें चराने लेजाता है और जो उनके साथ रहता है जो उनको लौटाकर लाता है वह गोपाल वन से गृह को क्षेम के साथ आवे।

६—हे इन्द्र आप हमारे सन्मुख हूजिये और अलग जाने वाली गवों को हमारे अभि मुख कीजिये और हमको फिर गवें दीजिये आपकी दी हुई गवों को हम संभजन करें॥

७—हे सर्व दिशा में स्थित देवता आप को गोसंबन्धी घृत और दुग्ध हम देते हैं जो देवता यज्ञ योग्य है वह देवता हम को गोलक्षण धन पहुंचावे॥

११—हे शूर वज्रिव इन्द्र दानकर्मवालेकोफलदेनेवाले आप के अ-लंबित आप में अवस्थित कर्मों को हम प्रशंसा करते हैं मरुत के साथ में ाप सुष्णासुर के अपत्य को हिंसित करते भये ॥

१२—हे इन्द्र शूर हमारे महत् अभीष्ट को और अभीप्सित प्रार्थना को ःहित न करो हे वज्रिव इन्द्र आप के प्रसाद से हम ऋत्विज यजमान सुख ं अवस्थित होवें ॥

१३—हे इन्द्र हमारी स्तुति आप को पहुंचकर सत्य होवे और अहिंसक ोवे हे वज्रिव इन्द्र उन स्तुतियों के संबन्ध से हम दृष्ट और अदृष्ट भोग को ावें जैसे क्षीरादि भोग को गोस्वामी पाते हैं ॥

१४—हे इन्द्र पृथिवी विना हाथ और पैर के देवतों के कर्म से वृद्धि को ाप्त होती है आप पृथिवी को परिवेष्टन करने वाले सुष्णासुर को विघ्न के र्थ सर्व्वदा ताड़ना करते हो ॥

१५—हे शूर वीर इन्द्र आप इस अभियुक्त सोम को जल्दी से पीजिये आप धन के नेता प्रशस्त होकर पान काल अतिक्रम के दोष से हम को न हिंसित कीजिये हे इन्द्र आप को स्तुति करने वाले यजमान आपकी रक्षा करें और बहुत धन से हम को धनवान् करें ॥

यजामह इति सप्तर्चं सप्तमं सूक्तं

१—हम उस बड़े इस हरित रथके घोड़ों पर सवार जो घोड़े कि रथ के लेजाने के कर्म्म को जानते हैं इन्द्र के पूजन करते हैं सो इन्द्र सोम पान के अनन्तर अपनी भौंहों को ऊपर उठाता है और मरुत गण के साथ अनेक प्रकार के शत्रुवों को मारता है और यजमान को धन देता है ॥

२—इन्द्र के दोनों घोड़े वन में उत्तम जवास को जल्दी से पावें उन घोड़ों से इन्द्र मघवा वृत्र का मारने वाला होवे—दीप्तवलवान ऋभुक्षु इन्द्र के प्रसाद से दास शत्रु को हम नाश करें ॥

३—जब इन्द्र हिरण्मयी वज्र को शत्रु के मारने के अर्थ लेता है तब उस इन्द्र के घोड़े युद्ध स्थान के विधि विशेष करके पहुंचते हैं वह धन वान् इन्द्र सूरियों के साथ रथ पर सवार होता है वह इन्द्र जगत् प्रसिद्ध बहु कीर्ति वान् और अन्न का स्वामी है ॥

कुहेति पञ्चदशर्चं षष्टं सूक्तं

१—आज के दिन कहांपर इन्द्र हैं और किस यजमान के पास सुनेजाते मित्र के समान वह इन्द्र ऋषियों के स्थान वा गुहा में स्तुति लक्षण वचन को सुनता है ॥

२—आज के दिन इन्द्र की हम स्तुति करते हैं वह वज्रवान् इन्द्र ऋचीषम सूर्य के समान मनुष्यों में यश देता है उस असाधारण इन्द्र की स्तुति हम करते हैं।

३—इन्द्र बड़े बल का पति है स्तोत्रियों को महत् धन का देने वाला है शत्रुवों के मारने वाले वज्र का स्वामी है वह हमारी रक्षा करे जैसे पिता पुत्र कीकरता है ॥

४—हे वज्रिव इन्द्र देव आप अपने घोड़ों को जो वात देवशे शीघ्र जाते रथ में लगाइये प्रकाशमान मार्ग से युद्ध में जातेहुये आपकी स्तुति होती है

५—आप के रथ के वेग का रोकने वाला कोई नहीं है और न कोई उ रथ के बल का जानने वाला है हे इन्द्र आप उन शीघ्र गामी घोड़ों को उ वात के बराबर बली हैं लेजाइये ॥

६—अपने स्थान में जातेहुये इन्द्राग्नि से भार्गव ऋषि पूछते हैं आप दी किस कारण इतनी दूर आकाश से हमारे गृह के विषे आये (उत्तर) द्यु लो से और भू लोक से तुम्हारे कृतार्थ करने के अर्थ हम आये हैं ॥

७—हे इन्द्र आप हमारे दिये हुये हवि को ग्रहण कीजिये और ह आप से उत्कृष्ट रक्षा चाहते हैं और अमानुष शत्रु अर्थात् राक्षसों के मार वाला बल मांगते हैं जिस से आप तीनो लोक का पालन करते हो ॥

८—अविद्यमान यागादि कर्म के विषे अज्ञाता अवमन्ता व्यतिरिक्त य॰ वाला असुर दास का शत्रुवोंकेमारनेवाले इन्द्र नाश करें ॥

९—हे शूर इन्द्र शूर भटों के साथ हमारी रक्षा करो और आपसे रक्ष पाकर शत्रुवों के हिंसा करने के योग्य हम होवें आप के कामना पूर्ण के म बहुत से स्तोत्री लोग विविध प्रकार से व्याप्त होवें जैसे मनुष्य अपने स्वामी सेना में व्याप्त होते हैं ॥

१०—हे वज्रधर शूर इन्द्र आप युद्ध में के शमयमहत नष्ट को उन कथा में स जाते हो आप मेधावी प्रजा के जिन को विनयका यश है स्तोत्रों को रक्षा हो।

११—हे शूर वज्रिव इन्द्र दानकर्मवालेकोफलदेनेवाले आप के अ-
लंकित आप में अवस्थित कर्मों को हम प्रशंसा करते हैं मरुत के साथ में
ाप शुष्णासुर के अपत्य को हिंसित करते भये ॥

१२—हे इन्द्र शूर हमारे महत् अभीष्ट को और अभीप्सित प्रार्थना को
ंसित न करो हे वज्रिन इन्द्र आप के प्रसाद से हम ऋत्विज यजमान सुख
ं अवस्थित होवें ॥

१३—हे इन्द्र हमारी स्तुति आप को पहुंचकर सत्य होवे और अहिंसक
ोवे हे वज्रिव इन्द्र उन स्तुतियों के संबन्ध से हम दृष्ट और अदृष्ट भोग को
ावें जैसे क्षीरादि भोग को गोस्वामी पाते हैं ॥

१४—हे इन्द्र पृथिवी बिना हाथ और पैर के देवतों के कर्म से वृद्धि को
ाप्त होती है आप पृथिवी को परिवेष्टन करने वाले शुष्णासुर को विध्न के
र्थ सर्वदा ताड़ना करते हो ॥

१५—हे शूर वीर इन्द्र आप इस अभिषुत्त सोम को जल्दी से पीजिये आप
न के नेता प्रशस्त होकर पान काल अतिक्रम के दोष से हम को न हिंसित
कीजिये हे इन्द्र आप की स्तुति करने वाले यजमान आपकी रक्षा करें और
बहुत धन से हम को धनवान् करें ॥

यज्ञामह इति सप्तर्च सप्तमं सूक्तं

१—हम उस वज्री इद्र हरित रथ के घोड़ों पर सवार जो घोड़े कि रथ
के लेजाने के कर्म को जानते हैं इन्द्र के पूजन करते हैं सो इन्द्र सोम पान के
अनन्तर अपनी भौंहों को ऊपर उठाता है और मरुत गण के साथ अनेक
प्रकार के शत्रुवों को मारता है और यजमान को धन देता है ॥

२—इन्द्र के दोनों घोड़े वन में उत्तम जवास को जल्दी से पावें उन घोड़ों
से इन्द्र मघवा वृत्रका मारने वाला होवे—दीप्तवलवान ऋभुक्षु इन्द्र के प्रसाद
से दास शत्रु को हम नाश करें ॥

३—जब इन्द्र हिरण्यमयी वज्र को शत्रु के मारने के अर्थ लेता है तब
उस इन्द्र के घोड़े युद्ध स्थान के विधि विशेष करके पहुंचते हैं वह धन
वान् इन्द्र सूरियों के साथ रथ पर सवार होता है वह इन्द्र जगत् प्रसिद्ध
बहु कीर्ति वान् और अन्न का स्वामी है ॥

४—जो बड़ी तुष्टि है वह उसको तुष्टि है जिससे वह अपने पूर्वों को सोम पिलाता है शोभन यज्ञ गृह में वह जाता है और अभियुत मधुर सोम को पीकर आनन्द से ऐंठाता है ॥

५—जो इन्द्र वाणी से अपने शत्रुवों को हिंसित वचन कहकर दुःखकारी होता है और हजारों को मारता है वह इन्द्र पिता के समान अन्न और वृष्टि दान से बल को बढ़ाता है जिस बल से इन्द्र शत्रु को मारता है वही बल हम मांगते हैं ॥

६—हे इन्द्र शोभन दान के अर्थ हम विमदादि ऋषि स्तोत्र को करते हैं अपूर्व पुरुतम देवतों के जो भोजन हैं उनको हम पावें इसी कारण आपके धनको हम मांगते हैं जैसे गोपाल गौवों को बुलाता है ॥

७—हे इन्द्र आप और मुझ विमदा ऋषि की स्तुति स्तोत्रिल सखित्व प्राप्त होवे जिस कारण से हे दीप्तमान् इन्द्र आप की बुद्धिको हम जानें जैसे भाई अपनी भगिनी की स्नेह युक्त मति को जानता है वैसेही आप की मंगल कारिणी सख्य को हम जानें ॥

इन्द्र सोममिति पटर्च अष्टमं सूक्तं

१—हे इन्द्र आप इस सोमको पीजिये जो मधुरहै और चमसासे बनाया गया है हे इन्द्र वज्र धन वाले आप हम को सहस्रों प्रकार का धन दीजिये अपने आनन्द के अर्थ हे वज्र धन वाले इन्द्र आप महत्व को प्राप्त हूजिये ॥

२—सोम यागादि स्तोत्र और हवि से हे शचीपति इन्द्र आप का हम पूजन करते हैं आप सब कर्मों के पालक हैं आप उत्तम धन हम को दीजिये और अपने महत्व को प्राप्त हूजिये ॥

३—जो उत्तम वस्तुवों का पति है और स्तुति बतलाने वाला है और स्तुति करने वालोंका रक्षक है वह शत्रुसे हमारी रक्षा करे पापसे हमारी रक्षा करे वह आनन्द अर्थ महत्व को प्राप्त होवे ॥

४—हे अश्व अश्विन महा वान् परस्पर जानने वाले आप अग्नि को मथते भये—मुझ विमदा ऋषि से स्तुति पाकर आप हे नासत्या अग्नि को मथिये ॥

५—हे अश्विन जब आप दोनों परस्पर संयुक्त होकर अग्नि को मथते भये तब सम्पूर्ण इन्द्रादि देवतों ने आप की स्तुति को और यह वचन कहा

हे देवता आपसे उत्पन्न यह अग्नि हवि को फिर आप के पास लेजाता है ॥

६—हे अश्विन देवता घर से जाने में अपने प्रीति से हम को मधु युक्त कीजियेगा और फिर आने में प्रीति युक्त रखियेगा और हे द्योतमान आप हम को प्रीति युक्त कीजिये ॥

भद्रमिति एकादशर्चं नवमं सूक्तं

१—हे सोम आप हमारे मन को कल्याण दीजिये और अन्तरात्मा को आनन्द दीजिये और अच्छी यज्ञ कराइये और आप के अखिल में रमें जैसे गौवें जवास में रमती हैं हवि से आप आनन्द को पाइये और महत्व को प्राप्त हूजिये ॥

२—हे सोम स्तुतियों से हृदय के छूने वाले सम्पूर्ण स्थान में आप की स्तुतिकरते हैं यह कामना आप के आनन्द हेतु है धन के चाहने वालों के हृदयमें स्थित होकर आप महत्व को प्राप्त हूजिये ॥

३—मैं आप के व्रत को हे सोम विशेष करके करता हूं आप आनन्द पाकर हम को सुख दीजिये जैसे पिता पुत्र को देता है आप हमारे सुख के अर्थ महत्व को प्राप्त हूजिये ॥

४—हे सोम हमारे स्तुतियों को ग्रहण कीजिये और जैसे पानी लाने के अर्थ वर्त्तन को टेढ़ा करते हैं वैसेही हमारे चिरजीवनार्थ आप यज्ञको धारण कीजिये आप पात्र में अनेक प्रकारसे बैठतेहो आपभी महत्व को प्राप्तहूजिये ॥

५—यह दृष्ट और अदृष्ट फल के जानने वाले मेधावी ऋत्विज यागादि कर्म में हे सोम अनेक प्रकारकी स्तुति को करते हैं अपने मद के अर्थ हम को गो और अश्व युक्त गोष्ट प्राप्त कराइये और आप महत्व को प्राप्त हूजिये ॥

६—हे सोम आप हमारे पशुको रक्षा कीजिये आप इस विविध प्रकार जगत् को रक्षा करते हो अनेक प्रकार के भूत जाति के जीवन अर्थ यह सब आप करते हो अपने आनन्द अर्थ विश्व भुवन को आप देखतेहो इस कारण आप महत्व को प्राप्त हूजिये ॥

७—हे सोम शत्रुवों करके अहिंसित आप हमारे रक्षक हूजिये हे राजन् सोम हमारे शत्रुवों को हम से दूर कीजिये हमारे अर्थ आप दुर्वेशा न होवें अपने आनन्द अर्थ आप महत्व को प्राप्त हूजिये ॥

८—हे सोम शोभन पुत्र क्षेत्र वितर आप हमें अन्न दान के अर्थ ग्रहण कीजिये और मनुष्य शत्रु से और पाप से हमारी रक्षा कीजिये अपने आनन्द अर्थ आप मद्दल की प्राप्त हूजिये ॥

९—हे शत्रु के मारने वालों में श्रेष्ठ सोम आप इन्द्र के सुख देने वाले सखा हो आप हमारी रक्षा कीजिये हमारे पुत्रों के लड़ाई में युद्ध करने वाले जन सर्व्वदा आप को बुलाते हैं आप अपने आनन्द के अर्थ मद्दल को प्राप्त हूजिये ॥

१०—हे प्रसिद्ध सोम सम्पूर्ण कार्य्य में जल्दी से चलने वाले मद के देने वाले इन्द्र के तृप्त करने वाले हमारी मति को बढ़ावो—हे सोम बड़े विप्र कक्षीवान को बढ़ाइये अपने आनन्द अर्थ मद्दल को प्राप्त हूजिये ॥

११—यह सोम मेधावी हवि देने वाले यजमान के अर्थ पशु युक्त अन्न भेजता है इस सोम ने सातों होत्रियों में श्रेष्ठ नेत्रहीन दीर्घतमस और पंगु परावृज ऋषि को वृद्धि दी हे सोम आप अपने आनन्द अर्थ मद्दल की प्राप्त हूजिये ॥

प्रहोति नवर्चं दशमं सूक्तं

१—बड़े पूषा देवता जो दर्शनीय हैं और जिन का रथ सर्व्वदा चलने को तयार रहता है और जो स्पृहणीय है और उपकार करने वाला है हमारे स्तुति रूपी वचन को पावे और हमारी रक्षा करे ॥

२—जो मेधावी यजमान उस पूषा के प्रसिद्ध मद्दल को वायु के मण्डल में यागादि कर्म्म से संभजन करते हैं वह देवता हमारे शोभन स्तुति को जानै ॥

३—वह पूषा शोभन स्तोत्रों से अपने रूप को जानता है सोम के समान वह पूषा कामना देने वाला है रूपवान होकर हमारे वज्र गोष्ठ को हिरण्य पश्वादि से युक्त करो ॥

४—हे द्योतमान पूषन् हम स्तुति करने वाले आप की स्तुति करते हैं हमारे मत के साधन करने वाले और विप्रों को परिचर्य्या के द्वार से कपाने वाले हो ॥

५—यह पूषा। ऋषि यज्ञ का पूर्वार्ह रथ पर जाने वाला मनुष्यों का हि

कारी स्तुति करने वालोंका सखा शत्रुवोंका पृथक् करने वाला है हे स्त्रियों और दीप्तियों और पशुवों के स्वामी पवित्र वस्तु हम को दीजिये ॥

७—पूषा देवता अन्न का स्वामी सम्पूर्ण उपकारकरनेवाले यजमान के सोम को पीवे वह पूषा देवता मधु से अहिंसित अनायास अपने आयु को कपाता है ॥

८—हे पूषन् देवता आपके रथके धुरा अच्छीप्रकार वहें जो आप विप्र अर्थी याचक के देने वाले सखा चिर काल तक अपने अधिकार पर रहो ॥

९—बड़ा पूषा हमारे रथ को अपने बल से रक्षा करता है सो पूषा अन्न का वर्द्धक होवे और हमारे बुलाने को सुनें ॥

असत्सुम इति चतुर्विंशति ऋचं एकादशं सूक्तं

१—हेस्तोतामेरीशोभनमनवृत्ति विद्यमानहै जिसमनवृत्ति से मेरे अर्थ सोमा भिषव करने वाले यजमान को मैं अभिलाषित फल देता हूं और असोमकको मारता हूं और झूठ बोलने वाले और पाप करने वालोंके पास पहुंचता हूं ॥

२—यदि हम युद्ध के अर्थ अदेवों के साथ जाते हैं अपने शरीर को पुष्टि लक्षण दीप्ति युक्त करते हैं ऋत्विज के सहित तुम को दी हुई बलि को जो सोम से खींचकर बनाई गई है मैं पीता हूं और उत्तम पशु को खाता हूं ॥

३—मैं उस को नहीं जानता जो कहता है कि मैंने राक्षसों को युद्ध में मारा—यदि संग्राम में मैं अवाकृत कर्म्म को देखता हूं जो अत्यन्त क्रूर कर्म्म है तब मेरे वृषभ कर्म्मों को विद्वज्जन कहते हैं ॥

४—पश्चात संग्राम में युद्धार्थ मैं जाता हूं तब सम्पूर्ण ऋषिलोग मेरे समीप बैठते हैं अर्थात् मेरी प्रार्थना करते हैं और जगत् पालन के अर्थ बड़े शत्रुवों को मैं मारता हूं और उन को पर्वत पर पटकता हूं ॥

५—संग्राम में युद्धार्थ उपस्थित जब मैं होता हूं तब कोई मुझको निवारन नहीं करसकता बड़े बड़े पर्वत मेरे कर्म्म को मन से नहीं विचार कर सकते मेरे शब्द से कम सुनने वाले भी डरते हैं और किरण वाले आदित्य भी कांपते हैं ॥

६—इस लोक में हवि के न लेजाने वाले इन्द्र के न पूजन करने वाले सब के हिंसा के अर्थ मैं हूं और उन के पतन अर्थ मेरे आयुध वर्त्तमान हैं मुझ

२२—वृक्ष वृक्ष पर स्थित आयुधमती गौ (अर्थात् तीर) शब्द करती है इस कारण मनुष्यों का मारने वाला पक्षि शत्रु नाशने वाला बाण मनुष्यों से मास होवे इन्द्र के अर्थ में सोम याग को करता हूं और कर्म करने वाले ऋत्विज को पूर्ण दक्षिणा देता हूं यह पुरुष विश्वभुवन इन्द्र से डरता है॥

२३—देवतों के सृष्टिकाल पश्चात् जो पहिले स्थित होते हैं वह मेघ हैं ऐसे मेघों के छेदने से जल भूमि पर गिरता है—जल गिरने पर इन्द्र की आज्ञा से पर्जन्य वायु आदित्य यह तीनों देवता भूमि और ओषधिकी तपाते हैं इस प्रकार यह तीनो अपने कर्मों में लगे रहते हैं दोनो वायु और आदित्य सबके पालने वाले जल को बहाकर आदित्य में लेजाते हैं॥

२४—हे अन्तरात्मन् आप के आदित्यात्मिका देवता जीवन हेतु वृष्टि को आने यह छिपा न रहे उसका गमन रश्मिद्वार से त्रिलोक को प्रकाश करे।

त्रिंशोत्तरीति द्वादशशं द्वादशं सूक्तं

(ऋ०) १—इन्द्र को छोड़कर और सब देवता गण यज्ञ के लिये आये हैं और इन्द्र नहीं आये कि धान्य को खावें और सोम को पीवें और। तृप्त होकर फिर अपने गृह को जावें॥

२—कामना के देने वाले तीक्ष्ण रश्मि वाले इन्द्र अन्तरिक्ष के उन्नत विस्तीर्ण देश में शब्द करके स्थित होता है और संग्राम में वस्त्र की रक्षा करता है जो यजमान मेरे कुक्षोंको सोम रस से भरता है उसकी मैं रक्षा करता हूं॥

३—हे इन्द्र आप के अर्थ आनन्द देने वाली सोम को शिल पर यजमान तयार करते हैं उस सोम को आप पीजिये और जो यजमान पशु आप के अर्थ पकाते हैं हे मघवन् इन्द्र आप को यजमान हविकोतवारकरके बुलाता है॥

४—हे शत्रुवों के जरयिता इन्द्र आप मेरे शोभन रूप सामर्थ्य को जानते हो जैसे नदियां अपने प्रतिकूल जल को बहाती हैं और जैसे घास खाने वाले मृग आलिङ्गयी सिंह के सामने से बचता है और जैसे शृगाल बलवान् सूकर के कक्ष से निकल जाता है वैसेही मैं हूं॥

५—हे मघ इन्द्र मैं आप मेधावी की स्तुति करता हूं ऐसी आप की सामर्थ्य को बिना आप के उपदेश के किस प्रकार से मैं जान सकता हूं सत्वर

आप यज्ञ काल में हम से बोलिये हे धनवान् इन्द्र हम आप की स्तुति करते हैं क्रोध रहित भी होकर हम मन्द बुद्धि आप की स्तुति नहीं कर सकते हैं ॥

६—स्तुति करने वाले मुझ को वेद से वृद्धि को देते हैं हृदत् मुझ इन्द्र की द्युलोक में अधिक स्तुति होती है वज्र से असुरों को मैं मारता हूं प्रजापति ने मुझ को अशत्रु पैदा किया है ॥

७—हे इन्द्र मरुत आदि देवता बड़े पुत्र मुझ वृषाक की सम्पूर्ण कर्म में हवि के देने वाले जानते हो इस कारण वज्र से असुर को मारो और यजमान को मङ्गल से पूर्ण करो ॥

८—देवता मेघ वध के अर्थ आते हैं और परशु को धारण करते हैं और उससे मेघ को काटते हैं और नदियों को नियम से स्थापित करते हैं और मेघ के विषे जो जल है उसको खींचते हैं ॥

९—मन अपने ऊपर आते हुये तीक्ष्ण नख वाले को मेरी आज्ञा से लेता है और लोष्ट से पर्वत को मैं छेदता हूं और बड़े बड़ों को छोटे से मैं वध करता हूं वर्द्धमान वत्स बड़े वृषभ से लड़ने जाता है ॥

१०—पक्षि रूप गायत्री द्युलोक में अपने को आमिष पाने के निमित्त बन्धन में डालती भयी पंजर से परिवेष्टित सिंह आप के ऊपर रख दिया से पैर डालता है और जैसे बंधा हुआ भैंसा पियासा होता है वैसे ही लक्षित इन्द्र के अर्थ यह गायत्री अयत्न से आती भयी ॥

११—जो मरुत गण सोम से तृप्त होते हैं और हिंसकों को मारते हैं उन देवतों के अर्थ गायत्री अनायास सोम को पहुंचाती है और हविर्भूत सोम को खाती है और असुरों के सैन्य को मारती उन के शरीर को काटती सोम को लेजाती है ॥

१२—हे ऋषियों आप अपने शरीर को सोम याग और अन्न मंत्र से वृद्धि को दीजिये देवता इन्द्र के यहां से सोमयाग कर्म से सुकर्मी हुये मनुष्य के समान मैंने आप को दिया यह वचन कहकर हम को बल और अन्न दीजिये आप द्युलोक मे दान वीर के नाम को धारण करते हो ॥

वर्नवेत्यष्टर्च अष्टादशं सूक्तं.

(क) १—जैसे वृक्ष पर कोई पक्षी अपनी झोंझ बनावे और उसमें बच्चे देय

तब वह पत्ती भयसे चारोंओर देखता रहता है वैसेही हम लोगों की
स्तुति को अग्निन पावें—जिस स्तोम को बहुत दिनों इन्द्र होता रहे हैं
स्तुति हम को पहुंचे यह इन्द्र मनुष्य और देव शूरों में श्रेष्ट है—ऐसी स्तु
रात्रि समय भी इन्द्र को पहुंचे ॥

२—ऐसी उषा के उदय काल में नायकों में श्रेष्ट इन्द्र की स्तुति में
प्रयुक्त होते हैं मैं त्रिशोक ऋषि हे इन्द्र आप की आराधना करके
प्राणियों की पाता हूं कुत्सका जो रथ है सो आप का होवे ॥

३—हे इन्द्र आप को सोम जन्य मद से उत्तम प्रीति देने वाला कौन
हे उग्र आप हमारे स्तुति को पाइये सम्पूर्ण गुण ग्राहिणी स्तुति सोम
सामने हो हे इन्द्र अन्न युक्त आप अपने समीप की शक्ति हम को दीजिये।

४—हे इन्द्र कब हमारे अन्न को आप खाइयेगा और किस कर्म से
को अपने सदृश कीजियेगा कब आप हमारे पास आइयेगा सत्य मित्र
समान—हे इन्द्र आप हमारे पोषण करने वाले हूजिये और जिस काल
अन्न के अभिलाषी जन होवें उसी काल में आप उन के पोषण अर्थ अन्न दीजिये

५—जैसे सूर्य अर्थ के चाहने वाले योगियों को संसार के अन्त में पहु
चाते हैं वैसेही हे इन्द्र आप हम को सोम पान की इच्छा से पार लगाइ
हे तुविजात इन्द्र जनिधाके कामना के समान हमारे पुराने वचनों को सुनि
मनुष्य आप को हवि से पूजन करते हैं ॥

६—हे इन्द्र आप के प्रभुवों के मज्जक कर्म से द्यावापृथिवी जल्दी से नि
र्मित भई ऐसे महत्व से आप युक्त आप को दीप्ति मान अभिषुत सोम
आप के अर्थ स्वादिष्ट होवे और पान के अर्थ मधुरता को प्राप्त करें ॥

७—उस इन्द्र के अर्थ मधुर रस सोमके पूर्ण पात्र को सामने रखकर ह
मारे ऋत्विज अग्नि में डारते हैं जिस कारण से वह इन्द्र सत्य धन वाला
होकर पृथिवी और अन्तरिक्ष के विस्तीर्ण स्थान में आकर वृद्धि को प्रा
पौंस्य युक्त कर्म में मनुष्यों ने आप को लगाया है ॥

८—शोभन बल वाला इन्द्र शत्रु की सेना में व्याप्त होता है वह शत्रु की
सेना सखत्व चाहती है हे इन्द्र आप अपने रथ की कल्याण से यज्ञ में भेजि

इस रथ में आप आदर से बैठिये जैसे संग्राम में रथ के बिषे बैठते हो ॥

इति द्वितीय अनुवाक

अथ तृतीय अनुवाक

प्रदेवत्रेति पञ्चदशर्चं प्रथमं सूक्तं

१—अग्र स्तोत्र से स्तुति किया हुवा सोम प्रकाशमान जल देवता को प्राप्त होवे प्रयोग और उद्योग में मनके समान शीघ्र जाने वाला उत्तम सोम जल में प्राप्त होवे तब हे अध्वर्यु उत्तम अन्न मित्र और वरुण के अर्थ विस्तीर्ण जव से दान योग्य तयार कीजिये और दोष वर्जित स्तुति को कीजिये ॥

२—हे अध्वर्यु हवि से युक्त सोम कामी सोमाभिषव के भाव में युक्त इधर आइये रक्त वरण गपतन सोम अन्तरिक्ष में वर्त्तमान जल को देखता है हे सुहस्त अध्वर्यु आप आज उस जलको लहर को पवित्रार्थ सामने छोड़िये ॥

३—हे अध्वर्यु जलाशय को जाइये और जल को लाइये अब उस जलके नाती को हवि से पूजन कीजिये वह आपको शुद्ध जल देगा उसको शुद्ध मधुमत सोम से पूजिये ॥

४—जो बिना काष्ट के दीप्यमान है और जिस को मेधावी ऋत्विज यज्ञ के बिषे स्तुति करते हैं और जो जलके अन्त में वर्त्तमान है वह जलका नाती मधुर रस युक्त जल वृष्टि हम को देवे जिससे इन्द्र का वीर्य्य बढ़े ॥

५—जल के साथ में सोम आनन्द को पाता है जैसे कल्याण देने वाली युवतियों के साथ में कोई आनन्द को करता हो हे अध्वर्यु ऐसे जल पाने के अर्थ जलाशय पर जाव और उस लाये हुये जल से सोम ओषधियों को पवित्र करो ॥

६—युवती स्त्री तरुणता में नीची होती हैं वैसेही सोमाभिषव करने की इच्छा से सोम से मिले हुये जल को अध्वर्यु नीचा होकर प्राप्त करता है और अपने स्तुति रूपी वचन से और विशिष्ट बुद्धि से आप को जानता है और आप के परस्पर उपकार को नेत्र से देखता है ॥

७—जो इन्द्र मेघ से परिवेष्ठित तुम्हारे मेघ के उदर से निकलने के मार्ग को बनाता है और अपने को मेघ के बड़े परिवेष्टन से छुटाता है हे जल ऐसे इन्द्र की मधुर स्वाद युक्त देवतों के मद देने वाले तर्पित करने वाले ऊर्मि से पूजन कीजिये ॥

८—हे जल मधुमत ऊर्मि उस इन्द्र को दीजिये जो गर्भ मधुर रस का बहाने वाला है उस रस को हे स्यन्दन शील जल उस इन्द्र के अर्थ पहुंचाइये यज्ञ में घृत लेने वाले स्तुति योग्य वह रस है हे जल हमारे लिये जो धन आप ने दिया है उसी धन से आप हमारे वचन को सुनिये ॥

९—हे स्यन्दन शील जल वह मद देने वाली इन्द्र के पान योग्य ऊर्मि इन्द्र को दीजिये यह ऊर्मि मद के देने वाली सोम युक्त वृष्टि रूप में उत्पन्न तीनों लोक के तारने वाली यज्ञ पात्र में स्थित होने वाली देवतों को तृप्त करने वाली ऊर्द्ध जाने वाली है ॥

१०—मेघों के साथ युद्ध करने वाले इन्द्र ने वृष्टि लक्षण जल को दो धारा से आवृत किया लोक के उत्पन्न करने वाली भुवन की पत्नी सोम की वृद्धि देने वाली समान स्थान वाली अप देवी को हे ऋषि स्तुति करो ॥

११—हे ऋत्विज इस हमारी यज्ञ को देव यजन अर्थ कीजिये ब्रह्म स्तुति पहुंचाने वाला कीजिये धन और यज्ञ के संयोग में जो अधिष्ठवण चर्म है हे जल देवता उससे सुख पाने वाला हम को आप कीजिये ॥

१२—हे धनवान् जल देवता धन को भेजते हो और उत्तम भजनीय कर्म को और उस के अमृत रूपी फल को धारण करते हो आप धन के पालने वाले हो सरस्वती शुभ्र स्तुति करने वाले को अन्न रूपी धन देवे ॥

१३—हे जल देवता अपनी यज्ञ में आने वाला—आप को मैं पाता हूं घृत और जल और मधुर रस को आप धारण किये हो और अध्वर्यु लोग अन्तःकरण से जानते हैं इन्द्रार्थ आप उत्तम सोम को धारण करते हो ऐसे आप की मैं स्तुति करता हूं ॥

१४—जल देवता जीवों के पालने वाले हमारी यज्ञ में आकर अध्वर्यों के साथ में महिम को प्राप्त करें और आप को सोम संवादी अध्वर्यु कुशासन पर बिठलावें ॥

१५—सोम के कामना करने वाले जल देवता तुमपर आकर हमारी यज्ञ में देवतों को तृप्त करने को इच्छा से बैठता है हे अध्वर्यु आप इन्द्रार्थ जो सोम तयार करते हैं सो जल देवता के प्रसाद से देवतों के क्रिया में अच्छी प्रकार से लगावो ॥

आन इत्येकादशर्चं द्वितीयं सूक्तं

१—देवतों के स्तुति करने वाले हम लोगों के स्तुति योग्य यष्टव्य ऐसे इन्द्र सम्पूर्ण मरुत के साथ हमारी यज्ञ के रक्षा के अर्थ आइये हम भी उनके साथ में शोभन सुख को पावें और सम्पूर्ण पापों के पार करने वाले होवें ॥

२—मनुष्य सम्पूर्ण देवतों के यागार्थ धन को देता है और यज्ञ मार्ग मे हवि के साथ चलता है और अपने बुद्धि से मन में ध्यान करता है और देवतों के प्रसाद से दक्ष प्रशस्य आत्मा को पाता है ॥

(क) ३—देवतों को क्रिया में हम लगकर तृप्त करने वाले हमारे दिये हुये हवि भाग पशुवों के मारने वाले उग्र जन्म वाले देवता को पहुंचै जैसे तीर्थ पर तर्पण से विशिष्ट जल का अंश देवतों को पहुंचता है और हम स्वर्गादिक सुख को पावें हम देवतों के जानने वाले होवें ॥

४—नित्य प्रजापति ने दृष्ट और अदृष्ट फल की कामना की प्रजा के स्वामी दान मन वाले सविता देवता ने उन की कामना पूर्ण की और भग और अर्यमा देवता ने उन की स्तुति को ग्रहण किया और जो रमणीय देवता गण हैं उस यजमान को दृष्ट और अदृष्ट का फल देते हैं ॥

५—कीर्तिमान् देवता अपने बल से हमारी स्तुति को सुनते हैं यह स्तुति देवतों को प्राप्ति योग्य है जैसे पृथिवी उषा में व्याप्त होकर सब को पाती है वैसे ही हमारी स्तुति भी सुधन्वा के पुत्र को प्राप्त होकर सुख कारी होवे ॥

६—यह सुमति स्तुति विक्षीर्यमाण होवे पूर्व काल में वज्रत से युक्त देवतों के पास जाने वाली इस प्रजा को देहों में स्थित हमारे अर्थ दृष्टादृष्ट फल को धारण करके पाती है ॥

७—जिस वृक्ष से द्यावापृथिवी छांटी गयी है वह वृक्ष कैसा था और वह बन कैसा था सम्यक् स्थान में जरा वर्जित देवतों के रक्षा के अर्थ दिन की और पूर्व देवतों की स्तुति को करते हैं ॥

८—इनसे परे और देवता है जो प्रजा के बनाने वाला है और द्यावापृथिवी के धारण करने वाला है वह बलवान पवित्र उस काल में भी स्वरूप को रखता जब की याहरित घोड़े सूर्य्य को नहीं लेजाते थे ॥

९—आदित्य विस्तीर्ण पृथिवी को तेज से नहीं जाता है और भूमि में वाल जल को नहीं वर्षाता है और जिस में मित्र देवता अपने दीप्ति को वरुण के साथ विशेष करके फैलाता है जैसे दावानल वृक्ष के संघात में अपनी दीप्ति को फैलाता है ॥

१०—निवृत्त प्रसवा गौ स्थान पाकर वत्स प्रसूत दुःख को दूर करती है तब वह प्रजा का दुःख हरती है पुत्र जब पूर्व काल में अपने पितर से उत्पन्न हुवा तब पृथिवी शमीको स्तुति करतीभई और ऋत्विज उसको ढूढ़ते हैं॥

११—वेद वादी कण्व ऋषि को पुत्र कहते हैं वह धनवान् श्याम वर्ण वाला धन को ग्रहण करता है कृष्ण वर्ण कण्व रोचमान रूप को प्राप्त करता भया अग्नि को छोड़कर और कोई उस को वह को नहीं बढ़ासकता ॥

प्रसुमन्तेति नवर्च तृतीयं सूक्तं

१—इन्द्र के आगमन के चिन्तना करने वाले यजमान को सेवा पाने वाले घोड़े आते हैं उत्तम मार्ग द्वारा यजमान की उत्कृष्ट हवि को लेकर वह इन्द्र हमारे दीनो हवि और स्तुति को सेवन करता है और सोम सम्पादित अन्न को अपनी जिह्वा से जानता है ॥

२—हे इन्द्र दिव्य दीप्ति को लोक में आप प्राप्त होते हो हे पुरुष्टुत इन्द्र पृथिवी को अपने ज्योति से व्याप्त होते हो आप के घोड़े बार बार हमारी यज्ञ में आप के समीप जाते हैं वह घोड़े स्तुति पाकर धन रहित हम को उत्तम दान देवें ॥

३—अत्यन्त सुरूपवान् देव मझको इंद्र ने दिया पुत्र अपने जन्म को माता पिता से जानता है पत्नी कल्याण वचन से पति की सेवा करती है संस्कृत पुरुष स्त्री के अर्थ कल्याण लेजाता है ॥

४—जो इन्द्र कल्याण का स्थान है वह हम को दीजिये यहां के विधि गौवें दुग्ध देने वाली उत्तम घृतादि वस्तु देती हैं जहांके विधि पूजनीय माता

के समूह के साथ पहुंचते हैं और जहां निषादादि सप्त स्वर वाले जन पहुंचते हैं वहां कल्याण होता है ॥

५—हे यजमान देवता की कामना करने वाले आप अपने मद को छोड़ कर रुद्र पुत्र मरुत के साथ में आप क्षिप्रगामी स्तुति को कीजिये देवतों को धनप्रदान समर्थ है इस कारण हम रक्षा देने वाले देवतों को मधु देते हैं ॥

६—विद्वान् देवतों के कर्म का रक्षक इंद्र हम को यह आज्ञा देता है कि तुम विद्यमान जल में छिपे हुये अग्नि को देखो और कहो हे अग्नि आप के बताये हुये मार्ग से हम स्वर्ग को जावें ॥

७—नहीं मार्ग जानने वाला पुरुष मार्ग जानने वाले से पूछता है और वह मार्ग को उस मार्ग के जानने वाले पुरुष से पाते हैं यह कल्याण कारी बात है मार्ग से जाने वाले जन को पियाऊ पाता है ॥

८—अग्नि आज के दिन मंथन से प्राप्त हुआ है यह दिन स्थान से प्राप्त हुये हैं तेज से परिवृत पृथिवी के ऊपर अग्नि सोम को पीता है नित्य तरुण अग्नि को स्तुति करने वाले पाते हैं हे वसु अग्नि आप सुमन हूजिये ॥

९—हे द्रोण कलश वाले स्तुति के सुनने वाले उत्तम धन को स्तोत्रियों को दीजिए और उत्तम हवि को ग्रहण कीजिए वह इंद्र हम को धन देने वाला होवे और यज्ञ के विषे सोम का देने वाला होवे जिस सोम को मैं अपने हृदय में धारण करूं ॥

इति नवमं चतुर्थं सूक्तं

१—मनुष्यों को कर्म में लगाने वाला देवता मुझ कवष ऋषि को इस कर्म में युक्त किया इस मार्ग में मैं यज्ञ पति पूषा को पाऊं इस मार्ग में विश्वेदेवा देवता मेरी रक्षा करें दुःशासु अर्थात् आता है उसका मार्ग में शब्द होता है ॥

२—मेरी दोनों पसुरी सपत्नी के समान दुःख देती हैं दुर्मति नग्नता और भूख मुझ को पीड़ा देती हैं मेरी मति वैसे ही कांपती है जैसे पक्षी बधिक के भय से ॥

३—व्याधि मुझ को वैसे ही काटती है जैसे मूस कपड़े को हे शतक्रतु मघवन् इंद्र हमारे यज्ञ में आप सुख को दीजिये और पिता के समान रक्षक हूजिये ॥

४—मैं कवष ऋषि धन देने वाले त्रसदस्यु के पुत्र कुरुश्रवण राजा के ऋत्विजों के अर्थ धन को मांगता हूं॥

५—जिसके तीन घोड़े साधुचाल से रथ में बैठेहुये मुझ को यज्ञ में ले जाते हैं उन को मैं स्तुति करता हूं ॥

६—हे राजन् उपमश्रवस आप के पिता ने मित्रातिथि के वचन के स्वादु की पाकर सेवा के अर्थ उत्तम स्तोत्र दिया ॥

७—हे उपमश्रव मित्रातिथि के पुत्र आप मेरे समीप आइए मैं आप के पिता की प्रशंसा करने वाला हूं ॥

८—यदि अमृत देवता मेरे वश होते वा मर्त्य मनुष्य के मरणहेतु का यदि मैं ईश्वर होता तो मैं अपने धन देने वाले राजा को प्राण धारण करादेता॥

९—देवतों के व्रत को अतिक्रम करके कोई शतायु नहीं होता सखाय-दिकों से वियुक्त जो होवे उसके कारण शोक न करना चाहिये ॥

प्रादेपा इति चतुर्दशर्चं पञ्चमं सूक्तं

१—बड़ा उरा हुवा प्रवण देश में उत्पन्न आस्फार में प्रवर्त्तमान कम्पन शील अक्ष (पांसा) मुझ को आनन्द देता है जागरण का कराने वाला उरा हुवा अक्ष मुझ को आनन्द देता है जैसे लतारूपी पर्वत में उत्पन्न सोम का पीना देवतो को आनन्द देता है वैसेही यह मुझ को ॥

२—हमारी स्त्रीने क्रोध नहीं किया और न लज्जित भई हमारे सखिन के काज से सुखकारी भई और मुझको भी सुख भया ऐसा व्रतानुकूल स्त्रीको प्रधान अक्ष हेतु मैंने छोड़ दिया ॥

३—कितव (जुवारी) की स्त्री की माता बहुतसी निन्दा कितव की करती है परन्तु भार्या उस को नहीं रोकती है याचमान जुवारी धन दानसे सुख को नहीं जानता है बुड्ढे घोड़े के मोमत के समान हम कितव के भोग को नहीं जाना चाहते ॥

४—जिस कितव के धन को बलवान् अक्ष देवता अभिकांक्षा करते हैं उस कितव की स्त्री को प्रति कितव जीतने वाला वस्त्र और केश से खींचते हैं पिता माता भाई उससे कहते हैं हम इसको नहीं जानते हैं रस्सी से बंधे हुये इस कितव को तुम लेजाव ॥

५—जब हम ध्यान करते हैं तब हम इन पासों को दोष नहीं देते हैं मेरे पीछे आने वाले सखि कितव का भी दोष नहीं है मैं पहिले अर्चों को नहीं फेंकता हूं प्रभु वर्ण यह जब शब्द को करते हैं तब मैं उस निष्कृत स्थान में जाता हूं जैसे व्यभिचारिणी संकेत स्थान को जाती है ॥

६—दीप्यमान शरीर से कौन कितव धनिक को नहीं ढूंढ़ता है हम उसको जीतेंगे यह कहकर सभा में जाता है और वहां देवतों के अर्थ किये हुये कर्मों को जो कितव धारण करता है उसको कितव के काम के इच्छा से अक्ष की वृद्धि होती हैं ॥

७—अक्ष के फेंकने वाले अङ्कुश से नितोदितवन्त पराजय में निकर्त्तनशील कितव के संतापक और कुटुम्ब के संतापनशील हैं मधुसे संपृक्त उन कितव के फिर हराने वाले होते हैं ॥

८—तिरपन अधिक स्फार में विहार करते हैं सत्यधर्म वाले सविता जैसे विहार को करता है परन्तु क्रूर के क्रोध के अर्थ भी यह अक्ष नहीं झुकते हैं राजा भी इन के नमस्कार करता है यह अक्ष नीच स्थल में वर्त्तमान हैं परन्तु डरे हुये कितवों के हृदय के ऊपर बैठते हैं इन हस्त रहित अक्ष से हाथ वाले कितव पराजय को डरते हैं ॥

९—यह दिव्यभव अङ्गारवद्द्रह अक्ष इन्धन रहित आस्फार में शीत स्पर्श होने पर भी कितवों के अन्तःकरण को जलाता है ॥

१०—चले गए हुए कितव की स्त्री वियोग संताप से और माता पुत्र शोक से रोती है अक्ष पराजय से ऋणवान् कितव धन के चुराने की कामना करके चोरों के गृह पर रात्रि को जाता है ॥

११—स्वव्यतिरिक्त पुरुषों की स्त्रियों के अच्छे गृह को देखकर गृह को दुखित जानकर प्रातःकाल में व्यापक अर्चों को फिर लगाता है वह वृषल कर्म्म वाला कितव रात्रि में अग्नि के समीप शीतार्त होकर सोता है ॥

१२—हे अक्ष हमारे महत् गण सेना के नेता हो और गण के राजा हो इसलिये आप के अर्थ में अञ्जली लाया हूं और धन को मैं नहीं रोक सकता हूं और मैं यह सत्य कहता हूं कि दशों अङ्गुलियों को मैं प्रांमुख करता हूं अर्थात् अञ्जली भरकर धन आपको देता हूं ॥

१३—हे कितव माननीय मेरे वचन को विश्वास कीजिये तुम अक्ष से दिव्य

८—मध्य वचन देवताके युक्त कहने वाली स्तुति हम मनुष्य करने के योग्य हैं उन वचनों को आप पालना कीजिए जिस उषा उदय होवे हो० ॥

९—आज के दिन कुश के बिछाने पर अभीष्ट फल के साधक पाषाण से तयार किएहुए सोम के साथ में आदित्य को मैं बुलाता हूं देवतों के सुख के स्थान में कर्मों को आप करते हो हो० ॥

१०—हमारे बड़े शोभमान कुश से युक्त यज्ञ में अग्र संख्या वाले होत्री इन्द्र मित्र वरुण और भग देवता को यज्ञ में बुलाते हो आप की स्तुति हम धन के अर्थ करते हैं हो० ॥

११—हे आदित्य हमारे बुलाए हुए आप यज्ञ में आइए हमारेवृद्धि अर्थ आप यज्ञ की रक्षा कीजिए बृहस्पति, उषा, अश्विन और भग देवत हमारी रक्षा करें हो० ॥

१२-हे आदित्य देवता अत्यन्त प्रशस्त मनुष्य के रक्षक हमारे गृह में पुत्र और पौत्र की रक्षा कीजिए हो० ॥

१३—आज के दिन सम्पूर्ण मरुत गण सम्पूर्ण समिद्ध अग्नि और विश्व अग्नि हमारी रक्षा को करें और हमारी यज्ञ में आवें और धन और अन्न हम को प्राप्त होवें ॥

१४—हे अभीष्ट देने वाले देवता संग्राम में आप हमारी रक्षा कीजिए और शत्रु से पालना कीजिए और कामना को पूर्ण कीजिए और आप की रक्षा में हम भय को न पावें और हम सब यज्ञ में लगें ॥

उपासनक्रोति चतुर्दशर्चं सप्तमं सूक्तं

(क) १—महत् सुखपवाली उषा द्यावापृथिवी वरुण मित्र अर्यमण इन्द्र मरुत आदित्य देवतों को रात्रिदेवतों को अन्तरिक्ष स्वर्ग जल पर्वत के देवतों को मैं बुलता हूं ॥

२—द्यावापृथिवी सत्ययज्ञवाली हमारी रक्षा पाप से करती है कुत्सित ज्ञान वाला मृत्युदेवता हमारे ऊपर बली न होवे हम आज के दिन रक्षा मांगते हैं ॥

३—अदिति धनवान मित्र और वरुण की माता हम को सम्पूर्ण पाप से

के कहने वाले हम होवें मित्रवरुण की श्रेष्ट स्वस्ति को पावें सविता स्वस्ति को देवें देवतों की रक्षा हम आज मांगते हैं ॥

१३—जो विश्वेदेवा देवता मित्रवरुण और सविता के कर्म से उत्पन्न होते हैं वह हम को सुभग वीरवत् गोयुक्त पूजनीय धन को देवें ॥

१४—पूर्व और पश्चिम उत्तर और अधर में स्थित सविता देवता हम को सम्पूर्ण अभिलषित धन को देवें वह सविता देवता हम को बहुत काल वाली आयु देवें ॥

नमोमित्रस्येति द्वादशर्चं अष्टमं सूक्तं

१—हे ऋत्विज आप वरुणमित्र के चक्षु बड़े देवता दूरदेश के देखने वाले देवार्थ उत्पन्न दिव के पुत्र विश्व के केतु सूर्य के नमस्कार हैं ऐसे यागादि लक्षण कर्म को उन के अर्थ करो ॥

२—वह सत्यवचन मुझ को सर्वदा रक्षा देवे जिस सत्यवचन से द्यावापृथिवी और रात्रि दिन फैलता भया उसी में सम्पूर्ण भूतजात विश्राम करते हैं और सम्पूर्ण भूतजात कांपते हैं सर्वदा जल बहाकरता है सर्वदा सूर्य उदय होते हैं वह सत्यवचन मेरी रक्षा करें ॥

३—हे सूर्य आप के समीप कोई पुरातन अदेव नहीं बहता है जो आप शीघ्रगामी घोड़ेवाले रथ को आरूढ़ते हैं आप की प्राचीन ज्योति वर्तमान है उससे उदय हूजिए ॥

(क)४—हे सूर्य जिस ज्योति से आप अन्धकार को दूर करते हो जिस तेज से जगत्संसार को उदय करते हैं उस ज्योति से सम्पूर्ण अन्नाभाव और अहोम से उत्पन्न रोग को दूर कीजिए ॥

५—हे प्रेरित सूर्य आप विश्व के यजमान के व्रत धर्म की रक्षा कीजिए हवि के अर्थ स्वधा का उच्चारण कीजिए आज के दिन आप को हम बुलाते हैं आप हमारे उस कर्म में इन्द्रादि का आदर कीजिए ।

६—द्यावापृथिवी जल इन्द्र मरुत् हमारे आवाहन को सुनें हम सूर्य के दर्शन में दुःख को न पावें हम भद्र जरावस्था को प्राप्त करें ।

७—हे सूर्य प्रीतियुक्त मन वाले अच्छे नेत्र वाले सुदर्शन आप के प्रजावन्त! रोगरहित पापरहित हम आप को सर्वदा पूजन करें हे मित्र पूजित सूर्य

देवता दिन दिन उदय को प्राप्त आप की ज्योति को बहुत दिनतक देखाकरें।

८—हे मित्रपूजक सूर्य बहुत तेज के धारण करने वाले दीप्तिमान सब के लिये सुख देनेवाले बहुत धन को दिवस हम बहुत दिन उदय सूर्य को प्रत्यक्ष भांति बराबर देखें॥

९—हे अदितिके पुत्र सूर्य आप के हेतु से अमूर्त दिग् प्रकाश करिके आप होते हैं रात्रि को विश्राम देते हैं सो आप हम को अपराध रहित देखकर उत्तम ज्योति से दिन को प्रकाश कीजिए॥

१०—हे सूर्य आप अपने प्रभु के तेज से सुख कारी कीजिए आप अपने किरणों से अपने दिन के प्रकाश से अपने हिम और उष्णता से हम को सुख दीजिए आप मार्ग में और गृह में सुख देने वाले कीजिए आप पूजनीय धन हम को दीजिए॥

११—हे देवता आप हम दोनों द्विपद और चतुष्पद के लिए आपकृपा से सुख दीजिए जैसे हमारे पुत्रादि खाना को खाते हैं और पानीको पीते हैं और बलवान और अरोगी हैं ऐसेही रोग रहित पाप रहित सुख हमको दीजिये॥

१२—हे देवता आप से रक्षित हम यदि मनसे जिह्वा द्वारा अद्भुत होकर देवता के क्रोध के कारण हों या हमारे प्रभु हम पर देवतों के क्रोध के कारण हों उस कारण को आप सूर्य से रक्षिये॥

अथाधानादनि पञ्चर्षं नवमं सूक्तं

१—हे इन्द्र आप कीर्तिमान और परस्पर प्रहार लक्षण वाले संग्राम में सिंधु के समान नाद करते हो—धन लाभ के अर्थ हमारी आप रक्षा करो—जिस लघुधनयुक्त परस्पर खोदक योद्धाओं के संग्राम में आयुध सब प्रकार के चलते हैं वहां हमारी रक्षा करो॥

२—हे इन्द्र आप हमारे सखों दुग्ध युक्त गोधन को अनेक प्रकारसे हम को दीजिए हे शक्र इन्द्र आप के प्रसाद से हम पृथिवी युक्त बलवान होवें जिसको हम कामना करते हैं और यह सब आप कीजिये॥

३—हे पुरुहूत इन्द्र जो कर्म कारी शूद्र द्विज और असुर युद्ध को जानते हैं वे सब आप के प्रसादसे हमारे सहायक होवें और हम आपकी सहायता से संग्राम में उन शत्रुओं को मारें॥

४—मधु के मारने वाले और वृत्र के अलकेभ्यन इन्द्र थोड़ी या ज्यादा हवि को ग्रहण कीजिए एवं पवित्र नेता इन्द्र को धन के दिन अपनी रक्षा के अर्थ हम बुलाते हैं ॥

५—हे इन्द्र आपको कामनाके देने वाले दुःख के काटने वाले अनपेक्षित जल के देने वाले धनके पहुंचाने वाले हम सुनते हैं व्याधिसे यह आत्मा को बंधन से छोड़ाइए सब स्थान के जाने वाले आप दुर्गम ऋषि के पास से सुरापा आइए आप के समान कोई शुल्क उक अर्थात् निर्लज्ज नहीं है ॥

चौरासिति चतुर्दशपं दशमं सूक्तं (क)

१—हे अश्विन् आप विश्व के परिक्रमा करने वाले हो आप का अच्छा रथ रात्रि और दिन हवि देने वाले यजमान से बुलाया जाताहै बड़े बूढ़े हम आप को पिता के नाम से बुलाते हैं ॥

२—हे अश्विन् आप अच्छे बचन से उपासनाप्रेरितकरनेवाले हमारे कर्मोंकोपूर्णकरनेवाले हमारीबुद्धिकोउत्पादनकरनेवाले हो आप हमारी कामना को पूर्ण कीजिये और भजनीय धन को हमें दीजिये और कल्याण देने वाले सोम से धनवान् कीजिये ॥

३—हे नासत्या आप पिता गृह में दुःखित स्त्री को सौभाग्यवती करते हो और भूखे को रक्षा करतेहो और निकृष्ट जाति वाले और अन्धे और दुर्बल की रक्षा करतेहो आप यज्ञ के विद्वान् हो॥

४—हे अश्विन् आप ने पुराने च्यवन ऋषि को जीर्ण रथ के समान फिर से युवावस्था दी और तुग्रपुत्र भुज्य को समुद्र के पार किया सो आप के सम्पूर्ण कर्म यज्ञ में कहिने योग्य हैं ॥

५—हे अश्विन् पुरानेबीज को लोक में बोइये हे नासत्या आप सुखसे बैठा कीजिये आप को रक्षा के अर्थ मै नई स्तुति करता हूं वह अनु के पास जाने वाला यजमान श्रद्धा को पावे ॥

६—हे अश्विन् मैं आप के अर्थ यह मन्त्र उच्चारण करताहूं आप मेरे बचनों को सुनिये और जैसे माता पिता पुत्र को धन देते हैं वैसेही आप दीजिये अबन्धु अज्ञातत्व अश्रद्धा असजाति अभिशस्ति से मुझे पार लगाइये ॥

७—हे अश्विन् पुरुमित्र के दुहिता शुन्ध्यु को विमद ऋषि के अर्थ आपने

... ... आप लेजातेभये और आप वध्रिमतीका घट्ट
रथपर विठलाकर विमद के गृहपर आप लेजातेभये और आप वध्रिमतीका घट्ट रथपर विठलाकर विमद को सुवर्ण का धस्त दिया और उसको शोभन सुगकर संग्राम में गये और उसको सुवर्ण का धस्त दिया और उसको शोभन ऐश्वर्य और बड़ बुद्धि दिया ॥

८—हे अश्विन् मेधावी की स्तुति को आप प्राप्त करते हो कलि ऋषि को आप ने युवा युक्त किया आप ने वंदन ऋषि को कुवें से निकाला आप ने वि-सला की छिन्न जंघा को पूर्ण किया ॥

९—हे वर्षने वाले अश्विन् असुरों से गुहा में छिपाये हुये म्रियमाण रेभ ऋषि को लाते भये और हे अश्विन् अत्रि ऋषि के अर्थ तप्त अग्नि कुण्ड को आप ने शीतल किया और सप्त वध्रि को आप ने छुटाया ॥

१०—हे अश्विन् आप ने पेदु नाम राजा को निन्नानवे घोड़ों के साथ एक श्वेत वर्ण घोड़ा जो संग्राम में शत्रु का जीतने वाला शत्रु के सखा का मारने वाला था दिया और वह पेशाची था जैसे धन सुख और भोग का देनेवाला है ॥

११—हे प्रकाश मान अद्रोन हमारे बुलाने पर आने वाले रुद्र मार्ग के चलने वाले अश्विन् आप को जो जन पत्नी के साथ पूजन करता है वह जन कभी पाप को नहीं पाता है और भयको भी नहीं पाता है ॥

१२—हे अश्विन् आप के रथ को ऋभुवों ने बनाया है इस रथ के योग से उषा देखिपड़ती है इस के योग से अहोरात्रि शोभा को प्राप्त है और यह द्युलोकमें सूर्यसा उत्पन्न है ॥

१३—हे अश्विन् आप अपने जय शील रथ से मार्ग में उड़ने वाले पर्वतों पर जातेहो आप ने शयुऋषि केअर्थ निवृत्त प्रसव गौ को बड़ दुग्धवाली किया आपने वर्तिका को वृक के मुख के भीतर से ग्रसित अपने बल से छुड़ाया ॥

१४—हे अश्विन् आप के अर्थ में इस स्तुति को करता हूं जैसे ऋभुवों ने रथ तयार किया वैसेही हम आप के अर्थ स्तोत्र तयार करते हैं नित्य या-गादि कर्म्म को पुत्र के समान धारण करके स्तुति को करते हैं जैसे पुरुष स्त्री को कभी नहीं छोड़ता है वैसेही हम आप को ॥

रथञ्चान्तमिति चतुर्दशर्च्चं एकादशं सूक्तं

१—हे कर्म्म के नेता अश्विन् आप प्रकाश मान यज्ञ में प्रातःकाल के जाने

वाले विश्व व्यापी प्रत्येक मनुष्य की और प्रत्येक गृह को आप उत्तम धन पहुंचाओ किस देश में और कौन यजमान यज्ञ और स्तुति से आप को पूजन करता है कि आप हमारी यज्ञ में देर करके आते हैं ॥

(क) २-हे अश्विन् किस स्थान में आप रात्रि में रहे और कहां दिनमें कहां सोमको पिया किस के स्थान में बसे जैसे विधवा स्त्री देवर के पास शयनार्थ जाती है अथवा जैसे स्त्री पति के पास जाती है वैसेही किस यजमानकी वेदी में परिचरणार्थ आपगये ॥

३—हे मनुष्यों के नेता अश्विन् आप को प्रातःकाल स्तुति करते हैं ऐश्वर्य युक्त राजा के समान सवेरे जगाने वाली वाणी से आप को स्तुति करते हैं कि तु प्रत्येक गृहमें पूजनको पाकर किस यजमानके मन्दिर में आप जाते हो और किसके दोष नाश करने वाले होते हो और किस यजमान के यज्ञ गृह में राजकुमार की तरह आप पहुंचते हो ॥

४-हे अश्विन् आप शार्दूलके समान गर्गोके बीच में रहते हो रात्रि और दिन हम आप को हवि देकर बुलाते हैं हे नेताअश्विन् काल कालमें हम आप की आहुति देते हैं आप शुभ अन्न के स्वामी हो मनुष्य अर्थ आप अन्न लातेहो ॥

५—हे नेता अश्विन् आपकीढूंढनेवाली राजाकीकन्या के शब्द को मैं उच्चारण करता हूं हह अश्विन् से मैं पूछता हूं मेरे दिनऔररात्रि के निर्द्वत्य कर्म्म में आप आइये और घोड़ा रथ और भृत्य देनेवाले हूजिये ॥

६—हे अश्विन् आप का रथ घूमनेवाला होवे और स्तुति करनेवाले यथार्थ उत्तरथ को पावें जैसे कुत्स ने इन्द्र के रथ को पाया था जैसेमक्खी मधु को धारण करती है वैसेही हे अश्विन् आप भी यजमान अर्थ मधु को धारण कीजिये ॥

७—हे अश्विन् आपने भुज्यु को पार लगाया और वंश राजा की रक्षाकी और अत्रि की उत्तम स्तुति को सुनी ऐसे आप को सधरिष हवि देने वाला यजमान चाहता है और आप की रक्षा से मैं सुख को मांगता हूं ॥

८—हे अश्विन् कृश नाम दुर्बल ऋषि को आपने रक्षा दी और शयु की भी रक्षा की आपने पूजन करने वाले मनुष्य और विधवा पद्मती योद्धा की रक्षा की है अश्विन् शब्द करने वाले तड़ित धारी मेघ हवि देने वाले यजमान के अर्थ दरवाजों को खोलें ॥

९—हे पवित्र ! इस स्त्री को आप ने उभया उत्पन्न किया है, इसको कन्या कामी पति दो और बुद्धि द्वारा उत्तम दिव्य औषधि को इसके अर्थ प्रकट करो इसके अर्थ विस्तृत नदी निरतस्थान में रहै और हे अश्विन् कोई इस कन्या के योग्य पति होवे ॥

१०—हे अश्विन् आप की अनुग्रह से जो मनुष्य स्त्री प्राप्ति के अर्थ होता है उस घर में स्त्रियों का प्रवेश पाता है यह स्त्रियां दीर्घ प्रकृति को धारण करती हैं। यह उत्तम पुत्रियां पितरों के पास से पति के पास पहुंचती है और पुरुष स्त्री को आलिङ्गन करके सुख को पाता है ॥

११—हम उस सुख को नहीं जानती हैं आप अच्छीप्रकार बताइये मेरा पति युवतियों के गृह में वास करे और अच्छे गौवें और उत्तम मेरे पति के गृह में आवें ऐसा गृह हम चाहती हैं ॥

१२—हे अन्नधनवाले जलकेस्वामी आप परस्पर सुमति रखते हो हमारे हृदय के कामना को आप पूर्ण कीजिये आप हमारे रक्षक हूजिये और हम अपने पति के गृह को प्राप्त करें ॥

१३—हे अश्विन् आप मेरे पतिके गृह में सुभ स्तुतिकरनेवाले को धन दो हे अश्विन् उदक के स्वामी आप मेरे गृह में आकर सोम को अच्छी प्रकार पान कीजिये आप मार्गस्थवृक्ष को अर्थात् दुर्गति को हरिये ॥

१४—हे द्वय अश्विन् उदकके पति किस स्थान में किस प्रजाके साथ आज आप आनन्द को करते हो कौन यजमान आपको हवि देता है किस यजमान के गृह में आप जाते हो ॥

अथानमिति चित्वारिंशं द्वादशं सूक्तं

१—हे अश्विन् साधारण पुरहूत प्रशस्त तीनि चक्रवाले रथ को जो यज्ञ में जाता है दोष वर्जित स्तुतियों से उषा निकलने पर हम बुलाते हैं ॥

२—हे नासत्या सत्यके नेता अश्विन् प्रातःकाल में अश्वसे युज्यमान प्रातःकाल में जाने वाले मधु के लेजाने वाले रथ पर सवार हूजिये यजन और प्रजा जिस रथपर आप जाते हो उसको प्राप्त करें और आप स्तुति युक्त यज्ञ में आइये ॥

३—हे अश्विन् शुभ सोम पाणि अध्वर्यु सुधरत ऋषिको जो वस्त्र को धा

रण किये हूं जो रहान वाला हूं और अनिष हूं उसके पास आप आओ आप विप्रों को वश में जाते हो उन यज्ञों से मधु पीकर आप हमारे पास आइये ॥

अस्तोवेत्येकादशर्च त्रयोदशं सूक्तं

१—जैसे हृदयछेदनेवाला तीर को अच्छीप्रकार फेंकना धनुष्को बांधने वाले को शोभा है वैसेही इन्द्र की अच्छी स्तुति करना यजमान को शोभा है हे मेधावी आप हमारी स्तुति से शत्रु के वचन को दूर कीजिये—हे जरित आप सोम याग में इन्द्र को आनन्द कीजिये ॥

२—हे स्तुति करने वाले यजमान कामना के वश करने वाले गौ रूप सखा इन्द्र को अपने वश कीजिये—और भूतोंकेजारइन्द्रको जगाइये—जल से भरेहुवे पात्र के समान हिरण्यादि से भरेहुवे इन्द्र शूर को नीचे मुख वाला कीजिये ॥

३—हे मघवन् आप को सब भोजन देने वाले कहते हैं इससे आप सब को धन दीजिये और विशेष शुभ को—आप को स्तोत्रयों का संस्कर्ता सुनता हूं मेरी बुद्धि कर्मवान् होवे—हमारे वसु जानने वाले धन को भाग्य को हमें दीजिये ॥

४—हे इन्द्र आप को संग्राम में सहाय अर्थ बुलाते हैं युद्ध में स्थित जन आप को बुलाते हैं वह शूर वीर इन्द्र आप के साथ में सखित्व को करता है सोमाभिषव न करने वाले पुरुष की सखित्वकी आप कामना नहीं करते हो ॥

५—हवि देनेवाला यजमान जैसे बहुत धन दरिद्रियोंको देता है वैसेही तीव्रसोम आप को देता है एसे यजमान को इन्द्र अच्छे पुत्रों से युक्तकरता है शत्रुवों से अलग करता है और उन के उपद्रव को हरता है ॥

६—जिस इन्द्र में अच्छी स्तुति को करते हैं और जो इन्द्र हम को धन देता है उस इन्द्र के शत्रु को बहुत भय प्राप्त होवे उस इन्द्र के अर्थ यह अन्न भोजनीय होवे ॥

७—हे पुरुहूत इन्द्र आप का जो उग्र वज्र है उससे हमारे शत्रुको हमसे दूर रखिये और हम को गौ युक्त जव युक्त स्तुति दीजिये शुभ स्तुति करने वाले को रमणीय अन्न पहुंचाने वाले कर्म बताइये ॥

८—जिस इन्द्रके जठर में याज्ञयी लोग बहुत सोम को देते हैं—सो ध वान् इन्द्र देनेवालेयजमानको बहुतकुछ देता है और विशेष यज्ञकरनेव यजमान को उत्तम धन पहुंचाता है ॥

९—शत्रु के मारने वाला इन्द्र अति दिव्य जय को पाता है और शत्रु मारने के काल में वज्र को धारण करता है जो देवकामी है उस के अर्थ ध नहीं रोकता है किन्तु वह सुधायुक्त इन्द्र देवकामीको बहुतसा धन देता है

१०—हे पुरहूतइन्द्र आप के प्रसाद से दारिद्र के देनेवाली दुर्बुद्धि से ह अपने पशुवोंके साथ निस्तार पावें और जवसे क्षुधाकोदमकरें और ह मुख्य अन्न को पावें और अपने बल से शत्रु को जीतें ॥

११—पश्चिम उत्तर दक्षिण से जो योद्धा आते हैं उन से बृहस्पति हमा रक्षा करें और सामने और मध्य से जो योद्धा आते हैं उनसेइन्द्र हमारी रक्ष करें और सखा होकर हम को धन देवें ॥

इति तृतीय अनुवाक

अथ चतुर्थ अनुवाक

अच्छाम इत्येकादशर्चं प्रथमं सूक्तम्

१—मेरी स्वर्गकोजानेवालीहवि के साथ जानेवाली कामयमान स्तुति इन्द्र को अच्छी प्रकार प्राप्त होवे जैसे स्त्री पति को वैसेही मेरी स्तुति शुभ मघवा को रक्षा के अर्थ आलिङ्गन करे ॥

२—हे पुरहूत दर्शनीय इन्द्र मेरा मन जो आप की सेवा में है निश्चय करके आप से नहटे आपको मैं कामाभिलाषी होकर राजा के समान कुशप विठलाता हूं और आप को इस सोम में उत्तम अवपान देता हूं ॥

३—इन्द्र हमारी पियास और क्षुधा के हरने वाले हो वह मघवा इन के धन का स्वामी होवे। कामना के वर्षने वाले बलवान् इन्द्रके अन्न क वाली प्रसिद्ध नदियां प्रवण देश में बढ़ावें ॥

(क) ४—जैसे पक्षी अच्छेपत्र वाले वृक्ष पर बैठता है वैसेही आनन्द देने वाला चमसा पात्र में स्थित सोम इन्द्र को ग्रहण करता है इन सोम के वेग युक्त अग्रभाग प्रकाशमान होते हैं और इन्द्र अपने प्रेरित ज्योति को मनुष्य के अर्थ देता है॥

५—जैसे जुआं के खेल में हारीहुयी वस्तु को जुआंरी समेटताहै वैसेही इन्द्र सूर्य्य को लेता है हे इन्द्र आप के उस वीर्य्य की कोई और पुरुष नहीं बराबरी करसकता है—नपूर्वकाल में किया है नइस काल में करताहै और नभविष्य में करेगा॥

६—कामना के वर्षने वाले इन्द्र सम्पूर्ण मनुष्यों को सोजाता है वह स्तोत्रो जनों की स्तुतिको लेता है इन्द्र जिस यजमान के यज्ञ में रमता है वह तीव्र सोम से संग्राम चाहने वाले शत्रुवों को हराता है॥

७—सोम इन्द्र को उसी प्रकार प्राप्त होता है जैसे जल सिन्धु को और जैसे कूल भील को बढ़ाती है वा वृष्टि अपने दिव्यदान से शस्य के क्षेत्र को वैसेही मेधावी पुरुष इन्द्र के महत्व को यज्ञ में बढ़ाते हैं॥

८—जैसे लोक में वृषभ क्रुद्ध होकर चलता है तैसेही इन्द्र क्रुद्ध होकर मेघ वध के अर्थ जाता है सम्पूर्ण जगत के स्वामी इन्द्र से पालित प्रसिद्ध जल उत्पन्न होता है वह धनवान् इन्द्र सोमाभिषव करनेवाले हविप्रदान देनेवाले मनुष्य को तेज देता है॥

९—इन्द्र का वज्र ज्योतियुक्त मेघ वध में मेघों को काटता है यज्ञ की माध्यमिका वचन पुरान काल के समान पुकारती है यारोचमान इन्द्र दीप्ति से प्रकाशमान है वह सत्पति इन्द्र आदित्यके समान विशेष ज्वालाको पाताहै॥

१०—११—पूर्व स्वते व्याख्याते॥

यायाविश्वैकादशर्चं द्वितीयं सूक्तम्

१—जो शरमाण बुद्धिमान् इंद्र अनेक प्रकार के अश्वबलको अपने अपार महत् बल से बिथरा देता है वह धनपतिइन्द्र मद के अर्थ रथ पर हमारी यज्ञ में आवें॥

२—हे पालक इन्द्र आप के उत्तम रथ में उत्तम घोड़े जुतेहुवे हैं और आप के बाहु वज्र के चलानेवाले हैं हे राजन् इन्द्र शीघ्र आप शोभन मार्ग से

हमारे अभिमुख आइये—और सोम पीनेवाले आप को सोम पिलाकर हम वृद्धि देवें ॥

३—मनुष्यों के पालक वज्रहस्ती मन्त्रबल के हटानेवाले कामना के देने वाले सत्यपालक इन्द्र को बलवान् इन्द्रवाचक प्रसिद्ध यज्ञमें आनन्द पानेवाले बुलाते हैं ॥

४—हे इन्द्र पालक द्रोण कलश में रक्खेहुये बल के धारण करने वाले सोम को पेट में धारण कीजिये और हमको बल दीजिये और हमको अपने में लीजिये उसिज के हृदयस्थ आप यथावत् स्वामी हो ॥

(क) ५—हे इन्द्र आपका दियाहुवा धन हम को प्राप्त होय इस कारण हम आप की स्तुति करते हैं तुम सोमी के यज्ञ में आप आइये आप धन के स्वामी हो हमारी इस वेदी में कुशोंपर बैठिये आप के सोम पात्र राक्षसों के कर्म्म से खराब नहोवें ॥

(क) ६—हे इंद्र आप के प्रसाद से देवलोक में मुख्य यज्ञ करता जाते हैं और दुस्तर यज्ञ के पथ को पाते हैं और जो आपके प्रसाद से रहित हैं वह यज्ञ के नाव पर नहीं चढ़सकते हैं और कुत्सित पुरुष कर्म्म करके अधो गति को प्राप्त होतेहैं ॥

७—दुर्बुद्धि पुरुष दूसरेको पूजन करके अधोगति प्राप्तिकरने वाले होतेहैं और जो प्रबल घोड़ोंको यज्ञ में सामर्थ्य के साथ नहीं लगाते हैं वह नर्क को प्राप्त होते हैं और जो मरण के पहिले हवि देते और जो यज्ञ के भोग योग्य धन को देवतों को देते हैं वह पुरुष स्वर्गगामी होते हैं ॥

८—इंद्रने गमनशील मेघको कम्पमान किया—दिवलोक निवासी निडर इंद्र को बुलाते हैं—वह इंद्र अन्तरिक्ष पर कोप करता है और परस्पर द्यावा पृथिवी को स्तंभित करता है सो इंद्र वर्षणशील सोमको पीकर प्रशस्य वचन कहे ॥

९—हे मघवन् इंद्र आप के सक्त अंकुश को अर्थात् उपदेशको मैं धारण करता हूं जिस वचन से आप ऐरावतादि को पीड़न देते हो—आप हमारे इस यज्ञ में अच्छे निवास को कीजिये हे धनवान् इंद्र हमारी स्तुति को जानिये ॥

१०—११—पूर्वसूक्तेव्याख्याते

दिवस्परीति द्वादशर्चं तृतीयं सूक्तम्

१—अग्नि प्रथम दिव्यलोक में आदित्य रूप से और फिर जातवेद से नामसे मारी अनुग्रह के अर्थ उत्पन्न भया और फिर तृतीय रूप से जल में रहा यह मनुष्य अग्नि को दीप्यमान करके अनवरत स्तुति करते हैं ॥

२—हे अग्नि आप को तीन लोक में तीन रूप से स्थित हम जानते हैं आप के अनेकप्रकार के विभृत धाम को हम जानते हैं आप के गुहा के जो विद्व नाम हैं उन को हम जानते हैं जिस स्थान से आप आते हो उस काग़ाता को भी हम जानते हैं ॥

३—हे अग्नि समुद्र में तृतीय रूप आपका दीप्यमानहुवा, तृतीय रूप आपका देव लोक में और आपका तीसरा रूप अन्तरिक्ष लोक में स्थित हुवा बड़े बड़े देवता आपको स्तुति से वृद्धि को देते भये ॥

४—हे अग्नि जैसे विद्युत् रूपसे आप बड़े शब्दको करते हो वैसेही बड़े शब्द को कीजिये अग्नि पृथिवी का स्वादु लेता है औषधियों को संताप देता है उसी कालमें वह जायमान और दीप्यमान अपने दग्ध वस्तुको अच्छी प्रकार से देखता है रोदसी उसकी दीप्ति से प्रकाशमान होती है ॥

५—श्री के दाता धनके धारक बुद्धिमानों को फलके देने वाले सोमके पालन करनेवाले सर्वलोक के वासी बलसे पुत्र जलमें स्थित उषा के कालमें अग्नि होम अर्थ हे अग्नि आप प्रकाशमान होते हो ॥

६—विश्व के केतु भवन के गर्भ द्यावा पृथिवी को पूर्ण करते हो और जाने पर दृढ मेंघको आप फारते हो पंचजन ऐसे अग्नि के पूजन करते हैं ॥

७—हविके कामना करने वाले पावक भूतों में जानेवाले अच्छी बुद्धिवाले मनुष्यों में निहित अग्नि धूम को भेजता है और आरोचमान रूप को धारण करके आकाश में शुक्र ज्योति से जाता है ॥

८—पृथ्वमान रोचमान अग्नि पृथिवी पर बहुत प्रकाशती है आयु में जाने वाले जिससे अग्निसे कादुरभिभव कभी नहीं होता सो अग्नि मरण रहित रहै इस अग्नि को शोभन वीर्य वाले आकाश ने उत्पन्न किया ॥

९—हे कल्याण दीप्त वाले देव यविष्ठ अग्नि जो आप के अर्थ आजके दिन घृत मिला भया पुरोडाश बनाता है उस यजमान को उत्तम धन भेजिये और देवभक्त यजमान को सुख दीजिये ॥

१०—हे अग्नि जिसकर्मों में शोभन हवि आपको दीजाती है उस कर्म करने वाले को आप अभिष्ट दान दीजिये वह यजमान सूर्य को प्रिय होता है जो उत्तम स्तोत्र पढ़ा करता है उस पर कृपा कीजिये वह अपने पौत्रों से शत्रु को मारे ॥

११—हे अग्नि आपको यजमान प्रतिदिन उत्तम धन देते हैं और आप यज्ञ में जो रूप धन की रक्षा करके मेधावी ऋत्विज शत्रु मन्त्र ब्रह्म से निहत किया ॥

१२— कर्मों के करने वाले पुरुष सब सेव्य वैश्वानर अग्नि की स्तुति करते हैं सोमके रक्षक द्यावा पृथिवी को हम बुलाते हैं हे देवता पुत्र युक्त धनको हमें दीजिये ॥

प्रहोतेति दशमं चतुर्थसूक्तं

१ – जो अग्नि कि अन्तरिक्ष के ऊपर विद्युत् रूप से बैठता है वह यज्ञ भाग के होम में प्रगट होवे—वह अग्नि आकाश का जानने वाला बहुत है—वह यज्ञ का धारक वेदी के विषे स्थित यजमान को अन्न और देनेवाला और देह का रक्षक होवे ॥

२ – और भृगुवंशी ऋत्विज ऋषियों ने जलमें स्थित अग्नि का पूजन किया और स्तोत्र पढ़कर नमस्कार किया फिर खोये हुवे पशुवों को ढूंढ़ी २ उस गुफा में अग्नि के पीछे गये जहां वह गये छिपाई गई और उन पशुवों को फिर प्राप्त किया ॥

३—इस अग्नि को त्रिभुवन के पुत्र मित ऋषिने भूमिके विस्तर यह अग्नि सबका बढ़ानेवाला यजमान के यज्ञ में प्रगट होकर रोचमान यज्ञ फल का देने वाला होवे ॥

॥ कामयमान ऋत्विज नमस्कारयुक्त आनन्द देनेवाला होता देवों का बुलानेवाला यजनीय अग्नि को प्रसन्न करता है यज्ञ के नेता यज्ञ के लाने वाले पावक हविके लेजानेवाले—उस अग्नि मनुष्य के मध्य में को धारण किये है ॥

होता शुभ बड़े धन प्राप्त करने वाले मेधावियों के धारण करने के स्तुति अर्थ समर्थ हो ऐ यह पुरुष वह समुद्र

के फाड़ने वाले गर्भ के धारण करने वाले हरे मसयु वाले उत्तम अश्वके समान चलनेवाले स्तुति पानेवाले अग्नि को हवि और स्तोत्र से प्राप्त करो ॥

६—तीन स्थान में स्थित यजमान के यहां स्थितरहने की इच्छा युक्त ज्वाला से व्याप्त याग गृह में अग्नि बैठता है उस स्थान से प्रजा की हवि ग्रहण करके विधि पूर्वक दान लेने वाले देवतों के बीच में मनुर्वों के रोकने वाले कर्मों से जाता है ॥

७—यजमान के सम्बन्धी हविको जरा रहित रक्षा के करने वाले अर्च-नीय धूम्रवाले पावक ख़तीचय चिप्र धर्मा भरणशील बन में बैठने वाले वायुके समान वेगवान अग्नि शीघ्र लेता है ॥

८—जो अग्नि अपने ज्वाला जिह्वा से कर्म को भरता है जो अग्नि स्तोर्वों की पृथ्वी की रक्षा के अनुग्रह युक्त मन में धारण करता है उस अग्नि को मनुष्य गण दीप्यमान शोधक स्तुति योग्य होता जाने हैं ॥

९— जिस अग्नि को द्यावा पृथिवी ने लौकिक रूपसे जाना और जलने जिसको विद्युत् रूप मे जिस्को त्वष्टाने नत्यन्न किया भृगु वंशियों ने जिस्को स्तोत्रादि बलसे पाया मातरिश्वा देवतो ने ऐसे स्तुतियोग्य यष्टव्य अग्नि को मनु के अर्थ बनाया ॥

१०—हे अग्नि आपको देवता हव्यवाह बनाये हुए हैं और बहुकामी मनुष्य आपको यष्टव्य जानते हैं सो हे अग्नि यज्ञ के विषे मफ स्तुति करने वाले को धन दो देव कामी यजमान ने पूर्व कालमें आप से बहुलमा अन्न को पाया है ॥

अगृभाते इत्यष्टर्च पंचमं सूक्तं

१—हे वज्र धनके स्वामी इन्द्र आपके दक्षिण हाथ को हम बसु कामी पकड़ते हैं हे शूर इन्द्र आप को मैं बहुत गर्वों का स्वामी जानता हूं—इस कारण हमको उत्तम वर्षने वाला धन दो ॥

२—हे इन्द्र आप शोभन वज्रादि आयुध के धारण किये हो आप का गमन शोभा युक्त है यज्ञे आपके नवन हैं आप चारो समुद्रों को धारण करने वाले हो पुनःपुनः धनको पैदा करत हो स्तुति योग्य दुःख के निवारण करने वाले आप हो ऐसे आप को मै जानता हूं ॥

३—हे इन्द्र आप अच्छे स्तुति लक्षण कर्म वाला देववान बड़ा विशीर्ण गंभीर विततमूल जैसा ऋषियों का ध्यान सुना गया है ऐसा ध्यानवाला दा अभिमानी शत्रुओं का हरानेवाला ऐसा उत्तम हमारी कामना का पूर्ण करने वाला पुत्र दो ॥

४—हे इन्द्र धनयुक्त मेधावी तारक धनका पूर्ण करने वाला स्पष्ट वर्धनत शोभन बलवाला शत्रुका मारने वाला और उन का गढ़ जलानेवाला बल करने वाला—ऐसा उत्तम० ॥

५—हे इन्द्र अश्व वान रथवान वीर हजारो गवों के स्वामी के समान धनवान् शुभ भद्र सेवकों से युक्त मेधा और वीरत्व से शोभित सब वस्तु का जानने वाला ऐसा उत्तम० ॥

६—इस स्तुतिका फल मुझ सत्य कर्मवाले अच्छी बुद्धि वाले बड़े मंत्रके स्वामी को पहुंचे । मैं जो नमस्कार से देवतों को बैठाता हूं सप्तगु अंगिरा गोत्रोत्पन्न हूं देवता ऐसे मुझको पूज्य कामना पूर्ण करनेवाला पुत्र देवें ॥

७—मुझ छंदर्षि के संभजन करने वाले अनुकूल बुद्धि मांगने वाले कर्म के स्तोत्र दूत के समान इन्द्र की पहुंचें प्रिय मन से कहे हुवे इन वचनों को सुनिये हमको पूज्य० ॥

८—हे इन्द्र जो आप से मांगा है वह हमको दो महान् पराय असाधारण जिसको द्यावा पृथिवी मानें—ऐसा पूज्य वर्धक पुत्र हमको दो ॥

(क) अहंभुवाभेत्य एकादशर्च षष्टं सूक्तं

१—मैं इन्द्र धनका मुख्य पति मुझ से सब धन है शत्रु के धन को मैं एक वार में जीतता हूं मुझ को जीव उसी प्रकार बुलाते हैं जैसे पुत्र पिता को मैं यजमान को भोजन देता हूं ॥

२—मैं अथर्वण के पुत्र दध्यंच के सिर का काटने वाला हूं मैं पिता के अर्थ जल का उतपन्न करने वाला मेधा हूं—शत्रुओं से धन का लानेवाला हूं मातरिश्वन् के पुत्र दधीच के अर्थ मेघ का मैं मारने वाला हूं ॥

३—मेरे अर्थ त्वष्टा आयसवज्रबनाता देवता मेरे अर्थ यज्ञ करते हैं—मेरी सेना को सूर्य की चाल भी नहीं पहुंचती है और मुझ को हव्य अर्थात्

४—उन यज्ञ करनेवालों को जो मुझ को अपने स्तुति से आनन्द देते हैं, मैं दुग्ध देनेवाली गौ और हिरण्यकर्ण्ड अश्व घोड़े देता हूं और मनुष्य के शत्रु रूपी हजारों से पशुओं को अपने बाण से मारता हूं ॥

५—मैं इन्द्र धनका स्वामी हूं मैं शत्रु से पराभूत को नहीं प्राप्त होता—हमारे भक्त अकालमृत्यु के भागी नहीं होते इसी कारण यजमान मुझ से धन मांगते हैं—हे मनुष्य मेरे सखा को अरिष्ट न होगा ॥

६—मैं इन्द्र बलवान् शत्रु के साथ शत्रुनाशक वज्र से युद्ध करता हूं जो शत्रु से युद्ध करता है और युद्ध में बोलाता है वह अति अप्रतिशील बलवान् होकर मैं भय उत्पन्न करने वाले स्थिर वचन कहकर वज्र से मारता हूं ॥

७—मैं अकेला शत्रु को हराता हूं शत्रु से हारने वाला मैं नहीं हूं मैं दो अथवा शत्रु को एकहीबार में हराता हूं—तीन शत्रु भी कुछ नहीं कर सकते—अनायास मारडालता हूं बहुत शत्रुओं को मैं मारता हूं—वह शत्रु जो मुझ को नहीं मानते हैं मेरी निन्दा करते हैं उनको मैं मारता हूं ॥

८—मैंने गंगुष्य देश में अतिथि के पुत्र दिवोदास को निष्कारण शत्रु से रक्षा दी और जैसे पृथ्वी अन्न को धारणकर्ता है वैसेही धारण किया पर्णयम और करंजक को मारनेके अर्थ बड़े संग्रामका मैं करनेवाला कहाजाता हूं ॥

९—मेरा स्तोत्र सर्व आश्रयी भूत को बहुत अन्नका देनेवाला है मेरी स्तुति करने वाले जन गर्व और सखित्व मांगते हैं मैं उनको गर्व और सखित्व देने वाला करता हूं जो मेरे सम्बन्धी संग्राम में जयके अर्थ स्तुति करते हैं तब मैं वस्तु को ग्रहण करता हूं इसी प्रकार से जो जो स्तुति के वचन कहते हैं सो सो मैं करता हूं ।

१०—यष्टा और अयष्टा दोनों पुरुष युद्ध करते भये उसमें इन्द्र अपने सार्थ साधन रूप से प्रकट होते भये और वह जिस्से सोम को नहीं दिखा था उसने तीक्ष्ण बाणोंसे वधा अपने को पाया और बड़े अन्धकारमें स्थित हुआ ।

११—आदित्य वसु रुद्र अथवा रुद्रके पुत्र मरुत और २ देवतों के स्थान को इन्द्र नहीं नाश करता वह आदित्यादि मेरे भद्र अर्थ हैं और मेरे बलसे अपराजित अस्तुत और अनभिभूत हैं ॥

और बहने वाली नदियां पृथिवी पर है उनको शोभन कर्म वाला उदक मैं देता हूं और मनुष्य के यज्ञ में युद्ध मार्ग को मैं लेता हूं ॥

१०—मैं गवों में वह दुग्ध देता हूं जो त्वष्टा देवताने नहीं दिया वह दुग्ध शीत और स्पृहणीय है और गौओं के पयोधारण देशमें वर्तमान हैं मैं मीठे जलको वहन शील नदियों में देता हूं और क्षिप्र गामी सुख देने वालेसोम को मैं लेता हूं

११—हे देव यज्ञ में विशेष करके जानेवाले अपने बलसे युक्त धनवान् सत्य के पालने वाले सुयज्ञ करने वाले इन्द्र आपके विश्व कर्मों की ऋत्विज लोग प्रशंसा करते हैं ॥

अथोमइति सप्तर्षं अष्टमं सूक्तं

१—हे स्तोता उद्धृत सोम से विश्वनर इन्द्र के आनन्द अर्थ स्तुति कर्म को उच्चारण कीजिये उस उत्तम अन्नो बल वाले इन्द्र के महत अन्न धन है द्यावा पृथिवी उसके पूजन को करती हैं ।

२—वह इन्द्र अधि रूपसे सबसे स्तुति पाकर सबके ईश्वर रूपसे मेरे ऐसे पुरुषों के अर्थ पूजनीय रहे हैं शत पालक इन्द्र विश्व के उठाने वाले युद्ध करने वालेमेघ से उदक पहुंचाने के कारण आप शूरत्वको प्राप्त कीजिये॥

३—हे इन्द्र कितने मनुष्य हैं जो आपके अर्थ हविदेते हैं जो आपको सुख देते हैं और धन देते हैं जो आपके लिये हुये अन्न धन और रथ को पाते हैं आपके बल निमित्त कितने मनुष्य हवि देते हैं और देवता उर्वरा पृथिवी पर आपके निमित्त जल भेजते हैं ॥

४—हे इन्द्र आप मेरी स्तुति पाये हुये स्तोत्र से वृद्धि को पाइये और संपूर्ण यज्ञमें और संपूर्ण संग्राम में शत्रुवों के मारने वाले हूजिये हे विश्व के खाने वाले आप सबसे ज्येष्ठ हैं ॥

५—हे इन्द्र प्रशस्य तर आप यज्ञ करने वाले स्तोतों की रक्षा कीजिये हे इन्द्र आप की रक्षा को देव ऋषि मनुष्य सब जानते हैं सो आप अजर रह कर हविसे जल्दी वृद्धि को पाइये यह संपूर्ण यज्ञ विस्तीर्णता को प्राप्त होवे॥

६—हे इन्द्र यह सम्पूर्ण यज्ञ तूर्णता की प्राप्त होवे हे बलके पुत्र आप

अहंदामिन्येका दशर्ष सप्तमं सूक्तं

१—मैं मुख्य वसु देने वाले इन्द्र की स्तुति करता हूं मैं ब्रह्म कर्म को करता हूं मेरी वृद्धि होवे मैं यजमान के धनका प्रेरक होउं और मैं आपके नपूजन करने वाले को सर्व संग्राम में हराउं ॥

२—देवता मुझ इन्द्र को दिव और पृथिवी और अन्तरिक्ष लोकमें हविसे धारण करते हैं मैं अपने रथमें पुंस्त्व युक्त विविध कर्म वाले लघु गामी घोड़ों को लगाता हूं और वज्रायुधको बलसे मैं धारण करता हूं ॥

३—मैं उषन ऋषिके अर्थ बहुत प्रकार से आच्छादित मेघको ताड़ताहूं और मैं कुत्स ऋषि की शुष्णु वधादि रूपसे रक्षा करता हूं मैंने शुष्णु के मारने के अर्थ वध को नियत किया और श्रेष्ठ पुरुषों के देने योग्य उदक अन्न को मैं शत्रु को नहीं देता हूं ॥

४-मैं पिता के तुल्य पुत्र के अभिमत कार्य्य कोकरता हूं कुत्स महर्षि वेतसूल्य देयको इच्छा करने वाले तुग्र अभ्यादिभ और हमारे वस करने वाले यजमान के आनन्द अर्थ मैं समर्थ हूं और शत्रु मारने के अर्थ संग्राम में मैं उत्तम वस्तु यजमान को देता हूं ॥

५—मैंने मृगय असुर को श्रुतवरण के अर्थ मारा और दुत वर्णने मुझ को भक्ति से जीता और उत्तम स्तोत्र से मुझ को वश किया मैंने आयव ऋषि के अर्थ नम्र स्थान बनाया पटग्रभिके रुख अर्थ मैं वश हुवा ॥

६—मैंने वृत्रासुरके समान शत्रु का नया बना हुवा रथ को तोड़ डाला वह पृषिढ शत्रु को ऋनु भक्त करके प्रकाश मान लोकसे दूर किया ॥

७—सूर्य्य देवता के शीघ्र गामी एतश वरण घोड़ों से युक्त रथके समान मैं अपने बलसे परिक्रमा करता हूं यदि मुझको मनुष्य सोमाभिषव में बुलाते हैं तो मैं यश रूपके अर्थ हनन साधक प्रकार से शत्रुओं को पृथक करताहूं ॥

८—मैं शत्रुवों के सात ग्रामों का नाश करने वाला हूं मैं बन्धकों का बन्धक हूं अपने बलसे तुरषु यदु और पृथावय को गवादि दानसे पूर्ण करने वाला हुवा मैं बल से युक्त होकर औरों को भी वशी करता हूं और नवसे नब्बे प्रकार तक आवाहन से मैं वृद्धि को पाता हूं ॥

९—मैं सातों बहती हुयी नदियों को धारण करता हूं जो चलने वाली

और इसके स्वामी नदियों नदियों का है उसको सोमरस जैसे स्वामी उदक में देता हूं और मनुष्य के वास्ते पुरुष मार्ग को में देता हूं ॥

१०—मैं गायों में वह दूध देता हूं जो त्वष्टा देवताने नहीं दिया वह दूध दोनों और स्वादिष्ट है और लोगों के धारण करने में वर्तमान है मैं मधुर उसको बहने वाली नदियों के देता हूं और विष्णु नामी सुख देने वाले सोम को मैं देता हूं

११—हे देव यज्ञ में विशेष करके जानेवाले अपने बल से युक्त धनवान छन्द के पालने वाले सुख करने वाले इन्द्र आपके विष्णु कर्मों को बुद्धिमान लोग प्रशंसा करते हैं ॥

[illegible] अष्टमं सूक्तं

१—हे स्तोता बहुत सोम से निरन्तर इन्द्र के आनन्द अर्थ स्तुति कर्मों को उच्चारण कीजिये उस भजन सदा बल वाले इन्द्र के महत अन्न धन है आत्मा पृथिवी सर्व पूजन भी करती है ।

२—वह इन्द्र अधिक उपमे सर्व स्तुति पाकर सबके ईश्वर उपसे मेरे ऐसे पुरुषों के अर्थ पूजनीय रसे हे धन पालक इन्द्र बिना के उठाने वाले युद्ध करने वालेमेघ के भेदक वज्र धारने के कारण आप शूरता को प्राप्त कीजिये॥

३ हे इन्द्र कितने मनुष्य हैं जो आपके अर्थ हविदेते हैं जो आपको सुख देते हैं और धन देते हैं जो आपके दिये हुये अन्न धन और सख को पाते हैं आपके बल निमित्त कितने मनुष्य हवि देते हैं और देवता उर्वरा पृथिवी पर आपके निमित्त जल भेजाते हैं ॥

४—हे इन्द्र आप मेरी स्तुति पाये हुये स्तोत्र से वृद्धि को पाइये और संपूर्ण यज्ञमें और संपूर्ण संग्राम में शत्रुवों के मारने वाले इसलिये हे विश्व के जानने वाले आप सबसे ज्येष्ठ हैं ॥

५—हे इन्द्र पुरस्त तर आप यज्ञ करने वाले स्तोतों की रक्षा कीजिये हे इन्द्र आप की रक्षा को देव ऋषि मनुष्य सब जानते हैं सो आप अजर रह कर हविसे जल्दी वृद्धि को पाइये यह संपूर्ण यज्ञ विस्तीर्णता को प्राप्त होवे॥

६—हे इन्द्र यह सम्पूर्ण यज्ञ पूर्णता को प्राप्त होवे हे बलके पुत्र आप

.... यज्ञ को धारण करते हो आप शत्रु को मारण अर्थ रक्षक हो और धर्म के रक्षा के करने वाले आप यज्ञ मंत्र को पढ़िये ॥

७—हे मेधाविन् इन्द्र आपको जो स्तुति करने वाले साथी हैं अभिषुत सोममें उत्तम धनकी दान अर्थ ढूंढते हैं और सुख लाभके अर्थ मनोमार्ग स्तोत्र से वसु दान योग्य होते हैं और वह अभिषुत सोम आनन्द को पहुंचाता है॥

मरुत्तदिति नवर्चं नवमं सूक्तं

(क)१—वह प्रवरण अत्यन्त स्थूल है जिस प्रादर से आवेष्टित होकर है अग्नि आप उदक में प्रवेश करते हो हे जात वेद अग्नि आपका विश्व भ्र एकही देवता ह ोकर बहु प्रकार सेदेख पड़ता है ॥

२—किसने मुझे देखा है किसने मेरी देह को बहु प्रकार से स्थित देखा है हेमित्र वरुण सुभ्र अग्नि के संपूर्ण समिध्व दीप्त मान देवतों के लाने वाले शरीर में कौन वहता है ॥

३—हे जात वेद अग्नि आप को हम ढूंढ़ते हैं आप जलं और ओषधि में बहुधा प्रविष्ट रहते हो ऐसे आपको यम देवताने पहचाना हे चित्र भानु दश स्थान के रहने वाले अति रोचमान आप हो ॥

४—हे वरुण होत्रों से डर करके मैं यहां आया हूं मुझको पूर्व प्रकार से देवता हवि लेजाने में नलगावें इस डरसे मेरा शरीर बहुत प्रकार से जह के विषे प्रविष्ट करताभया हूँ नहीं इस कार्य को अङ्गीकार करनाचाहता हूं

५—हे अग्नि आप आइये मनुष्य देवतों की पूजन की इच्छा से यज्ञ दर.. है—अपने को अलंकृत करके आप अन्ध कारसे बैठते हो देवतों के बीच में आकर उस मार्ग को जिससे मनुष्य आते हैं सुगम करो और सुमन मनसे हमारी हवि को लेजावो ॥

६—हे अग्नि के पूर्व उत्पन्नभ्रातर हवि लेजानें के अथ अनुक्रम से हतवन्त होते भये जैसे मार्ग पर रथी जाता है वैसाही मरण भयसे दूर देश में जाते भ? और धनुषी की रस्सी से जैसे मृगा कांपता है वैसाही आपके भा कांपते हैं ॥

७—हे अग्नि वह आयु जो जरारहित है उस को आप ग्रहण कीजिये ऐसी आयु से संयुक्त आप हे जातवेद मृत्यु को न मारिये आप सुमन यज्ञ के लेजाने वाले हूजिये हे सुजात हवि के भाग को देवतों को पहुंचाइये ॥

८—हे देवता मुझको पहिला और पिछिला असाधारण सारवन्त हविका सिष्टकृद भाग दीजिये उदक से उत्पन्न घृत और ओषधियों से उत्पन्न पुरुष हमें दीजिये हे देवता अग्नि दीर्घायु होवे ॥

९—हे अग्नि प्रयाज और अनुयाज अर्थात् आदि और अन्त भाग असाधारण सारवन्त हवि का आप को होवे हे अग्नि यह संपूर्ण यज्ञ आप को है चारोदिशा आप के नमस्कार करते हैं ॥

विश्वेदेवाः पञ्चर्चं दशमं सूक्तम्

१—हे विश्वेदेवा आप मुझको अनुज्ञा दीजिये इस यज्ञ में देवतों के बुलाने वाले होकर हम देवतों की स्तुति करें और ऐसी आप आज्ञा दीजिये कि हम बैठकर आप की स्तुति करें हम को वह भाग जो आप मेरे अर्थ कल्पित करें दीजिये और जिस मार्ग से हम आप की हवि पहुंचावें उसे बताइये ॥

२—मैं होता होकर बैठता हूं मुझ को संपूर्ण देवता हवि लेजानेके अर्थ नियुक्त करते हैं हे अश्विन् आप को प्रतिदिन अध्वर्यु हवि देते हैं और होम को ब्रह्मा बनाते हैं आप के होमअर्थ यह आहुति है ॥

३—इस यज्ञ का होता कौन है जो यम से डराहुवा हवि को लेजाता और देवतों को पहुंचाता है अग्नि प्रतिदिन उत्पन्न होता है और मासमास उत्पन्न होता है ऐसे हव्यवाहक अग्नि को देवता धारण करते हैं ॥

४—मुझ को देवता धारण करते हैं वह स्थान में जाने वाले और लौटाने वाले मुझ को कहिते हैं बुद्धि के धारण करने वाले मुझ अग्नि में यज्ञ की कल्पना करते हैं जो यज्ञ कि पांचप्रकार से की जाती है और जो तीनि वार होती है और जिस में सात छोरे हैं ॥

५—हे देवता हम आप से प्रार्थना करते हैं कि आप हम को अविनाशी सवीर पुत्र हवि धन से युक्त कीजिये इन्द्र के बाहु के वज्र को मैं धारण करूं और संपूर्ण शत्रु की सेना को जीतूं ॥

६—तीनिशत तीनि सहस्र तीस और नव देवता मेरी पूजन को करते हैं घृत को छोड़ते हैं कुश को बिछाते हैं होतावों को बिठलाते हैं ॥

यमेच्छामेत्येकादशर्च सेकादशं सूक्तम्

१—जिस अग्नि के इच्छा करने वाले हम हैं वह इस हवि से हमको प्राप्त होवे वह अग्नि यज्ञ का जानने वाला और यज्ञ के अंग का जानने वाला है वह अग्नि पूजनीयों में श्रेष्ठ हमारी यज्ञ के विषे पूजन को पावे और यज्ञ में सब देवतों के पूर्व आवे ॥

२—वह अग्नि पूजनीयों में श्रेष्ठ वेदी पर बैठाहुवा आहुति योग्य है ऐसे देवता के अर्थ अच्छेप्रकार के अन्न हैं देवतों के अर्थ शीघ्र हम आज्य से और स्तुति योग्य देवतों को स्तुति से पूजन करते हैं ॥

३—अग्नि आज हमारे देवतों से युक्त यज्ञ का भला करो हम यज्ञ के गुह्य जिह्वा को जानते हैं सो आप हैं सोआप सुगन्धित वसन से देवतों के रके आच्छादित यज्ञ में आते हो और आकर देवहूती यज्ञ को जो आज हम करिरहे हैं पूर्ण कीजिये ॥

४-अब मैं मुख्यवचन कहता हूं जिन वचनों से मैं और और देवतों ने असुरों को हराया है हे अन्न के खाने वाले यज्ञ के करने वाले पंचजन तुम हमारे आवाहन का सेवन करो ॥

५—हे पंचजन तुम हमारे हवन का सेवन करो पृथिवीसे जो उत्पन्न और यज्ञयोग्य जो देवता हैं वह मेरे आवाहन को ढूंढ़ते हैं पृथिवीदेवता पापों से हमारी रक्षा करती है अन्तरिक्षदेवता आकाश से पाप से हमारी रक्षा करता है ॥

६—हे अग्नि आप यज्ञ का विस्तार कीजिये और रजसलोक के भानु में आप प्रवेश कीजिये प्रकाशमान स्वर्ग वा यज्ञ के मार्ग की रक्षा कीजिये जो मार्ग कि कर्म्म करनेसे प्राप्त होते हैं। ऐसे आप अग्नि होत्रियों के कर्ममें व्याप्त होते हैं सो आप स्तुतियोग्य हूजिये सो आप देव्यजन उत्पन्न कीजिये और यथाभिगामी कीजिये ॥

७—हे सोमार्हदेवता आप जो यज्ञ के विषे घोड़ों को रथ में बांधते हो और घोड़ों को यजते हो और रश्मियों की टीक करते हो

थि निवासस्थान) वाले रथ के साथ अपने रथ को सब दिशों में चलाते हो ऐसे कर्म से देवतों को आप प्रसन्न करते हो ॥

८—अश्मन्वती नदी को हम छोड़ते हैं उसको छूते हैं और खड़े होकर उसको नांघते हैं हे सखा इस नदी को वह छोड़ें जिन को कि यहां सुख नहोवे सुखकारी अन्न के प्राप्त करने के लिये हम उत्तीर्णहोते हैं ॥

९—वह त्वष्टा माया को जानता है यह शोभनकर्मा के वीच में सब से ज्यादा शोभित है वह उनपात्रों को जिन में कि देवता पान करते हैं धारण करता है वह त्वष्टा अब अग्नि में हव्य लेजाने को अंगीकार करके परशु को तीक्ष्ण करता है जिस परशु से ब्रह्मणस्पति पात्र को बनाता है ॥

१०—हे त्वष्टा के शिष्य मेधावी ऋभुआप प्रशस्तहो इस काल में उस अस्त्र को तीक्ष्ण करो जिससे अमृत सोम के पीने के पात्र को तुम बनाते हो हे विद्वान् आप गुह्यस्थान में जाइये जिस स्थान में आप वा और २ देवता अमृत को पावें ॥

११—हे ऋभु गर्भ में किसी गौ ने आप को धारण किया वत्स को धारण कियेहुये किसीप्रकार करिके मन से देवत्व की आकांक्षा की वा जिह्वा से स्तुति की वह संभजनशील ऋभु अमृतत्व के पाने के योग्य है और स्तुति को ग्रहण करता है और शत्रु को विजय करता है ॥

तांसुत इति षड्ऋचं द्वादशं सूक्तम्

१—हे धनवान् इन्द्र आप के महत्त्वसे प्राप्त कीर्ति को मैं अच्छे प्रकार गाता हूं जब द्यावापृथिवी असुरों से भयप्राप्त करके आप के शरण में आती हैं तब देवतों से कहती हैं हमने रक्षा पाई देवतों से रक्षायुक्त आप असुरों को मार कर पृथिवी का भार हरतेहैं आपका बल एक प्रजा के अर्थभी होता है ॥

२—हे इन्द्र स्तोत्र करिके इस प्राणियों को आप अपने वल को दिखाते हो सो आप की माया है उस माया को मनुष्य युद्ध कहते हैं मारनेयोग्य, शत्रु आप आज नहीं पाते हो पूर्वकाल में कैसे पाये हो गे ॥

३—हे इन्द्र आप को समस्त महिमा का अन्त हमसे पूर्व जो ऋषि भयेहैं उन्होंने नहीं पाया हम आप के महत्त्व को गाते हैं माता पिता द्यावापृथिवी दोनों को आपही अपने शरीर से आप ने उत्पन्न किया ॥

४—हे इन्द्र बड़ेपूज्य आपके वज्र असुरों के मारने वाले औरोंसे अहिंसित अत्यवर्जित शरीर है हे उस्ता उन के आप जानते हैं जिन से आप कर्मों को करते हैं ॥

५—हे इन्द्र आप संपूर्ण और औरोंसे असाधारण धनको धारण करतेहो जो धन प्रसिद्ध और जो गुहादिश के विषे वर्त्तमान हैं उन सब को आप धारण करते हो इस कारण हे मघवन् इन्द्र मेरी कामना को न नाश करो हे इन्द्र आप अभिलषितधन के रखने वाले हो और उसके देनेवाले हो॥

६—हे इन्द्र ज्योतिमान् आदित्य के तेज को आप देते हो आप ने मधुर रस से संपूर्ण सोमादि मधुर रस को बनाया है मैं उस इन्द्र के अर्थ प्रियवच देनेवाले स्तोत्र को कहता हूं मुझको इसमंत्र बनानेकी बड़ीशक्ति मिलीहै॥

दूरेत्यादित्यष्टर्चं त्रयोदशं सूक्तम्

१—हे इन्द्र आप का नाम पराङ्मुखमनुष्यों को अप्रकाशित है और दूर देशके विषे वर्त्तमान है द्यावापृथिवी भी डरकरके आपको बुलाती है बलकाधनके अर्थ उस शरीरकरके अन्त में पृथिवी और आकाश को आप स्तंभित करते हो आप अपने भाईके पुत्रों को प्रकाशित करतेहो ॥

(क) २—हे इन्द्र उस गुहा इष्टार्थी पुरुषोंकरके सूहणीय आकाशात्मक महत्शरीर आपका जिससे भूत और भव्य को आप उत्पादित करतेहो और जो पूर्वकाल को ज्योति हैं आप को प्रिय हैं प्रियमाण पांचोजन आपको अपने निर्वाह के अर्थ सेवन करते हैं ॥

(क) ३—वह इन्द्र सूर्यात्मक अपने शरीर से द्यावापृथिवीको पूर्ण करता है और पांचो देवमनुष्य पितृ और रक्ष संज्ञक को और सप्त सप्त संज्ञक वस्तुओं को(अर्थात् सप्तमरुत्गण सप्तआदित्य रश्मि सप्तलोक) और कालकाल के विषे चौंतीसो देवतों को बहुप्रकार के समानरूप प्रकाश और कर्मोंसे देखता है॥ चौंतीस देवगण यह हैं ८ वसु ११ रुद्र १२ आदित्य प्रजापति वषट्कार विराट्॥

४—हे उषादेवता विभासकों में पहिले आप हो विभात को कीजिये पहिले आप प्रकाशमान होते हो पीछे और आप तेजयुक्त पदार्थों के मध्य में आप आदित्य को उत्पादन करते हो आप से मानव हमारे अभिमुख होकर

प के ऊपर स्थित हैं यतिप्रवृद्ध एक असाधारणप्रसरल आप के बल से उ-
न्न होता है ॥

५—हे जन इन्द्र की कालात्मक शक्ति को देखो कि संपूर्ण युद्धादि के कर्त्ता
ग्राम में बहुतसे शत्रुवों के थोड़ीसी शक्ति करता है अर्थात् बुढ़ापादिकर
ारता है वह आज और कल्हिको समान देखता है वह महत्सामर्थसे युक्त है॥

६—अपनीशक्ति से अरुणवर्ण शोभनपर्ण वाला पची आता है जो बड़ा शूर
ुराण अनोढ़ है जो उसको जानता है वह सत्यपदार्थको जानता है वह व्यर्थ
नहीं वह सुद्दर्शीय धन का जीतने वाला और देनेवाला है वही इन्द्र है ॥

७—इन्द्र मरुत के साथ में कामना के वर्षने वाले बल को देता है जिन-
मरुत के साथ वृत्र के मारने के अर्थ वज्रवाण इन्द्र वर्षता है जो मरुत देवता
बड़े इन्द्र के साथ वृष्टिकर्म में सहायता के अर्थ आपही आते हैं ॥

८—वह इन्द्र वर्षादिकर्मों को मरुत के साथ में करता है व्याप्तबलवाला
रावर्णों का मारने वाला अत्यन्तमनस्वी जल्दीसे शत्रु को हराने वाला देव-
लोक से आकर सोम को पीकर वृद्धि को प्राप्तहोता है शूरहोकर आयुध से
शत्रुवों को हराता है ॥

इत्यन्वाकानि अशर्ष चतुर्दशं सूक्तम्

१—हे सतपुत्र यह ज्योति जो तुम्हारे देहमें सो बाहर की ज्योति में
ाश करें और प्राणवायु आप को दूसरी वायु में आप प्रवेश करें तीसरी
ोति आदित्यनाम से है उस में प्रवेश कीजिये आत्मा वही है उस सूर्य में
ेश करके आनन्द कीजिये उस परम जनक में देवतों को प्रीति है ॥

२—हे वाजिपुत्र आप के शरीर को यह पृथिवी लेती है यह पृथिवी
हमारे अर्थ धन को धारण करती है और आप को सुख देती है सो आप
ारण कीजिये बड़े देवतों में और द्युलोक में वर्त्तमान सूर्य में आप
प्रवेश कीजिये ॥

३—हे पुत्र सत्कर्मा और सत्स्तोत्र करनेवाले आपने जो पूर्वही स्तोत्र
किये हैं उनकरके देवतोंके पीछे आइये और जो पूर्वही धर्म आपने किया है
उन के द्वारा देवतोंने आइये मुख्य प्रयत्न के द्वारा इन्द्रादिदेवतों के बीचमें
आइये और आदित्य के बीच में आइये ॥

४—हमारे पितर अङ्गिरादि इनदेवतों के मण्डल से ईश्वरत्व को पातेभये वह देवरूपी पितर देवत्व को पाकर इन्द्रादिक देवतों के पूजन का संकल्प करतेभये जो तेजका दीप्यमान है वह सब इनदेवतों के शरीर में स्थित है सो हे पुत्र जैसे पितरों ने प्रवेश किया है वैसेही तुमभी करो ॥

५—देवपितर ने अपने बल से संपूर्णलोक में पूर्वस्थानको लिया जहां कि औरों को गम्य नहीं है संपूर्ण भुवन में घूमतेभये और बहुतप्रकार से उदक को हमें देतेभये ऐसाही पितरों के साथ में आपभी कीजिये ॥

६—आदित्य ने अपने लड़कों अंगिरादि को दो प्रकार का किया इन को बलवान् और स्वर्ग के पहुंचनेवाले किया यही तीसरे कर्मसे पितृभये अर्थात् ब्रह्मचर्य्य से ऋषि यज्ञ से देवता और प्रजोत्पादन से पितृ—पितर धन से अपने पुत्र को रक्षा करते हैं और पुत्र पौत्रादि से अवछिन्न प्रजा को रखते हैं ॥

७—जैसे नावसे मनुष्य जलको नांघता है वैसेहीं पृथिवी के संपूर्ण दुर्गको वचन के स्वस्ति से तरते हैं बृहत् उक्थ अग्नि ने अपने पुत्र को अपने नहत से अपने अवर में रक्खा—अब इसको सूर्य्य में लेजावें ॥

ऐक्ष्वाकअसमाति राजा की कथा

१-इस राजा के चार पुरोहित थे बन्धु सुबन्धु श्रुतबन्धु विप्रबन्धु उस राजाने इनको छोड़कर और मायावी ऋषियों को बुलाया तब-बंधादि क्रोध को करतेभये यह जानकर उन मायावियों ने सुबंधु का प्राण लिया तब बाकी तीनों ने अविनाश हेतु जप करतेभये और इसीकारण-इस सूक्तके ऋषिभये ॥

माप्रगमेति षड्ऋचं पञ्चदशं सूक्तं

१—हे इन्द्र हम गोपायन इस राजा के मार्ग से न जावें हम सोमिद इस असमाति के यज्ञ में नबैठें और हमारे मार्ग के मध्य में शत्रु नआवें ॥

२—यज्ञके देवतों करके विस्तत और साधनयोग्य तन्तुवर्त्तमानहै उसको वेदीके ऊपर बुलानेसे हम पावें ॥

३—हम बन्ध्वादि सुबन्धु को जल्दीसे बुलाते हैं नराशंससोम और पितृयों के स्तोत्रकरके ॥

४—हे सुबन्धु तुम्हारा मन फिर आवै-यधबल जीव सूर्य्यों को चिरकाल तक दर्शन करे॥

५—हमारे द्वियतन पितर फिर हम को मनदेवें हम जीव और देवतों का संघ मांगते हैं

६—हे सोमदेव आपके कर्म्ममें आपके यज्ञ में मन विराजमान है पुत्रपौत्रादि से युक्त हम को कीजिये॥

यत्तेयमिति द्वादशर्च षोडशं सूक्तं

सुबन्धु के इन्द्रियवर्गसहितमनका फिर देह में प्रवेश करनेके अर्थ इस सूक्त का पाठ है

१-हे मृतपुरुष आप का मन अत्यन्त दूरवाले विवस्वत के पुत्र यम के पास गया है उस मन को फिर इसलोक में चिरकाल रहनेके अर्थमें बुलाताहूं॥

२—हे सुबन्धु जोमन आकाश के विषे गया है जो पृथिवीके विषे गयाहै वा दूर गया है उस मन०॥

३—जोमन कि इस भूमि के विषे जिस का कि कुटाहुवा अङ्ग चारोंदिशा में जायगा उस मन को०॥

४—हे बन्धो जो आपका मन चारोंदिशा में दूरतक गयाहै उस मनको०॥

५—जो तेरा मन दूर समुद्र के अन्त में वा मेघ में गया है तौभी उस०॥

६—जो तेरामन दूरजानेवाले दीप्ति में गया है तौभी उस०॥

७—जो तेरामन जल में वा ओषधि में दूर गया है तौभी उस०॥

८—जो तेरामन सूर्य्य वा उषा में गया है तौभी उस दूरीसे उस मनको०॥

९—जो तेरामन बड़े पर्वतों में गया है उसदूरीसेभी उस मनको०॥

१०—जो तेरामन इस जगत विश्व के विषे गया है तौभी उस मनको०॥

११—जो तेरामन अत्यन्त दूरदेश में गया है तौभी उस मनको०॥

१२—जो तेरामन भूत या भव्य किसीभावमें वर्त्तमान होवे तौभी उस म०॥

प्रतारीति दशर्च सप्तदशं सूक्तं

१—सुबंधु को आयुर्नवयौवन से युक्त होकर वृद्धि को पाया यासकरने वाले रथके स्थाता के समान देह रथ में स्थित होकर वृद्धिको पाता है मृतरूप से आयु को पाकर बढ़तेहो और निर्ऋतिपापदेवता को दूरफेंकतेहो॥

२—स्तुतिपानेपर जीजायुक्त धनार्थ निधिमत् अन्न को तयार करते हो अर्थात् स्तुति और हवि दोनों ग्रहणकरतेहो उत्तम बहुप्रकार का हवि हम तयार करते हैं ॥

३—हम शत्रुवों को अपनेबल से हरावें आकाश जैसे भूमि को अपने किर्णों से पकड़ता है वा जैसे मेघ जल को वैसेही हमारे कियेहुये निर्ऋति को दूर करें ॥

४—हे सोम अच्छेमृत्यु के अर्थभी मनुष्यको मृत्यु के आधीन नकर उठतेहुये सूर्यको हम देखें अर्थात् बहुतकाल जीवें और दिनों कर के प्राप्त ऐसीजरा-वस्था हम को सुखदेवे

५—हे मनुष्यों के नेत्र हे देवि हमारे मन को फिर धारणकरो और हमारे जीवन को बढ़ावो और साधन करो और हमको सूर्यको बहुत दिन दिखावो और हमारे दियेहुये घीसे अपने शरीर को बढ़ावो ॥

६—हे असुनीति प्राण की देनेवाली देवि हमारे सुवन्धु को फिर नेत्रदो और फिर प्राण दो की हम बहुतकालतक उदयहुये सूर्य को देखें हे अनु-मतिदेवि हम को स्वस्ति का सुख दो ॥

७—पृथिवी देवी हमको प्राणदेवे दिवदेवता अन्तरिक्षदेवता सोमदेवता शरीर को देवें पूषादेवता वाचा को देवे और स्वस्ति को देवे ॥

८—द्यावापृथिवी की स्तुति सुवन्धु को सुख देवें महत् यज्ञ के माता पिता पाप को हरें हे द्यौः हे पृथिवी आप क्षमा करें और सुवन्धुके पापको हरें ॥

९—द्युलोक में अश्विन दि वा तीनि वाचा वर अकेली क्षमा रूपी भेषज देता है यहसब सुवंधु के प्राण को रक्षा करें जो पाप हैं उन को द्यु और पृ-थिवी नाश करें क्षमा नाश करे और सुवन्धु के पाप को हरें ॥

१०—हे इन्द्र हमको अच्छे चलनेवाले वैलदो उशीनराणी ओषधि संकट को हरें जो पाप हैं उन को द्यौ और पृथिवी नाश करें क्षमा सुवन्धु के पाप को नाश करें ॥

अजनमिति द्वादशर्चं अष्टादशं सूक्तम्

१—हम जनपद को गये जो बड़ी स्तुति को प्राप्त था और जिसका दर्शन दीप्ति से युक्त था और जहां राजा के नमस्कार को हमने ग्रहण किया ॥

अथ पञ्चम अनुवाक

—:०:—

इदमित्थेति सप्तविंशत्यृचं प्रथमं सूक्तम्

१—उदात्त वचन वाले नाभानेदिष्ठ ने यह रुद्र को आनन्दकरनेवाला स्तोत्र इसप्रकार से किया यज्ञमध्य के विषे जैसा इन के पितर ने और अन्य महत् पुरुषों ने किया है वैसेही यहभी आज के दिन अस्सीहोत्रियों के यज्ञको पूर्ण करते हैं ॥

२—वह पुरुष स्तोत्रियों को धनदेने के अर्थ यज्ञ के मारनेके अर्थ राक्षसों से बचाने के अर्थ वेदी के विषे बैठता है वेगचलनेवाला अत्यन्त उदात्त वचन कहने वाला रुद्र मेघकी समान सामर्थ्य को उत्पन्न करता है ॥

३—हे अश्विन् आप के मन के समान हवन में तीक्ष्ण जाने वाली स्तुति बुद्धि से चलने वाले अध्वर्यु के हविलक्षण धन को लेने वाले ऐसे आप के वर्ष में प्रवृत्त मैं अपनी अङ्गुलियों में रखकरके आप के अर्थ हवि देता हूं ।

४—कृष्णावर्ण रात्रि जब अरुण वरण उषा के साथ रथ में बैठती है तब उषःकाल में दीप्तिमान स्वर्ग के रहने वाले अश्विन को हम बुलाते हैं कि हमारे अन्न का स्वाद ले मेरी यज्ञ में आवें मेरी कामना को पूर्ण करें हमारे शीघ्र कोनाश करें ॥

(क) ५—जिस प्रजापति के वीरकर्म से रेत उत्पन्न भया और जिस रेत से वीर उत्पन्न भये उसी रेत को प्रजापतिने मनुष्यों को दिया है उसी रेत से स्वयं रुद्र उत्पन्न हैं जिस रेत को प्रजापति ने अपनी पुत्रियों को दिया एवं रुद्र को प्रजापति ने अपनी दुहिता को सौंपा ॥

अपनी इच्छासे कार्य के करनेवाले

६—पितर प्रजापति और उनकी दुहिता अन्तरिक्ष के मध्य में प्राप्तहोकर जिस कर्म को करतेभये उससे रेत उत्पन्न होताभया और वह दोनों अच्छादित स्थान यज्ञयोनि में जातेभये—(इससे रुद्रकी उत्पत्ति है) ॥

७—पिताप्रजापतिने जब अपनीदुहिताउषाको ग्रहणकिया तब पृथिवीके

साथ जाने वाले प्रजापति ने रोहितरूप होकर वीर्य को त्यक्त किया तब सु-कर्मा ब्रह्म उत्पन्न होनेवाले और ब्रह्मदेव ने व्रत के पालने वाले अन्न रस के रक्षकों को बनाया ॥

८—श्री व्रषभट्ट का रक्षक इन्द्र के समान नमुचि के वध के पश्च संग्राममें फेन को फेंकाता भया और इसप्रकार कराता भया-अल्पमन वाले जनलोगों से दक्षिणा देनेवाली गौओंके पद चलन नहीं जानेवाले हैं—ऐसी मेरी गौओं को रुद्र नहीं ग्रहण करता है ॥

९—रुद्र की वह्नि हमारे यज्ञ में राक्षसों को न आने देंगी वह वह्नि प्रजारूपी स्त्रियों की पीड़ा को हटाता है और रात्रि को भी अपने तेज से राक्षसों को अपने प्रजा के पास नहीं आने देता—इस प्रकार रुद्र से रक्षा पाकर प्रजा अग्नि को यज्ञ में उत्पन्न करती है उससे वह रुद्र हविको ग्रहण करता है—वह रुद्र यज्ञ का धारण करने वाला अथवा यज्ञ के खाने वाले राक्षसों से युद्ध करता है ॥

१०—नव मास तक यज्ञ करने वाले,जो जो अंगिरा नव्य के चाहने वाले हैं ऋति के उत्तम स्तुति के समीप जल्दी से पहुंचते भये—द्यावा पृथिवी से आच्छादित इन्द्र के समीप दक्षिणा रक्षित भी जो यजमान जाता है वह भी अक्षीण फल को पाता है ॥

११—वर्षा की दुग्ध देने वाली उत्तम गौओं से जल्दी नवीन अखिल को यजमान पाता है जो सत्य बोलता हैं वह यज्ञ की युक्ति को जानता है हे इन्द्र जो आप को धन से पूजन करता है वह अवर्दुधा उस्रिया गौ के रस को पाता है ॥

१२—जो स्तोता गण अपने गौ युक्त को त्याग को पोछे से जानता है उनसे यह कहते हैं कि स्तोता गण रममाण वसु में वसने वाले निपुणापी इन्द्र पापियों से चुराये हुए धन को शीघ्र फिर प्राप्त कराते ॥

१३—तब जल्दी से इन्द्र के इर्दगिर्द वर्तमान परिचारक किरणें प्रकाश के अर्थ जाती हैं वह इन्द्र नृपद के पुत्र को उराकर सुश्रुणान असुर को पुनर्प्रजात अप्रार्थित मर्म को जानता है ॥

१४—वह तेरा कि जिसका नाम अर्ग है बहुत पूजित है अग्निसम्बन्धी

देवता कुश के विषे उसीप्रकार से बैठते हैं जैसे स्वर्ग के विषे—वह जातवेद
अग्नि हमारे आवाहन को सुने हे अग्नि आप यज्ञ के होता हो आप द्रोह
रहित हो ॥

१५—हे इन्द्र ये दोनों प्रसिद्ध यहपन होतिमान् नासत्या अश्विन मेरी
स्तुति के अर्थ यज्ञ में आवें—मुझ को जो अपने पिता को यज्ञ में कुश पर
वैठाया आनन्द देवें और वह आनन्द देनेवाले प्रेरितधनवाले हमारे पुत्रोंको
यज्ञमें पूजनीय होवें ॥

१६—यह सब का विधाता राजा सोम सब से स्तुति को पाता है वह शि
जगत् बन्धक किरणों से अन्तरिक्ष को नांघता है वह सोम कक्षीवान् ऋषि को
पर्वत के मध्य में कंपाता है वह अग्नि हवि के लेजाने के लिये अयति होकर
जल में प्रवेश करता है जैसे वह शीघ्रगामी यज्ञ अश्व को कंपाता है वैसेही
वह सोम अग्नि को कंपाता है ॥

१७—वह दोनों लोक का बन्धु सब का विशेष करके तारने वाला हवि
दान देने वाला देवतों का याजक अग्नि ने अस्तसनान दुग्ध देनेवाली धेनुओं
जो दुग्ध नहीं देतीथी दुग्ध देनेवाली किया जो मित्रावरुण अर्जमन की
उत्तम स्तोत्रों से स्तुति करताहै उसको गौवोंको अग्नि दुग्धवाली करताहै।

१८—नाभानेदिष्ठ सूर्य का बन्धु स्तुति का प्रेरक यज्ञकर्म का करनेवाला
गौवों का मांगने वाला स्तुति करता है—वह आकाश हमारा और उस
सूर्य की नाभि है—मैं उस सूर्यसे सजन्य जनकका संबन्ध रखताहूं (सूर्य के
पुत्र मनु और मनुके पुत्र नाभानेदिष्ठ थे)

१९—वह द्यौ मेरी नाभि है—सूर्यमण्डल में मेरा स्थान है—यह दीप्त
मान किरणें मेरे देवता हैं—यह सूर्य मैं हूं—सूर्य के ब्रह्माण्डज हूं—ब्र
से प्रथम उत्पन्न यह वाक्रूपी धेनु है—जिससे यह सर्व जायमान दुग्
दुही गयी हैं ॥

२०—चारों दिशा में जाने वाला मोदमान दीप्यमान दोनों लोक में प्र
काठ का जलाने वाला अग्नि प्राप्त हो—जो सन्निधि अग्निकी श्रेणी के समान
लकड़ीके पशुको हराता है उस नियतअग्नि को सुख देनेवाली अरणीमाताने
उत्पन्न किया ॥

२१—अब इस थकेहुए उत्तम स्तुति के वचन इन्द्र को प्राप्त होवें हे सुध
वाले अग्नि आप सुनिये और मुझ मनु के पुत्र को स्तुति से वृद्धि दीजिये ॥

२२—हे वज्रदाता इन्द्र आप मुझ को बहुत धन देने के अर्थ जानि
हे हवि के पाने वाले इन्द्र आप हमारी शत्रु से रक्षा कीजिये हम स्तुति क
रने वालों की रक्षा कीजिये—हे हरिवइन्द्र आप के अभिगमन से हम पा
रहित होवें ॥

२३—हे मित्रावरुण अब यज्ञसमाप्ति में जो गौवों को ढूंढ़ने जाता है
यज्ञकर्म में स्तुति की इच्छा रखता है वह नाभानेदिष्ठ अब से प्रियतम
सो मैं उन अङ्गिरा के पीछे आपको पाऊं ॥

२४—उस जयशील पुष्टि के देने वाले वरुण से अनायास स्तुति करके ज
हम मांगते हैं—उस वरुण के पुत्र विप्राख्य जयशील होवें—और हे वरु
आप हमारे अन्नार्थ प्रवृत्त हूजिये ॥

२५—हे मित्रावरुण आप के तरह और बल के प्राप्ति के अर्थ हवि दे
वाला यजमान स्तुति करता है जिस मङ्गल के प्राप्त होनेपर इस संसार
यहाण अन्न आता है यह स्तुतिरूपी वचन आते जाते सुख देते हैं जैसे स
पूर्व से आवे और पश्चिम जाने में सुख देता है ॥

२६—यह वरुणदेवता जल का प्रकाश देनेवाला स्तुति पाये हुये शोभनज
वाला ऐसे नमस्कारयुक्त विनतीरूपी उत्तमवचन से इस स्थान के लिये आता
उसके अर्थ निश्चय करके गौवें दुग्धदेने के मार्ग की खोजती हैं अर्थात् अप
स्तनोंको दुग्ध से भरती हैं ॥

२७—हे यष्टव्यदेव आप बड़ी रक्षा के अर्थ पंक्ति को पार हो पा
मुझ को अन्न पहुंचाइये और जातेहुये हे देव आप हमारी गौओं
जाने रहिये ॥

जेयक्रेनेयेकादशर्चं द्वितीयं सूक्तम्

१—यजनीय हवि और रखिवाले हुए आप इन्द्र के पराक्रम और क
तम की प्राप्त होते हो हे अङ्गिरा आप के दक्षिणा पर्याप्त होवें हे इन्द्र
अङ्गिरा आप मुझ मनुपुत्र को प्रतिग्रहीत कीजिये ॥

२—हे अङ्गिरा पितर नवग्वसः धन को फिर पर्वत से पहुंचाते भये सत्यभूत वच से प्रतिसंवत्सर में वलअसुर को मारा और इन को दीर्घायुष दिया हे अङ्गिरा आप को० ॥

३—जो यज्ञकर्मी सूर्य पर चढ़े जो दिवलोक में है और मातर पृथिवी को प्रसिद्ध किया ऐसे अङ्गिरा आप सुपुत्र वाले हो हे अङ्गिरा० ॥

४—हे देवपुत्र अङ्गिरा ऋषि यह कल्याण रूपी वचन आप के यज्ञ में नाभानेदिष्ठ कहता है इन वचनों को आप बड़े आदर से सुनिये आप को सुब्रह्मण्यत्व प्राप्त होवे ॥

५—ऋषि नानारूप के हैं वे गम्भीर कर्म वाले अङ्गिरा के पुत्र हैं वे सब अग्नि से उत्पन्न हुये हैं ॥

६—विविधरूपी अङ्गिरा दिवलोक से तेजयुक्त अग्नि से उत्पन्न भये उन में नवग्व और दशग्व सब से श्रेष्ठ भये वह अग्नि देवतों के साथ में स्थित धन को धन देवे ॥

७—इन्द्र की सहायता से गोयुक्त अश्वयुक्त पणि से अविरुद्ध हजारों धन प्राप्त होते भये और हृष्ट पुष्ट गौवें प्राप्त होती भयीं और इन्द्रादि देवता को कीर्त्ति प्राप्त होती भयी ॥

८—सावर्णिमनु प्रजावान् हुए जैसे जलयुक्त बीज उगता है वैसेही मनुपुत्रादि अपने कर्म के फल को उगापावें कि वह मनु हजारों घोड़े और गौवें दान के अर्थ ऋषियों को दें ॥

९—उस सावर्णि मनु को कोई नहीं दान में पाता है जैसे दिव लोक में तेज से युक्त आदित्य स्थित है वैसेही वह सावर्णि मनु है उस सावर्णिमनु का दक्षिणा सिन्धु नदी के समान बहता है ॥

१०—और हमारे कल्याण देने वाली गौवों से युक्त उत्तम अधिदाता यदु और तुर्वसु उस सावर्णि के अर्थ पशुवों को देता भया ॥

११—हजारों गौवों का दाता ग्रामों का स्वामी ऐसे मनु को कोई कष्ट न देवे उस का दियाहुआ दक्षिणा सूर्य के साथ में जाता है अर्थात् तीनों लोक में प्रसिद्ध है और देवता उस की आयु को बढ़ाते हैं कामजसी सब काम को करने वाले हम उस मनु के अन्न को सेवन करें ॥

परादनाया इति समदशर्च तृतीयं सूक्तम्

१—जो देवता दूरदेश से आकर मनुष्य के साथ में सख्य धारण करते हैं मनुष्य से आनन्द पाधिक्य देवता विवस्वत के पुत्र मनु के पुत्रों को धारण करते हैं जो देवता नहुष के पुत्र ययाति ऋषि के यज्ञ में बैठते हैं यह देवता धनदान हम को अधिक दें ॥

२—हे देवता आप के नमनीय दिव्य शरीर को नमस्कार और वन्दना है आप के वह शरीर यज्ञ योग्य होवें और जो द्यु अन्तरिक्ष से और पृथिवी से उत्पन्न भये हैं वह हमारी इस यज्ञ में आकर हमारे हवन को सुनें ॥

३—जिन के अर्थ पृथिवी माता मधुयुक्त पय देती है और मेघ से युक्त आकाश जो पियूष देता है अति बलवाले उग्रभ रखाने वाले दृढ़िके खींचनेवाले अपने कर्मों से युक्त ऐसे आदित्य देवतों को अविनाशार्थ स्तुति कीजिये ॥

४—मनुष्यों के देखने वाले हिंसा के न करने वाले लोक के सेवा योग्य देवता उद्धत् अमरण धर्म को प्राप्त करतेभये ज्योति रथ वाले अहन्तव्य पापरहित आदित्य ने नाभिस्थान में अविनाश को धारण किया ॥

५—अत्यन्त प्रकाशमान अच्छी वृद्धि को प्राप्त देवता यज्ञ को आते हैं यह अहिंसित देवता द्युलोक में वास रखते हैं उत्तम स्तुति और हविरूप अन्न पाने से अदिती और उस के पुत्र आदित्य स्वस्त्यर्थ हैं ॥

६—हे देवता आप का कौन स्तोता है और कौन सा मंत्र है और हे विश्व देवता मेरी सेवा को छोड़कर किसकी सेवा को आप स्वहृष करते हो हे भ्राता आप का कौन सा सखा आप के अर्थ कौन यज्ञ को अलंकृत करता है आप अविनाशी के सेवाय पापरूप मार्ग से कौन पार लगाता है ॥

७—प्रज्वलित अग्निको वैवस्वत मनुनें सबवस्तोंके पहिले यज्ञमें हविको दिया मन में सातो होतयों को धारण करके वह आदित्य हम अग्निको सुख देवे और हमारे अर्थ शोभन वैदिक मार्ग को सुगम करे ॥

८—सब के जानने वाले देवता संपूर्ण स्थावर जंगम भुवनके ईश हैं-हमारे कायिक और मानसिक पाप से आज के दिन हम को छोड़ावे और आयु की वृद्धि के अर्थ स्वस्ति दे ॥

२—हे अङ्गिरा पितर सबालक धन को फिर पर्वत से पहुँचाते भये बद भूत यज्ञ से प्रतिवत्सर में बलवत्सर को मारा और हम को दीर्घायु दिया हे अङ्गिरा आप को० ॥

३—जो यज्ञकरके सूर्यपर चढ़े जो दिवलोकमें है और मातर पृथिवीको प्रसिद्ध किया ऐसे अङ्गिरा आप उत्पन्न वालों को हे अङ्गिरा० ॥

४—हे देवपुत्र अङ्गिरा ऋषि यह कल्याण रूपी वचन आप के यज्ञ में नाभानेदिष्ठ कहता है इन वचनों को आप बड़े आदर से सुनिये आप को सुब्रह्मण्यत्व प्राप्त होवे ॥

५—ऋषि नानारूप के हैं वे गम्भीर कर्मा वाले अङ्गिरा के पुत्र हैं वे अग्नि से उत्पन्न हुये हैं ॥

६—विविधरूपी अङ्गिरा दिवलोक से तेजयुक्त अग्नि से उत्पन्न भये उनमें नवग्व और दशग्व सब से श्रेष्ठ भये वह अग्नि देवतों के साथ में स्थित हमको धन देवे ॥

७—इन्द्र की सहायता से गोयुक्त अश्वयुक्त पणि से अविरुद्ध हजारों व्रज प्राप्त होते भये और हृष्ट पुष्ट गौवें प्राप्त होती भयीं और इन्द्रादि देवता से कीर्त्ति प्राप्त होती भयी ॥

८—सावर्णिमनु प्रजावान् हुए जैसे जलयुक्त बीज उगता है वैसेही मनु पुत्रादि अपने कर्म्म के फल को उगावें कि वह मनु हजारों घोड़े और गौवें दान को अर्थ ऋषियों को दें ॥

९—उस सावर्णि मनु को कोई नहीं दान में पाता है जैसे दिव लोक में तेज से युक्त आदित्य स्थित है वैसेही वह सावर्णि मनु है उस सावर्णि का दक्षिणा सिन्धु नदी के समान बहता है ॥

१०—और हमारे कल्याण देने वाली गौवों से युक्त उत्तम अधिष्ठाता यदु और तुर्वसु उस सावर्णि के अर्थ पशुओं को देता भया ॥

११—हजारों गौवों का दाता ग्रामों का स्वामी ऐसे मनु को कोई कद न देवे उस का दियाहुवा दक्षिणा सूर्य के साथ में ० ... अर्थात् तीनों लोक में प्रसिद्ध है और देवता उस की य... ब दाक को करने वाले हम उस मनु को अन्न को

९—युद्ध के विषे पाप मोचक शोभन आवाहन वाले सुकृत दिव्य इन्द्र को मैं बोलाता हूं और स्वस्ति और धन लाभार्थ अग्नि मित्र वरुण भग द्यावा-पृथिवी और मरुत को बुलाता हूं ॥

१०—अच्छे प्रकार रक्षा देने वाली विस्तृत पाप रहित शोभन सुख युक्त पुष्टपुण अदिती देवी आकाश में पाप रहित चलने वाली अविनाशी नावके समान अपने स्थित द्वारा अविनाश के अर्थ हमको चढ़ावे ॥

११—हे यजनीय विश्वदेवता आप को रक्षा के अर्थ हम बुलाते हैं और आकर दुर्गति से हमारी रक्षा करो-हे देवता हमारे स्तोत्रों के सुनने वाले यथार्थ देवहूती स्तुति से हम आप को रक्षा और स्वस्ति अर्थ बुलाते हैं॥

१२—हे देवता रोग और रोगबाधक शत्रु को हम से दूर कीजिए और संपूर्ण अनाहुति की और लोभ बुद्धि को और हविके नदेनेवाले शत्रुको हमसे दूर कीजिए और संपूर्ण शत्रुवों को हम से दूर कीजिए और कल्याणार्थ सुख दीजिए ॥

१३—हे देवता वह मनुष्य अहिंसित होकर पश्वादि की वृद्धि देता है और पुत्रादि को उत्पन्न करता है हे आदित्य देवता जो मनुष्य दुर्नीति है संपूर्ण दुरित कर्म को दूर करता है उसको स्वस्ति दो ॥

१४—हे देवता हवि लाभके अर्थ जिसकी आप रक्षा करते हो-हे संग्राम-शूर मरुत जिस यज्ञ में दिएहुए धन के निमित्त प्रातःकाल में आप रथ को हे-जाति हो उस की रक्षा करो हे इन्द्र संभजनीय अहिंसित मरुत हे अबाधक रथ पर स्वस्ति अर्थ हम को चढ़ावो ॥

१५—हे मरुत देवता हमारे देश में पथ्य उदक युक्त कल्याण को दोऔर निरुदक देश को उदकलक्षण वाला करो और हमारे जल औरदैन्य का कल्याण करो और हमारी स्त्रियों की और धन की रक्षा करो ॥

१६—जो पृथिवी की प्रकृष्ट मार्ग से क्षेम कारिणी होती है और जो वन-नीय यज्ञ को पाती है वह पृथिवी हमारे गृह की रक्षा करे वही हमारी वनमें रक्षाकरे वह देवतोंसे पालीहुयी पृथिवी हमारेशोभन निवासवालीहोवे ॥

पाते हैं असुरों के मारने वाले इन्द्र सम्बन्धी मरुत गण उत्तम स्तोत्र को करते हैं अथ यजमान उन के निमित्त यज्ञ को करते हैं ॥

३—वसुओं के साथ इन्द्र हमारे यज्ञ को प्राप्त होवें और आदित्यों के साथ में अदिति हम को सुख देवें और मरुत के साथ में रुद्रदेवता आनन्द को देवें और त्वष्टा देवता देव पत्नी के साथ हमारे उदय अर्थ प्रसन्न होवें ॥

४—अदिति द्यावापृथिवी सत्यभूत अग्नि इन्द्र विष्णु मरुत वृहत् आदित्य यज्ञमय देवता अपनी महिमा से वर्त्तमान हैं सुकर्म्मा सविता ऋषि के रक्षार्थ हम आप को बुलाते हैं ॥

५—बुद्धि से युक्त सरस्वान् धृत व्रत वरुण पूषा विष्णु मरुत युक्त वायु अश्विन् कर्म्म करने वाले अमृत संपूर्ण देवता त्रिवरूत सुख को हमें दो और हमारे पाप का नाश करो ॥

६—हमारे कामना के देनेवाले यथार्थ देवता होवें और यज्ञ कामना की देनेवाली होवे और ऋत्विज कामना के देने वाले होवें और हवि के बनाने वाले अध्वर्य्वादि कामना के देने वाले होवें यज्ञवती द्यावा पृथिवी हवि के उत्पादक होवें पर्जन्य इन्द्र जल के बर्षाने वाले होवें वर्षणशील स्तुतियों से देवता स्तुति को पाकर ऋत्विजों को उत्तम फल देते हैं ॥

७—कामना के देने वाले स्तुति को प्राप्त अन्न लाभ के अर्थ अग्नि सोमकी हम स्तुति करते हैं यह दोनों देवता देवयज्ञ में पूजन पाते हैं यह दोनों हम को त्रिवरूथ सुख देवें ॥

८—धृत कर्म्म वाले अपने यज्ञ के करने वाले बड़े तेज वाले राक्षसों से अहिंसित यज्ञ के सेवक अग्नि के होता सत्य के पालक प्रत्यक्ष कर्म्म के करने-वाले इन्द्र देवता वृत्र शत्रु को मारकर हम को जल देवें ॥

९—इन्द्रादि देवता अपने कर्म्म से द्यावापृथिवी को जानकर उदक ओषधि यज्ञ योग्य उत्तम बनों को उत्पन्न करते भये वह संपूर्ण अन्तरिक्ष को अपने तेज से भरते भये शत्रु के वध के अर्थ उस यज्ञ के अर्थ और हमारी रक्षा के-अर्थ हे देवता आपने उत्तम जल को बनाया ॥

१०—द्यु के धारण करने वाले ऋभव सत्य करके प्रकाशमान अच्छे हस्त-वाले बड़े शब्द वाले पर्जन्य वायु हमारे जल और ओषधि की वृद्धि कीजिये

अदिति और आदित्यों को मैं बुलाता हूं और उनको जो पृथिवी आकाश और जलसे उत्पन्न हैं ॥

१०—हे अश्मन जो सोम कि कल्याण के अर्थ प्राप्त होता है वह शत्रुके मारने वाले बृहस्पतिइन्द्र को पाता है उस सोम से धन को हम याचना करते हैं।

११—अश्व अन्न से प्रजा गौ अन्न औषधि वनस्पति पृथिवी पर्वत और उदक वृष्टि को पाता है द्युलोक में आदित्य उत्पन्न होते हैं शोभन दान वाले देवता पृथिवी पर कल्याण रूपी कर्मों को फैलाते हैं उनसे हम घर मांगते हैं ॥

१२—हे अश्विन आपने उपद्रव कारी समुद्रसे भुज्यु तुग्रपुत्रकी रक्षाकी और श्यावपुत्र को हिरण्य हस्त और कामद्रोविनी वनपुत्री को विमदा ऋषि को दिया और विश्वकाय को उनके नष्ट पुत्र को फिरलाकर दिया ॥

१३—आयुधवती विस्तीर्ण द्युलोक को धारण करने वाली अकेली रहने वाली देवी सिंधु अन्तरिक्ष के जलसे उत्पन्न संपूर्ण देवतों को कर्मों में लगाने वाली अनेक प्रकार बुद्धि के सहित मेरे वचनों को सुनिये ॥

१४—अच्छे कर्मों के साथ प्रधान युक्त मनुष्य के यज्ञ में पूजन पाये हुये स्वर्ग के धारण धर्म से रक्षित यज्ञ के जानने वाले हविके सेवन करने वाले हमारी स्तुतिको सुनिये और हमारे तुष्टस्तोम को जो मंत्र के जानने वाले साथ दिया जाताहै सेवन कीजिये ॥

१५—मैं वशिष्ठ कुल में उत्पन्न देवतों की वन्दना करता हूं जो देवता विश्व लोक को अपने तेजसे प्रकाश को देते हैं वही देवता आज के दिन उत्तम अन्न को देवें हे देवता आप अपनी उत्तम स्वस्ति से हमारी सर्वदा रक्षा कीजिये ॥

देवानूजव इति पञ्चदशर्चंषष्टं सूक्तम्

१—बहुत अन्न देने वाले तेजके करने वाले प्रकट ज्ञान वाले देवतों को इस यज्ञ मेंस्वस्ति अर्थ मैं बुलाताहूं वह ज्येष्ठ अमृत देवता इन्द्रयज्ञ में हवि पानेवाला है ॥

२—इन्द्र से प्रेरित वरुण से अनुमोदित सूर्य की ज्योति वाले मरुत् भागको

पाते हैं शत्रुओं के मारने वाले इन्द्र सम्बन्धी मरुत गण उत्तम स्तोत्र को करते हैं अथ यजमान उन के निमित्त यज्ञ को करते हैं ॥

३—वसुओं के साथ इन्द्र हमारे यज्ञ को प्राप्त होवें और आदित्यों के साथ में अदिति हम को सुख देवें और मरुत के साथ में रुद्र देवता आनन्द को देवें और त्वष्टा देवता देव पत्नी के साथ हमारे हृदय अर्थ प्रसन्न होवें ॥

४—अदिति द्यावापृथिवी सत्यभूत अग्नि इन्द्र विष्णु मरुत बृहत् आदित्य वसुसब देवता अपनी महिमा से वर्त्तमान हैं सुकर्म्मा सविता ऋषि के रक्षार्थ हम आप को बुलाते हैं ॥

५—बुद्धि से युक्त सरस्वान् धृत व्रत वरुण पूषा विष्णु मरुत युक्त वायु अश्विन् कर्म्म करने वाले अमृत संपूर्ण देवता त्रिवरूत सुख को हमें दो और हमारे पाप का नाश करो ॥

६—हमारे कामना के देनेवाले यज्ञार्ह देवता होवें और यज्ञ कामना की देनेवाली होवे और ऋत्विज कामना के देने वाले होवें और हवि के बनाने वाले अध्वर्य्वादि कामना के देने वाले होवें यज्ञवती द्यावा पृथिवी हवि के उत्पादक होवें पर्जन्य इन्द्र जल के वर्षाने वाले होवें वर्षणशील स्तुतियों से देवता स्तुति को पाकर ऋत्विजों को उत्तम फल देते हैं ॥

७—कामना के देने वाले स्तुति को प्राप्त अन्न लाभ के अर्थ अग्नि सोम की हम स्तुति करते हैं यह दोनों देवता देवयज्ञ में पूजन पाते हैं यह दोनों हम को त्रिवरूथ सुख देवें ॥

८—धृत कर्म्म वाले चारो यज्ञ के करने वाले बड़े तेज वाले राक्षसों से अहिंसित यज्ञ के सेवक अग्नि के होता सत्य के पालक अद्रुह कर्म्म के करने-वाले इन्द्र देवता वृत्र शत्रु को मारकर हम को जल देवें ॥

९—इन्द्रादि देवता अपने कर्म्म से द्यावापृथिवी को जानकर उदक ओषधि यज्ञ योग्य उत्तम वनों को उत्पन्न करते भये वह संपूर्ण अन्तरिक्ष को अपने तेज से भरते भये शत्रु के वध के अर्थ उस यज्ञ के अर्थ और हमारी रक्षा के अर्थ हे देवता आपने उत्तम जल को बनाया ॥

१०—द्यु के धारण करने वाले ऋभव सत्य करके प्रकाशमान अच्छे हस्त-वाले बड़े शब्द वाले पर्जन्य वायु हमारे जल और ओषधि को वृद्धि दीजिये

धन को देने वाला अर्यमा और अग्नि वायु सूर्य को मैं बुलाता हूं मेरे पास आवें॥

११—समुद्र सिन्धु अन्तरिक्ष रज लोक एवं रज से उत्पन्न है-विस्तृत मेघ अन्तरिक्ष में उत्पन्न होता है सो हे सब विश्व देवता मेरे वचनों को सुनो॥

१२—हे देवता हम मनुष्य आप के यश में लगें और हमारी यश को आप कल्याण कारी कीजिये हे आदित्य हे रुद्र हे वसव उत्तम दान वाले देवता इन मेरे यज्ञ स्तोत्रों को ग्रहण कीजिये॥

१३—मैं हवि को मुख्य पुरोहित देव सम्बन्धी होता, अग्नि, आदित्य को देता हूं और यश के मार्ग को दूढ़ता हूं और समीप वर्ती क्षेत्रपति के पूजन करता हूं और मरण रहित अप्रमादि देवतों से धन मांगता हूं॥

१४—वशिष्ठके पुत्र अपने पिता के समान स्वस्ति अर्थ वचनों को कहिते हैं और हेदेवता आप हमारी अभिलाषा को पाकर गवादि लक्षण धन से हमको युक्त कीजिये जैसे आनन्द युक्त वान्धव स्वजन को धन देता है वैसेही आप स्तुति से हमारे वान्धव होकर धन दीजिये॥

१५—पूर्ववृत्त व्याख्याता॥

इमांधियमिति द्वादशर्चं सप्तमं सूक्तम्

१—हमारे पिताअङ्गिराने इस सातशिर वाले यशसे उत्पन्न कर्मको जाना और मेघ को उत्पन्न किया और संपूर्ण जन के हित कारी अंगास्य स्तुति से इन्द्र की स्तुति की॥

२—यश की प्रशंसा करने वाले कल्याण कर्म के ध्यान करने वाले दीप्त असुर के जानने वाले वीर द्यु पुत्र अङ्गिरा के लड़के विशपद को धारण किये प्रथम धाम की स्तुति करते हैं॥

३—हंस के समान मधुर वचन वाले सखिभूत शब्दायमान मरुत के साथ अन्धकार से ग्रथित गौवों के बांधने के स्थान शिथिल करके इन्द्रने बहुत शब्द करके गौवों की स्तुति की और यज्ञकर्म में लगेहुये विद्वान् ने उसको जाना॥

४—नीचे गुहा में स्थित और पर स्थान में स्थित गौवें एक स्थान में जाती हैं वृहस्पति उस अन्धकार में ज्योति करने की इच्छा से उसमें स्थित होता है उस गौ को फिर लाते भये असुरों के तीनों द्वारों को खोलकर॥

५—वह वृहस्पति उपशयन में स्थित होकर पूर्व मुख की असुर बल की

तोड़कर मेघरूपी असुरों के साथ उषा सूर्य और गौ इन तीनों को निकालते भये और वह वृहस्पति इन्द्र अर्चनीय मित्र को जानते भये ॥

६—इन्द्र दुग्ध देनेवाली गौके छिपाने वाले वलको करमें स्थित आयुधसे शब्द के साथ मारा खेदाजय मरुत के साथको इच्छा करके वह पणि असुर का नाश करता भया ॥

७—वह वृहस्पति सत्य अखिभूत दीप्यमान धन से युक्त मरुत के साथ इस गोधन वाले वल को तोड़ता भया और वह ब्रह्मणस्पति इन्द्र वृषभ के साथ में वर्षीय खेद से युक्त मरुत की सहायता से युक्त फिर गो धन को पाता भया ॥

८—पणियों से चोराईहुयी पशुवों को फेरलानेवाले सत्यमनयुक्त अपने कर्मो से वृहस्पति को गौवों का स्वामी बनाया वह वृहस्पति अवद्य मरुत के साथ में उस्रिया गौ को पर्वत से निकालके लातेभये ॥

९—देवतों के स्थान अन्तरिक्ष में सिंह के समान शब्द करनेवाले कामना के देनेवाले जयघोष वृहस्पति मरुतके साथ में शूरों को संग्राम में संभजनीय कल्याणरूपी स्तुति से आनन्द को पाता भया ॥

१०—वह वृहस्पति जिस काल में नाना रूप अन्न को ग्रहण करता है और द्युलोक को जाता है जो उत्तर स्थान में है तब कामना के देने वाले वृहस्पति को देवता वृद्धि देते हैं और हर दिशा में ज्योति के धारण करनेवाले देवता प्रार्थना को करते हैं ॥

११—हे वृहस्पति देवता धन अर्थ जो हमारी स्तुति है उसको सत्य कीजिये और अपने गमन से शुभ स्तुति करने वाले की रक्षा कीजिये जब संपूर्ण हिंसकों का नाश होजावे तब हे रोदसी सब के आनन्द देने वाली आप हमारे वचनों को सुनिये ॥

१२—महत्व युक्त इन्द्रने उदक से भरेहुये मेघके शिर को तोड़ा अर्णतय जल के आवरक शत्रु को मारा और सात नदियां बहायी हैं द्यावा पृथिवी देवतों के साथ में आप हमारी रक्षा कीजिये ॥

उदप्रुत इति द्वादशर्चं अष्टमं सूक्तम्

१—उदक के पाने वाले रक्षा युक्त पक्षी जैसे शब्द को करते हैं या जैसे

भ्रम से समुद्र शब्द को करते हैं या जैसे मेघ से गिरा हुआ जल नदियों में शब्द को करता है वैसेही स्तुति करने वाले जन आनन्द से बृहस्पति की स्तुति करते हैं ॥

२—अङ्गिरा के पुत्र अपने तेज से,भग के समान स्थित अर्यमण को अपनी स्तुति करता है जैसे मित्र जन पद में अपनी किर्णों को संयोजित करता है वैसेही दम्पती अपनी सामर्थ्य को स्थापित करता है हे बृहस्पति अपनी रश्मियों को स्तोत्रियों में पहुंचावो जैसे संग्राम में योद्धा पहुंचता है ॥

३—कल्याण मय को देने वाली सर्वदा चलने वाली स्पृहणीय वर्ण से युक्त प्रशस्य रूप गौवों को बलसम्बन्धी पर्वतों से वह बृहस्पति प्राप्त करता है जैसे जव मंदाजन से गिरता है वैसेही यह गौवें मेघ से आकार सब जगह वर्षती हैं ॥

४—बृहस्पति इन्द्र मेघ को बिथराकर उदक से पृथिवी को सींचता है वह अर्चनीय बृहस्पति द्यु लोक से जैसे उल्का को उठाता है वैसेही पथि से चुराईहुई गौवों को निकालता है जैसे वृष्टि से भूमि खुदि जाती है वैसेही उन गौवों के चलने से खुदती भयी ॥

५—वह बृहस्पति ज्योति से अन्तरिक्ष तममें छिपीहुयी गौवों को जाता भया जैसे उदक से वायु शैवाल को जाती है वैसेही जहांपर कि वलने गौवों को छिपाया था उसके भीतर जाता भया ॥

६—जब वल हिंसक को अशुध से मारता भया अग्नि के समान तपनशील किर्णों से वल असुर को वह भक्षण करता भया उसी प्रकार से जैसे दन्त में लगेहुए भक्ष्य वस्तु को जिह्वा भक्षण करती है ॥

७—बृहस्पतिने गुहा स्थान में शब्द करने वाली गौवों को जाना तब पर्वत में स्थित गौवों को अकेले प्राप्ति किया जैसे अण्डे में स्थित पक्षी अण्डे को फोरकर निकलता है ॥

८—बृहस्पति अपने व्याप्तशील शीलरक्षण मधु को देखताभया जैसे उदक में वसीहुयी मछली उदक घटने पर देखपड़ती है उस शीलरक्षण मधु को शब्दसे मारकर पर्वत से चमसा को प्राप्त किया जैसे वृक्ष से फल को हरते हैं वैसेही उस सोम पात्र को लेजाता भया ॥

९—उस बृहस्पतिने उस पर्वत में गौवों के दर्शन अर्थ उषा को प्राप्त किया

और आदित्य को और अग्नि की अर्चनीय तेज से तम को बांधता भया और वल के पर्वतों से गौवों को निकालता भया ॥

१०—जैसे हिम से पद्मपत्र बन्द होते हैं वैसेही वलने गोधन को चुराया और बृहस्पति इन्द्र उन गौवों को फिर लाये और उसी कर्म को फिर किया और सूर्य चन्द्रमा को एक में उच्चारण कराया ॥

११—पितर देवता द्यु लोक में नक्षत्रोंकेसाथ दीप्तमान भये—जैसे श्याम-वर्ण घोड़े को आभरण से अलंकृतकरतेहैं वैसेही रात्रि में तम को ज्योति से अलंकृत किया और उस ज्योतिसे स्थित गौवोंको बृहस्पतिनेजाना और राक्ष-स को मारा ॥

१२—अन्तरिक्ष के मध्य में स्थित बृहस्पति को यह स्तोत्र में सुनाता हूं जो बृहस्पतिजी अश्व और वीर पुत्र युक्त अन्न हम स्तुति करने वाले को देवे ॥

इति पञ्चम अनुवाक ॥

अथ षष्टम अनुवाक

भद्राइति द्वादशर्चं प्रथमं सूक्तं

१—अग्नि के गुण भजनीय होवें मेरे पिता वध्र्यश्व को यह अग्नि कल्याण कारी होवे इस की प्रणीति कल्याणकारी होवे और यज्ञ में शोभन रमणवाला यह होवे और सुमित्र प्रजा पहिले अग्निको हवि से पूजन करें घृत हवि से आहुति देकर बहुत प्रकाशमान अग्नि की मैं स्तुति करता हूं ॥

२—वध्र्यश्व सम्बन्धी अग्नि को हवि दीजावे वह अन्न खाने योग्य होवे और उस अग्नि का घृत पुष्टिकारक होवे इस घृत से आहुति पायाहुवा अग्नि अपने तेज से अत्यन्त प्रकाशकोपावे और अभिखाया हुवा अग्निसूर्य के समान प्रकाशै ॥

३—हे अग्नि पाप को जो फौज है उसको मनु नाम ऋषि संदिग्ध करताहै सुमित्र नाम मैं पाप को दीप्यमान करता हूं जो यह दक्षिणैन्य वायु का

प्राप्त होवे आप धनको दीजिये और आप जैसे ज्वालाको ग्रहण करते हैं वैसेही हमारी स्तुति कोभी ग्रहण कीजिये और शत्रुदल का नाश कीजिये और मुझको अन्न दीजिये ॥

४—वध्र्यश्व पिताने पूर्वकाल में आप को हवि से दीप्तमान किया सो आप मेरी कियीहुयी स्तुति को ग्रहण कीजिये सोआप गृह के रक्षक हूजिये आप हमारी यज्ञ के रक्षक हूजिये और देह के रक्षक हूजिये और आप का धन हम को प्राप्त होवे ॥

५—हे वाध्र्यश्व अग्नि आप प्रकाशमान अन्न हूजिये और उसके रक्षक हूजिये आप को कोई हिंसा न पहुंचावे और शत्रुवों के हराने वाले आप रहिये शूर के समान शत्रुवों के मारने वाले हूजिये और उन के नाश करता हूजिये आप का नाम मैं सुमित्रऋषि लेताहूं ॥

६—हे अग्नि जन और वसु आप को प्राप्त हैं शत्रुराक्षस कृत उपद्रव को नाश करते हैं शूर के समान शत्रुवों के हराने वाले शत्रुवों के मारने वाले संग्राम कामियों को हे अग्नि हराइये ॥

७—यज्ञतन्तु के फैलाने वाले बहुत रश्मि से युक्त बहुप्रकार से बुलाईहुयी मण्डल को प्राप्त दीप्तमान यज्ञ के मध्य में प्रकाशमान अग्नि हविरूप से आच्छादित ऋत्विजों के साथ में अलंकृत हूजिये सो आप हम कामना करने वाले सुमित्र के पुत्रों की कामना दीजिये ॥

८—हे जातवेद अग्नि आप की अच्छेदुग्ध देनेवाली धेनु है सङ्ग वर्जित चलने वाली अमृत देने वाली धेनु आप की है ऐसे आप कर्म्म के नेता दक्षिणा युक्त ऋत्विज और देवकामी सुमित्र से पूजन पातेहो ॥

९—हे जातवेद वाध्र्यश्व अग्नि आप की महिमा देवता गाते हैं मनुष्य-सम्बन्धी प्रजा देवतों के साथ प्राप्त करके आप को सर्व विघ्न के जीतने वाले कहते हैं ॥

१०—हे अग्नि आप को पृथिवी पर पूजते हैं आप को मेरे पितानें पुत्रके समान पूजन किया हे यविष्ट अग्नि उस वध्र्यश्व पिताके वचन को सुनिये और शत्रुवों को मारिये ॥

११—सो अग्नि ऋत्विजों से अभिपुत सोम द्वारा सर्वदा शत्रुवों को जीतता

रहा है हे चित्रभानु संग्राम को आप अपने नाम से चलाइये आप का स्तोता वध्र्यश्व वृद्धि को प्राप्त होवे ॥

१२—शत्रु के मारने वाला अग्नि चिरकाल से वध्र्यश्व के हवि से दीप्तमान और उसके नमस्कार से युक्त है—हे वाध्र्यश्व अग्नि हमारे शत्रुओं को हराइये ॥

इमांमं इत्येकादशर्चं द्वितीयं सूक्तम्

१—हे अग्नि इस उत्तर वेदीपर मेरी दीहुई हवि को सेवन कीजिये और घृत से भरेहुये स्रुवा की कामना कीजिये हे सुक्रतु पूर्वोक्त देश में यज्ञ के दिन ज्वाला से उन्नत हूजिये ॥

२—देवतों के अग्र जाने वाले नराशंस अग्नि नाना रूप घोड़ों के साथ इस यज्ञ में आवें वन्दित स्तुति योग्य देवतों में मुख्य अग्नि यज्ञ के मार्ग से और स्तोत्र से इन्द्रादि को हवि पहुंचावें ॥

३—हवि देनेवाले मनुष्य इतकर्म के अर्थ श्रेष्ठ अग्नि की स्तुति करते हैं सोआप उत्तम अश्व से युक्त रथ पर इन्द्रादि देवताको हमारी यज्ञमें पहुं-चाइये और होता होकर इस यज्ञ में बैठिये ॥

४—हे बर्हि नामक अग्नि देवतों से सेवित यहां टेढ़े कुशा बहुत विस्तृत होवें और यह द्राघिष्ठा कुश दीर्घता को पाकर सुगन्धित होवें हे द्योतमान कुश अक्रुध्यत मन से हवि की कामना करने वाले इन्द्रादि देवतों का पूजन कीजिये ॥

५—हे द्वारदेवी आप दिव या दिव से उत्तर स्थान में उन्नत हूजिये पृ-थिवी की जो मात्रा है उतनाही आप विस्तृत हूजिये आप द्योतमान रथ को बड़े देवतों से युक्त अपने महत्त्व से चलाइये ॥

६—यह भ्राजमान दिवलोक की दुहिता शोभन रूप वाली अहोरात्री यज्ञस्थान के लिये बैठने वाली है उषतो शोभन धन वाली आप विस्तीर्ण समीप स्थान में हवि के कामना करने वाले देवता आप को बिठलावें ॥

७—जब सोम के अर्थ पाषाण को उठाते हैं और बड़ी अग्नि को प्रज्व-

लित करते हैं तब देवतों के धाम को प्रिय करते हैं पृथिवी पर स्थित यज्ञ-पात्रों में हे दिव्य होता पुरोहित ज्वलित अग्नि धन दीजिये ॥

८—हे तीनो देवी इस उत्तम कुश पर बैठिये और अपने अर्थ इसको विस्तीर्ण कीजिये मनु की यज्ञ में हवि को सेवन कीजिये इड़ा देवी दीप्तपद वाली भारती अच्छी निहित वस्तु को हमारी यज्ञ में सेवन कीजिये ॥

९—हे त्वष्टा देवता हविसे कल्याण रूप को आपने प्राप्त किया जो आप सुभ अङ्गिरा के साथी भये सो आप धन देने वाले सुरत्न हवि की कामना करने वाले होकर देवतों के अन्न को जानकर उस अन्न को हम को दीजिये ॥

१०—हे वनस्पति आप रस्सी से बांधकर अन्न इन्द्रादि को पहुंचाइये देवता हवि के अर्थ वनस्पति का स्वादु लेते हैं और मेरे बुलाने पर द्यावापृथिवी की रक्षा करते हैं ॥

११—हे अग्नि आप हमारी यज्ञ में इन्द्र वरुण और मरुत को आकाश और अन्तरिक्ष से हम में लाइये और आकर वह सब देवता कुश परबैठें और बैठकर स्वाहाकार हवि से आनन्द को पावें ॥

बृहस्पत इत्येकादशर्चं तृतीयं सूक्तम्

१—हे बृहस्पति वचन उच्चारण के पहिले जो नाम कि पदार्थों को धारण कराया वही वचनों के आगे चलने वाला होवे उन में से जो श्रेष्ठ और पाप रहित ज्ञान है गुहा के विषे निहित वेद के अभ्यास काल में प्रेम से प्रकाशमान होवे ॥

२—जैसे भ्रष्ट जव दुर्धाव को पवित्र करते हैं वैसेही धीर विद्वान् बुद्धि युक्त वचन कहते हैं तब उनके सखा मस्त्रादिविषयज्ञानयुक्त उनके ज्ञानको जानते हैं और उनके वचन में कल्याणकारी लक्ष्मी को पाते हैं ॥

३—धीर पुरुषों ने वचन के मार्ग को यज्ञद्वारा पाया है और उन के पाने पर बहुत देशोंमें मनुष्योंने उन से सीखा—यज्ञ करने वाले उस वाचा को सातमन्द करने वाली पक्षी रूपसे स्तुति करते हैं ॥

४—एक पुरुष उसको देखकर फिर नहीं देखता है और दूसरा सुन कर

नहीं सुनता है तो उसके अर्थ अपने शरीर को विस्तृत कीजिये जैसे सम्भोग कामी स्त्री अच्छे वसन पहिर कर पतिके पास जाती है॥

५—एक विद्वानों की सभामें मधुके समान वचनको पीता है उसको धातार्थी कहते हैं ऐसे पुरुष को वेदार्थ विचार में भागी रखते हैं और अविज्ञात पुरुष बिना धेनु के जाता है और पुष्प फल रहित वाचा का सुनने वा पढ़ने वाला है उसके वचन प्रतिरूपी चलते हैं॥

६—(अ) जो वेद जानने वाले सखाको छोड़ता है वह सब पुरुषोंके दुर्वचन का भागी होता है और जो वेद व्यतिरिक्त सुनाताहै वह व्यर्थ वचन सुनता है जो सुकृतों के मार्ग को नहीं जानता है उसका सुनना भी निष्फल है॥

७—आंख वाले और कान वाले सखा प्रज्ञादि वस्तुसे अतुल्यता को प्राप्त होतेहैं उनमेंसे कोई गहरे और कोई उथले ह्रदके नहानेवाले दिखपड़तेहैं॥

८—जो ब्राह्मण अपने शुद्ध ह्रदय से वेदार्थ में गुणदोषनिरूपण के अर्थ मनको लगाता है उस ब्राह्मण के संगको ग्रहण करो जो पुरुष विद्याकी प्रवृत्ति से अविज्ञातार्थ है उस पुरुष को छोड़ो॥

९—वह जो वेद के अर्थ को नहीं जानते हैं इस नीचे लोक में ब्राह्मणों के साथ में नहीं चलतेहैं देवतों के साथ में नहीं पहुंचते हैं और जो वेदार्थ में तत्पर नहीं होतेहैं वह ऋत्विज नहीं होते हैं वह पुरुष अयवश होतेहैं वह मनुष्य लौकिकी वचनको पाकर और पाप कारी वचनों से युक्त होकर कृषीको विस्तार करते हैं॥

१०—समान ज्ञानवाले मनुष्य सभा के बैठने वाले ऋत्विज के साथ में जानेवाले जश से आनन्द को पाते हैं वह सोम पाप का हरने वाला अन्न देने के अर्थ बहुत समर्थहै सर्वदा यजमान आनन्द को पाता है॥

११—हे होता ऋचों की याप पालिये हे उद्गाता याप ऋचों को पालिये और ईश्वरार्थ ऋचो में गायत्री को गाइये ब्रह्मा प्रायश्चित्तादि वचनों को कहते हैं अध्वर्यु यज्ञ की ऋचों से नापते हैं अर्थात् ऋचो से यज्ञ कर्म को करते हैं इसकारण वेदार्थ का ज्ञान होना चाहिये॥

—ः०ः—

देवानामिति नवर्चं चतुर्थं सुक्तम्

१—हम देवतों की उत्पत्ति को कहते हैं विस्पष्ट वचन से पूर्वयुग में उत्पन्न प्रशंसनीय स्तुति को स्तोता देखता है॥

२—ब्रह्मणस्पति अदितिने इन देवतों के जन्मों को उसी प्रकार प्रकाशित किया जैसे चमड़ा से कर्मकार अग्नि को प्रज्वलित करता है देवतों के पूर्व युग में असत् अर्थात् रूपवर्जित से सत् अर्थात् रूपविशिष्ट देवादिक उत्पन्न होतेभये॥

३—देवतों से पूर्वयुग में असत् से सत् उत्पन्न होता भया तब सब दिशा उत्पन्न होते भये और तब उत्तानपद अर्थात् वृक्ष उत्पन्न होते भये॥

४—पृथिवीने उत्तानपद को उत्पन्नकिया इसीपृथिवी से दिशा उत्पन्न भये और अदिति से दक्ष और दक्ष से अदिति फिर उत्पन्न होतेभये॥

५—अदितिने हे दक्ष जो तुम्हारी दुहिताथी आदित्यों की उत्पन्न किया और उस अदिति को अमृतबन्धन वाले और कल्याण कारी देवतोंने उत्पन्न किया॥

६—हे देवता उस जल में आनन्द से आप स्थित होते भये उस जल के विषे आपने नृत्य किया और हमारे अर्थ एक तीव्र अंश भेजा॥

७—हे देवता जैसे वृष्टि से मेघ भुवन को पूरित करते हैं वैसेही आप अपने तेज से पूरित हो इस समुद्र में छिपेहुये सूर्य को प्रातरुदय के अर्थ लाते हो॥

८—अदिति के आठ पुत्र उत्पन्न होते भये उसने सात पुत्रों को देवतों में लगाया और आठवेंपुत्र मार्त्तण्ड को सब के ऊपर रक्खा॥

९—अदितिने सातो पुत्रों से पूर्व युग को जनाया और प्राणियों के मृत्यु अर्थ मार्त्तण्ड को दिव लोक में स्थापित किया॥

जनिष्ठाइत्येकादशर्चं पञ्चमं सूक्तम्

१—हे इन्द्र आप बल और २ शत्रुओं के मारनेके अर्थ सबसे बलवान् किये गयेहो आपस्तुतियोग्य बल शरीरवालेहो बड़े अभिमानवाला इन्द्रमरुतकेशत्रु इस युद्ध में वृद्धि को पाता भया वह इन्द्र की माता ऐसे वीर को धारण करती भई॥

२—ऐसे इन्द्र की सेना उस के समिष बैठती भई—ऐसे चलनेवाले मरुत के साथ इन्द्र बहुत स्तुति से वृद्धि को पाताभया—बड़े बलसे इन्द्रने बलको मार कर बेरोहुई गौवों की अन्धकार से लौटा लाता भया और वृत्र के गर्भरूपी जल को गिराता भया ॥

३—हे इन्द्र आपके बड़े पैर हैं—जहां आपजाते हो तहां उत्सव वृद्धि को पाते हैं जो देवता हैं वहभी वृद्धि को पाते हैं हे इन्द्र आप हजारों सामाह्नक को धारण करते हो और अश्विन से आहूत हो ॥

४—हे इन्द्र संग्राम में जल्दी करने वाले आप यश को पाते हो—नासत्या अश्विन् आप के सखा होते हैं आप अनेक प्रकार को वस्तु धारण करते हो हे शूर इन्द्र तुम्हारे अनुचर अश्विन् धन को देते हैं ॥

५—इन्द्र वश से चलने वाले मरुत के साथ आनन्द को पाकर यजमान के अर्थ धन देता है वह इन्द्र प्रजा के निमित्त दस्यु के मारने के अर्थ जाताभया वह इन्द्र अवर्षण से शूयमान होकर वृष्टि को करता भया और उसइन्द्र ने तम को दूर किया ॥

६—इन्द्रने समान नाम वाले अश्विन् के साथ वृत्र को मारा जैसे उषा प्रकट को नाम करती है हे इन्द्र आप दीप्त मण्डल से निष्कामना वाले वृत्र-वध की इच्छा करने वाले मरुत के साथ वृत्र वध के अर्थ गये और उस के हृदय आदि शरीर को काटा ॥

७—हे इन्द्र आपने नमुचि असुर को मारा ऋषि की यज्ञ को पूर्ण करने की इच्छा करके आपने उस असुर को ऋषि के अर्थ मारा आपने देवतों के मध्य में मनुऋषि के अर्थ मार्ग बनाया वह मार्ग अकुटिल है ॥

८—हे इन्द्र आप इस जल को पूर्ण करते हो हे इन्द्र सब के ईश्वर आप वज्र को धारण करते हो आप को बल से संपूर्ण देवता आनन्द देते हैं आप उदक वाले मेघ को जिन का मूल ऊपर है अधोमुख करते हो ॥

९—उस जल के विषे आपने चक्र को रखते भये और उस को मधु से आच्छादित करते भये और पृथिवी पर गिर के जो स्थित भया उस को आपने गौ और औषधियों में रक्खा ॥

१०—आदित्य विश्व से श्रेष्ट प्रकाशमान आप को कहते हैं बल से उत्पन्न

प्रसुवद्दति नवर्षं चप्तमं सूक्तम्

१—हे जल देवता आपकोमहत्व को स्तुतिकरनेवाले उत्तम वचनों से गाते हैं (विवस्वत यजमान को विधि पर अच्छे वचन कहता है) वह वचन यह है-मानमात होकर तीन स्थान में आप हे जलदेवता गये और अपने बल से संपूर्ण नदियों को नचाकर सिन्धु को बढ़ाया॥

२—हे सिन्धुदेव आपके बहने के अर्थ वरुण देवताने मार्गको खोदा और उस मार्गपर आपजबभी बहतेहो आपकेअर्थवरुणनेनदियोंको अत्यन्त विस्तृत बनायाहै आप भूमिपर नीचोगलोमें जातेहो आप पर्वतको तोड़कर समुन्नित मार्ग सेजाने वाले होकर सम्पूर्ण जगत के प्राणियों के प्रत्यक्ष पूजनीय हो॥

३—भूमिके ऊपर वर्त्तमान आप अपनी कामना से दिवलोक को जातेहो—अपर्यन्त वेग युक्त भानु की दीप्ति से आप प्रकाशमान हो-जैसे वृष्टि फैलती है वैसेही आपका शब्द फैलता दिखाई देता है-जैसे वृषभ बड़े शब्द को करता है वैसेही सिन्धु भी अच्छी प्रकार शब्द को करता है॥

४—हे सिन्धु जैसे माता पुत्रको पालतीहै वैसेही सबनदियांआपको और जैसे पय युक्त धेनु बछरा को तरफ जाती है वैसेही सब नदियां शब्द करके आपको तरफ जाती हैं-युद्ध करने वाले राजाके समान आप को नद भेट लेजाते हैं और आप के साथ जाने के लिये सब भागों से जाते हैं॥

५—हे गंगा यमुना सरस्वती शुतुद्री परुष्णी असिक्न्या और मरुत से बढ़ीहुई वेगवन्ती सोमायुक्त वितस्ता आप सब हमारे स्तोत्र को सुनिये॥

६—हे सिन्धु आप क्रम से गोमती नदी को पर्वत से उतार कर पहिले सब नदियों के साथ में बहाइये और सुसर्त्तो श्वेती और कुभा के साथ में अपने रथ को सजकर आप आइये॥

७—ऋजु गामी श्वेतवरण आरोप्यमान सिन्धु नद वेग से उदक को ले-जाता है अहिंसित सिन्धु जल बहाने वाला नदियों में बड़े वेग चलने वाला बड़वा के समान हैं और चित्र वरण पुरुष के समान दर्शनीय है॥

८—यह सिन्धु शोभन अश्व युक्त शोभन रथ वाला है शोभन वचन हिरण्मयाभरण सुकृत कर्म वाला सिन्धु अन्नवान्है अपने समीप दिवसे ऊर्णके देने-

... नित्य तरुणता को प्राप्त होता जो इंग वाले हिन्द्र सुभग नद अपने
...ार मधु को बढ़ाता है ॥

८—हिन्द्र नद सुन्द्र चारो रथमें घोड़ोंको जोतताहै और उस रथमें दव
...ता है इस यज्ञ में हिन्द्र के रथ की महिमा की स्तुति करते हैं आप अति-
...त प्रकाशमान कीर्त्ति वाले मण्डल को प्राप्त हो ॥

ग्राव द्व्यष्टपं अष्टमं सूक्तम्

१—हे ग्रावाण आपके रस को विभाग से हम पाते हैं-आप सोम से इन्द्र मरुत और रोदसी को फैलाते हो-आप सहोत्पन्न अधोरात्रि को सम्पूर्ण याग-यज्ञ में उदभेदक धन से पूर्ण करते हो ॥

२—हे ग्रावाण आप उत्तम सोम को दीजिये हाथ में लिया हुआ बड़ा शिल के ऊपर घोड़े के समान चले-जैसे अध्वर्यु सोम को हाथ में बढ़ा लेकर पीसने का बल रखता है वैसेही यजमान भी मनु के हरानेवाले बलको पावें जैसे ग्रावा बलको देते हैं वैसेही बड़े धन देनेवाले अग्नि के घोड़े धनको देवें ॥

३—उन पत्थरों को अभिषव युक्त हमारा कर्म प्राप्त होवे जैसे पूर्व-काल में राजा मनु को प्राप्त हुवा-गौवों से परिव्रत घोड़ों से परिव्रत त्वष्टा के पुत्र अहिंसितयज्ञकेसाधनकरनेवाले असुरोंकेमारनेवाले देवतों को दि-खाते हैं ॥

४—हे अद्रि आप राक्षसों का नाश कीजिये उनको काटिये और निऋति अर्थात् पाप देवता को हम से दूर रखिये और राक्षसों की हिंसा कीजिये और हम को हरप्रकार का धन दीजिये कि हम देवतों के आनन्द देनेवाली स्तुति को करें ॥

५—अत्यन्त बलवान् ग्राव आपको स्तुतिमें करता हूं-शीघ्र कर्मवाले विभु सोमाभिषव में अत्यन्त वेग युक्त अग्नितुल्य अन्नकेसाधक ग्राव का आप है यजमान पूजन कीजिये ॥

६—वषभिव्रत ग्राव हम को सोम रस देवें-हे दीप्तिमान् आप स्तुति रूपी वचनसे सोम याग के विधि स्थापित हूजिये-नेता ऋत्विज जिस यज्ञमें उत्तम सोम रस को दुहता है जब सब दिशा में स्तोत्र को पढ़ता है और दीप्ति पाता है ॥

७—रथ वाले ग्राव के सोम को निकालते हैं अभिषव करता ऋत्विज यवि को मार्जन करके शोधता है ॥

८—हे नेता ऋद्रि आप शोभन अभिषव कर्म वाले हूजिये-जो आप इन्द्र के अर्थ सोम तयार करतेहो और जोजो उत्तमधन है उनसबको दिव्यस्थानकेविषे आपपहुंचाइये और जोजो वासयोग्य धनहै वहआपयजमानकेअर्थ दीजिये॥

अथाष्टम इत्यष्टर्चं नवमं सूक्तम्

१—अन्न के विन्दु के समान वाचासे आनन्द को पाकर मैं धन की पाताहुं इनविशिष्ट यज्ञ सब को जानती है अच्छे महानगण मरुत को मैं शोभा अर्थ स्तुति करता हुं ॥

२—शोभा के अर्थ मनुष्य आभरण से अपने को भूषित करते हैं अपने शरीर को शोभा के अर्थ मरुत गण अपनी सेना को नहीं छोड़ते हैं दिव अदिति के पुत्र वेगचलनेवाले मरुत हमारी स्तुति से वृद्धि को पाते हैं ॥

३—मरुत पृथिवी की महत्तासे अतिरिक्त होकर अपने शरीर से प्रकाशमान हैं और वीरके समान स्तुति को कामना करने वाले हैं और मनुष्यों के समान अभिगत दीप्त वाले हैं ॥

४—हे मरुत विना मेघ के संतात किये भये यह बड़ी पृथिवी उत्पन्न करने वाली नहीं होती है यह विप्रत्नपयागसाधनहवि अन्न वाले सुख देने वाले मरुत गण को प्राप्त होवें ॥

५—हे मरुत आप वह घोड़ों के समान वा रथसम्बन्धी किरण युक्त आदित्यकेआभाआयुक्त उषा के वा अग्नि पर्वो के वा यथपिअरेहुये शत्रु के मारने वाले के समान चलने वाले हूजिये ॥

६—हे मरुत आप बड़े दूर देश से आते हो आप बड़े उत्तम संराधनीय वसु देने वाले हो दूरसे शत्रुवों को प्रथक् करो जो छिपे हैं ॥

७—मनुष्य यज्ञ को ऋच् पन्द से समाप्त करके मरुत की स्तुति करता है और शोभन पुत्र युक्त अन्न को धारण करके यह इन्द्रादि देवतों को सोमपान में बुलाता है ॥

८—यज्ञ के विषे यज्ञयोग्य|जलदेवता प्रकाश मान सुख के देने वाले हैं

वह मरुत हमारे होवें और यज्ञ से जाने वाली स्तुति की रक्षा करें और
बड़ी हवि की कामना करें ॥

विप्रास इत्यष्टर्च दशमं सूक्तम्

१—जैसे ब्राह्मण स्तुति से शोभन आध्यान योग्य होता है वैसेही आप
स्तोत्रों से सुमन होते हो और देवतों के यज्ञ में-तृप्त-करने वाले शोभन-
कर्मा वाले यजमान के समान आप वृष्टि देने वाले होते हो और सुदर्शनीय
पृथिवी के निवास करने वाले अभिषिक्त राजों के समान शत्रुके निर्दोष करने
वाले होतेहो ॥

२—हे मरुत जैसे अग्नि अपने तेज से शोभा युक्त होता है वैसेही आप
अपने वक्षस्थल को अलंकृत करके अपनी रक्षा को देकर आनी दूसरीव
सुनीति वाले सोम के समान सुख युक्त हूजिये ॥

३—जो मरुत अन्नको कपातेहैं और जो चलने वाले हैं वह अग्निके जिह्वा
या योद्धा के समान शौर्यकर्मावाले पितृयोंकिवचनको छाननेवाले मरुत हमारे
यज्ञ में आवें ॥

४—रथ के आरा के समान जिन की एक नाभी होती है आप वसुभूत
होकर अन्तरिक्ष में वर्तमान हो—जयशील शूर के समान दीप्तिको पाईहुई
अच्छेधनदेनेवाले मनुष्य के समान आप उदक के देने वाले हूजिये और
उत्तम स्तोत्र को अच्छेप्रकार ग्रहण कीजिये ॥

५—जो मरुत अश्व के समान शीघ्रगामी और वसुओं के समान रथ के
स्वामी अच्छे दानवाले जलके समान नीच जानेवाले नानारूप से विचरनेवाले
हैं वह अङ्गिरा के पुत्र के समान साम के गानेवाले रहें ॥

६—शेर के समान उदक के भेजने वाले सिन्धु के बढ़ाने वाले पर्वत के
फाड़नेवाले शत्रुओं के मारने वाले बछड़ों के समान अपनी माता की गोद में
विहार करने वाले बड़ी दीप्ति से युक्त आप होवो ॥

७—जो मरुत उषा की किरणों के समान यज्ञ के आनेवाले हैं और अ
कल्याण के कामना के देने वाले हैं जैसे नदियां दीप्यमान आयुध के
द्वारा के समान दूरदेश से छेदकर आती हैं वह हमारी यज्ञ में पहुंचें ॥

८—हे महत देव स्तुति से वृद्धि को पाकर आप हम को अन्न सहित धन वाला कीजिये और अन्न के स्तोत्र वाला कीजिये आपके प्रयत्न से जो स्तोत्र हम बोलेंगे वह हम को रत्न का देने वाला होगा ॥

अपश्यमिति वर्गे एकादशं सूक्तम्

१—इस बड़े अग्नि के महत्त्व को मैं देखता हूं जो अग्नि कि मरत रूपसे प्रजा में रमता है इस अग्नि के नानारूप को दाढ़ी दांत को बांधे हैं इस अग्नि के अनेक दन्त हैं और वह बहुत काठ का खाने वाला है ॥

२—इस अग्नि का सिर गुहा के लिये निहित है अर्थात् मनुष्य के उदर में वर्त्तमान है उसको आंखें अलग रक्खी हैं दांत से न खाकर जिह्वासे काठको चाटता है-इस अग्नि को अनेक अङ्ग से जानकर हवि से अध्वर्यादि पूजन करते हैं वह अध्वर्यु पात्र धारण अथ उन्नत कर होकर नमस्कार युक्त प्रजा के मध्य में स्थित हैं ॥

३—पृथिवी माता को बहुत छिपी हुई औषध लता को यह उसीप्रकार ढूंढता है जैसे कुमार जानुके बल चलकर अपनी माता के स्तन को—यह अग्नि दीप्यमान निरस दूध को जो पृथिवी के अन्त से उत्पन्न होता है पके अन्नके समान जानता है वह पृथिवी के मूल से आकाश तक चाटता जाता है ॥

४—हे रोदसी आप से मैं सत्य कहता हूं यह जायमान अग्नि माता के गर्भ को खाता है मैं मनुष्य उस देवता के गुण को नहीं जानता हूं—हे वैश्वानर अग्नि बड़े जानने वाले आप अपने को जानते हो हम नहीं आप को जानते हैं ॥

५—जो यजमान इस अग्नि के अर्थ शीघ्र धन को धारण करता है आज्य और घृत छोड़ता है और लकड़ी से उसको पुष्ट करता है उसको हजारों आंखसे आप देखिये—हे अग्नि आप हमारे अनुकूल प्रवर्त्तमान हूजिये ॥

६—हे अग्नि आप से मैं अविद्वान् पूछता हूं किसकारण आप क्रोध और हिंसा को करते हो-किस स्थान में आनन्द को पाते हो किस स्थानमें लीला को करते हो अन्न काठादि को खाकर आप हरित वर्ण हो [illegible] का रूप विविधप्रकारका करते हो जैसे गौवें घ [illegible] रतो हैं ॥

७ वह अग्नि दुर्गो [illegible] ड़ों के

बन के वृक्ष रस्सी के समान लता से बंधे हुवे थे—उन को अग्नि टुकड़े २
करता भया—और आप रश्मि से वृद्धि को पाकर काठ के खण्ड करके
अपनी वृद्धि करता भया ॥

अग्निसप्तिमिति सप्तर्षं द्वादशंसूक्तं

१—हे अग्नि तेज युद्ध में जीतने वाले घोड़े दे—पिता के उपदेश का
मानने वाला कर्म्म में निष्ठित पुत्र दे—जो अग्नि इस द्यावा पृथिवी पर अनेक
प्रकार से विचरता है वह।अग्नि स्त्री को वीर गर्भ धारण करने वाली
करता है ॥

२—कर्मवान अग्नि कल्याण को देने वाली है अग्नि ने द्यावापृथिवी के
विषे प्रवेश किया अग्नि अकेले योद्धा को संग्राम में भेजता है और अपनी
सहायता से जयको प्राप्त कराता है और अग्नि बहुत से शत्रुवों को मारताहै ॥

३—इस अग्नि ने उस प्रसिद्ध जरत्कर्ण ऋषि की रक्षा की है इसी अग्नि
ने जल में जरुथ असुर को जलाया इसी अग्नि ने अत्रि को घामसे बचाया—
इस अग्नि ने नृमेध ऋषि को पुत्रादि लक्षण युक्त किया ॥

४—यह अग्नि वीर रूपवाला धनको देता है—यह अग्नि धन ऋषि को
देता है—जो ऋषि हजारों गौवों को पालता है—अग्नि आकाश में
यजमान से पाई हुई हवि को फैलाता है अग्नि का शरीर बहुत स्थान में
वर्त्तमान है ॥

५—अग्नि को ऋषियों ने अनेक स्तुति से बोलाया है—अग्नि को मनुष्य
युद्ध में शत्रु का मारने वाला पाते हैं—अग्निको अन्तरिक्ष में पक्षी राज्ञि को
देखताहै—अग्नि हजारों गवों के साथ में रहता है ॥

(क) ६—अग्नि को प्रजा स्तुति करती है जो प्रजा मनुष्य रूप में उत्पन्न
है जो प्रजामनुरूप से उत्पन्न है वहभी अग्निको स्तुति करतीहै—यज्ञ के धारे
हुये वचन को अग्नि सुनती है अग्नि का मार्ग घृत के छोड़ने बनता है ॥

७—अग्नि को स्तुति के अर्थ यज्ञ स्तोत्र ऋत्युओं ने बनाये हमने महत्
अग्नि को उत्तम स्तुति की है युवतम अग्नि आप स्तुति करने वालों की रक्षा
कीजिये हे अग्नि महत् धन हमको दीजिये॥

———०—०———

यद्दमेति सप्तर्चं षोडशसूक्तं

१—जिस ऋषिने इन संपूर्ण भुवनों को पहिले हवन किया और होता रूप होकर बैठा वह हमारा पिता होता भया—आशीष वचन के प्रतिपादन के अर्थ स्वर्ग की कामना करके अग्नि से आच्छादित विनष्ट भूतों में आप प्रवेश करता भया—विश्वकर्मा ने सर्वभूत को हवन करके फिर अपने को हवन किया ॥

२—उत्पादन वेला के विषे कौनसा अधिष्ठान या उपादान कारण क्या था—क्या कथा थी अर्थात् कौन सत् कौन असत् था—जिससे सर्वद्रष्टा विश्वकर्माने अपने तेज से पृथिवी और आकाश को बनाया ॥

(क) ३—विश्वकर्माके नेत्रसब ओरहैं उसकेमुख सबओरहैं उसके हाथसब ओर हैं उसकेपैर सब ओरहैं बाहु को वह हिलाताहै पैरको वह हिलाता है वह एक प्रकाशमान देवता होताहै वह द्यावापृथिवीको उत्पन्न करता है ॥

४—कौनसा वह वनहै कौनसा वह वृक्षहै जिससे कि द्यावा पृथिवी छांटी गयी वह बुद्धिमान जनों ने अपने मनमें विचारा और ईश्वर भुवन को धारण करके किस स्थान में बैठता भया ॥

५—हे विश्वकर्मा जो आपके उत्तम मध्यम और अधम स्थान हैं हवि पाकर आप उनको हमें सिखावो और स्वधावान् होकर आप अपने शरीर को बढ़ाइये ॥

६—हे विश्वकर्मा हवि से वृद्धि को पाकर आप अपने पूजन को करते हो पृथिवी और आकाश का पूजन होता है और जन मुग्ध हो जाते हैं इस यज्ञ में वही फल देने वाला सूरि है ॥

७—आज मैं इस यज्ञ में वचन के स्वामी विश्व के कर्ता मनोजित गमनवाले देवता को बुलाता हूं वह देवता हम को सम्पूर्ण हवनकोंरक्षा देताहै हमारी रक्षा के अर्थ वह विश्वके सुखका देनेवाला और साधुकर्म वालाहै॥

चक्षुषःपिता इति सप्तर्चं षोडशं सूक्तम्

१—शरीरकापिता मनकरके धीर ने उदक को पहिले उत्पन्न किया और द्यावापृथिवी पर वह चलता भया—और जब इन के प्रान्त दृढ़ करता भया तब द्यावापृथिवी जैसी है वैसी होती भई ॥

२—विश्वकर्म्मा सब स्थान का रहैने वाला मङ्गल को प्राप्त इत्यादि का देने वाला जगत का करता परम संदृष्टा ऋषियों के शरीर को वहकै आनन्द देता है उसी को ऋषि लोग एक परम देवता कहते हैं॥

(क) ३—जो हमारा पिता उत्पादक विधाता हमारे विश्वभुवन के प्रकाशमान धाम को जानता है—और देवतों के प्रकाशमान स्थान को जानता है वह सब देवतों का नाम रखने वाला है वह कौ है यह प्रश्न करके वह एक है यह उत्तर पाते हैं॥

४—पूर्वकाल के ऋषियोंने उस विश्वकर्म्मा को पुरोडाशादिलचण धन से पूजन किया और अवके स्तुति करने वाले बड़े स्तोत्रों से अब पूजन करते हैं स्थावर और जङ्गम और लोक में स्थित जो प्राणी हैं वह सब उसविश्वकर्मा से तेज को लेते हैं॥

५—जब दिव और पृथिवी से परे वर्त्तमान था और देवता और असुर के परे बर्त्तमान था किसने गर्भ को पहिले धारण किया था जिस गर्भ में प्रकाशमान देवता एक दूसरे को देखते भये॥

६—इस गर्भ को सृष्टि के पहिले जलने धारण किया जिस गर्भ के विषै संपूर्ण इन्द्रादि देवता आते भये उस अज के नाभि में एकअण्डा अर्पित होता भया जिस अण्ड के विषै विश्वभुवन अर्पित होते भये॥

७—उस को नहीं जानते हैं जिसने इन भूतों को उत्पन्न किया है इस ओर हैं आप और हो यह खाली अन्धकार में प्रवृत होने से ढुवा था,प्रसनमात्र है प्राण को तृप्त करने वा स्तुति करनेसे विश्वकर्म्माके तत्व नहीं जानपड़ते॥

अत्रोमन्त्यो इतिसप्तचं पञ्चदर्श सूक्तम्

(क) १—हे मन्यु (क्रोधाभिमानी देवता) वह आप का पूजन करने वाला जो शत्रुवों को वज्र से मारने वाला है बाहरी और भीतरी बल को प्राप्त करै जिससे हम दास और आर्य्य दोनो प्रकार के शत्रुवों को जीतैं बलवान् कारक रखने वाले आप के उत्पादित बल से युक्त होकर हम शत्रु को जीतैं॥

२—हे मन्यु आप इन्द्र हैं आपही सबदुख हैं आपही होता वरुण ज्ञात बेद हैं—मानुषी प्रजा मन्यु की स्तुति करती है—हेमन्यु हमारे पिता तपका को समान प्रीति से आप रक्षा कीजिये॥

३—हे मन्यु आप हमारा यज्ञ में प्राप्त हो आप बल वालों में बड़े ...

नाह् हो—हो आप हमारेपिता तपमाऊी आनी सहायताहे शत्रुवों परजिता-
वो—हे अभिषदृस्युपौरशत्रकेमारनेवाले संपूर्ण वस्तु आप हमकोदीजिये ॥

४—हे मन्यु आप हराने वाला बल रखते हो आप स्वयंभू क्रोध के रूप
हो आप शत्रु के हराने वाले हो सब के देखने वाले हो आप सहनशील
बलवान् हो ऐसे आप संग्राम में हम को बल दीजिये ॥

५—हे प्रकट ज्ञान वाले मन्यु आप के बड़े कर्म के भागसे रहित होकर
आपको यज्ञ में हम बोलाते हैं विना आप के युद्ध में शत्रुवोंसे हम हार कर
दूर भागते हैं हम विना कर्मके किये हुये क्रोधकी चाल आप अपने तनकी
शुभ में बल देने के अर्थ प्राप्त कराइये ॥

६—हे वज्र विश्वकेधर्ता मैं तुम्हारा हूं हमारे सामने आवो जो प्रतीचीन
है हे वज्रिन् मन्यु आप हमारे मित्र और शत्रु को जाने रहिये ॥

७—हे मन्यु शुभयुद्धकेजानेवाले के दक्षिण में हो मेरे शत्रुवों को
मारो आप को उत्तम सोम रस मैं चढ़ाता हूं हम आप दोनों निकलतेही
पहिले सोम को पीवें ॥

त्वयामन्योइति समर्थ षोडशं सूक्तं

१—हे महत मन्यु आप के साथ में रथपर सवार होकर आनन्द युक्त
जाने वाले पृष्ट तीक्ष्ण बाण वाले आयुध को धारण किये मनुष्य को युद्ध
में लेजाने वाले देवता अग्निरूपी होते हैं ॥

२—हे मन्यु अग्नि के समान आप प्रज्वलितहो आपशत्रुवोंको हरावो हे
सहनशील हमारी फौज में आप हूजिये हमारे संग्राम में आप बोलाये जाते हैं
आप मारकर शत्रुवों को तोड़ डालिये हमको बलदेकर आपशत्रुको मारिये ॥

३—हे मन्यु हमारे अभिमानी शत्रुवों को हराइये-मार कर काट कर फि
फिर न जीवे उनको शत्रुवों के बीच में फेंकिये ॥

४—हे मन्यु आप स्तुति को पाकर अकेले बहुत से शत्रु को मारते हो
आप हमारे विरोधी प्रत्येक प्रजा से लड़िये और हमारी सब वस्तु को
तीक्ष्ण कीजिये हे अच्छिन्नदीप्तमन्यु तुम्हारी सहायतासे हमप्रकाशमान घोष
की विजय के अर्थ करते हैं ॥

५—हे मन्यु इन्द्र के समान आप विजय के करने वाले हो आप के वचन अनिन्दित होते हैं ऐसे आप अधिक रक्षा के देने वाले हूजिये इस यज्ञ में हे सहन शील हम आपके स्तोत्र को करते हैं कि इस स्तोत्र से आप प्रसिद्ध हूजिये आप को बल का पालने वाला हम जानते हैं ॥

६—हे वज्रभूत शत्रुवों के मारने वाले मन्यु अभिभवकेदेनेवाले उनके साथ में उत्पन्न आप उत्कृष्ट बल को धारण करते हो—हे मन्यु कर्म को करके हमारी यज्ञ से आप चिकने हूजिये—हे पुरुहूत मन्यु हमारे अर्थ बहुत धन को मिरजिये ॥

७—विभाग को प्राप्त दोनो प्रकार का धन एकत्र करके हे मन्यु आप हमको दीजिये-आवारक मन्यु देवता शत्रुवों के हृदय में भय को देता है ऐसे डरे हुये शत्रु पराजय को प्राप्त कर अपने निवास स्थान को छोड़ जाते हैं ॥

॥ इति षष्ठ अनुवाक ॥

—:o:—

प्रार्थना

वेद के पढ़नेवालों के सेवा में निवेदन है कि इस पुस्तक में जिसऋचा का अर्थ अशुद्ध जानपड़े उसका शुद्ध अर्थ कृपा करके प्रमाण सहित इस सेवक को लिख भेजें इसकारण कि जब दुबारा यह पुस्तकछपै वह अशुद्धियां निकल जावें—ज्ञाता पुरुषों से कर जोड़कर यहविनती करताहूं कि वह वेद और पक्षपात रहित दृष्टि से इसे देखें गे और निर्पक्ष होकर इस किंकर को पुस्तक के दोष बतलायें गे ॥

माधवप्रसाद त्रिपाठी सामवेदी हेडमास्टर
हाईस्कूल लखीमपुर अवध

****

ओ३म् तत्सत् ॥

लखीमपुर धर्म्मसभा के कार्य्य

१—संस्कृत और हिन्दी विद्या की वृद्धि देना द्विज धर्म्म का सिखलाना और द्विज धर्म्म में विश्वास कराना इस सभा का प्रथम कार्य्य है ॥

२—इस सभा का प्रयोजन धर्म्म विषयों का सारांश जानने का है इस में सनातन द्विज धर्म्म पर विद्वज्जनों के व्याख्यान पक्षपात रहित होते हैं और धर्म्म विषयी शङ्काओं का समाधान भी होता है ॥

३—विप्रों को विप्र तुल्य आदर करना इस सभा का परम धर्म्म है ॥

४—प्राचीन ग्रंथों का इकट्ठा करना और उसका एक पुस्तकालय बनाना इस सभा पर उचित है ॥

५—इस सभा का यह भी मुख्य कार्य्य है कि रईसों के बालकों को सनातन द्विज धर्म्म शिक्षा पर निगाह रक्खे ॥

राजा बलभद्र सिंह चौहान तालुकदार महेवा
सरपरस्त, धर्म्मसभा लखीमपुर

इस द्विज धर्म्मसभा के प्रधानमेम्बर और पण्डितगण हैं

राजा कृपादत्तसिंह तालुकदार ओयल	कुंवर नरेन्द्र बहादुर सिंह
राजा गुमान सिंह तालुकदार भूड़	कुंवर क्षितिपति राय सिंगाही
राजा गोवर्धन सिंह तालुकदार भूड़	राय रामदीन
राजा दिलीपत सिंह तालुकदार भूड़	सेठ द्वारिकादास रईस लखीमपुर
रानी भानकुंवर भूड़	पं० माधवप्रसाद त्रिपाठी सामवेदी
राजा धवल सिंह कैमहरा	पं० कालका प्रसाद वाजपेई
राजा रघुराज सिंह इशानगर	पं० हरिप्रसाद मिश्र
राव मुनेश्वरबख्श सिंह मल्लापुर	पं० रामचरण मिश्र
ठाकुर शिवसिंह	पं० बुध माधवराम
ठाकुर राजेन्द्रबहादुर सिंह	पं० आनन्दगिरि ब्रह्मचारी

कुल मेम्बरों की संख्या [illegible] है

…यादह हुं—इस सभा का विचार यह है कि अवध में हरएक जिलामें एक २ सभारहै और हर एक जिले की सभा अपनी ब्रांचसभायें गांव २ में फैलावें—और एक मध्य सभा विचारकर किसी स्थान पर की जाय ॥

राजा बलभद्र सिंह चौहान तालुकदार मरेव
सरपरस्त धर्मसभा लखीमपुर

द्विजधर्मानुरागी इसको चित्त लगा कर देखैं

ब्रांच सभा के नियम

१—पांच या पांच से ज्यादह मेम्बर होने पर ब्रांच सभा कायम हो सकती है॥
२—प्रत्येक ब्रांच सभा को कम से कम १०) का चन्दा एकत्र करना पड़ेगा—इसमें से ५) माहवारी प्रधानसभा को देना पड़ेगा और ५) माहवारी का एक उपदेशक रखना होगा ॥
३—प्रधान सभा से प्रतिमास में जितना रुपिया ब्रांच से भेजा जायगा उतनेही रुपिया कि धर्म विषयी पुस्तकें मुफ़त बांटने के लिये लखीमपुर से भेजी जाया करेंगी परन्तु ५) कमकी नहीं ॥
४—हर एक ब्रांच सभा के प्रत्येक मेम्बर को धर्म शिक्षा पत्र रायल साइज २ फाम १६ पृष्ट का मिला करेगा-इसपत्रमें प्रधान और ब्रांचसभाकेउत्तमर व्याख्यान द्विज धर्म विषय पर छपा करेंगे-इसकी कीमत ॥।) साल होगी॥
५—प्रत्येक ब्रांच के सरपरस्त क्षत्रियों को होना चाहिये—ताकि दाइम रहो का साथ जो बहुत काल से चला आता है न टूटे—वैश्यों को चाहिये कि कृपणता छोड़कर इसमें धन लगावें ॥

—:(::):—

अवश्य देखिये

—:(०):—

प्रत्येक द्विज को उचित है कि हिन्दी भाषा और देवनागरी प्रचार अवश्य जानें—प्रत्येक द्विज को उचित है कि वेद पढ़ें और उसको विचारें पर संस्कृत विद्या पढ़ने का अवकाश नहीं मिलता इसकारण सनातन धर्मावलम्बिनी सभा लखीमपुर ने—वेदादि द्विज धर्म ग्रंथों का अनुवाद छपवाना शुरू किया है। और जो वेद वा वेदका तात्पर्य न जाने वह द्विजनहीं और वेद के तात्पर्य जानने के अर्थ यह अनुवाद अतिही उत्तम है—प्रत्येक द्विज को चाहिये कि इस अनुवाद को हाथमें रक्खें—इस अनुवाद का मूल्य बहुत ही कम इस कारण रक्खा गया है कि थोड़ी द्रव्य वालेभी इसको लेसकें॥

इस ग्रंथके अनुवाद कर्ता द्विजवर शोभनावालज पण्डित माधवप्रसादजी त्रिपाठी आचार्य सामवेदी हेडमास्टर हाईस्कूल लखीम अवध हैं और मूल्य भी सर्व्वसाधारण के लिये केवल ॥) मात्र रक्खाहै इतने दामपर यह पुस्तक बेदाम है जिन महाशयों को यह धर्म रस चखना हो पण्डितजी या मैनेजर हिन्दी प्रभा प्रेस से मंगालें॥

मोहनलाल मंत्री
सनातन धर्मसभा लखीमपुर अवध

——:o:——

हिन्दीप्रभा प्रेस

उक्त नामका छापाखाना २ वर्षसे लखीमपुर अवध में नियत है इसमें अंगरेजी उर्दू नागरी सबकिस्म का नया टैप मौजूद है और सस्ते दाम पर अच्छा काम किताबी, जाबका, चिक, फार्म, वगैरहका होता है जिन महाशयों को कुछ छपवाना हो कृपा करके एक बार यहां छपवा कर देखलें॥

पं० मथुराप्रसाद व प्रयागदत्त मिश्र
मालिकान मतबा हिन्दीप्रभा प्रेस
लखीमपुर अवध

सूचना

—•:ःoःः•—

सम्पूर्ण विद्यानुरागियों को विदित हो कि निम्न लिखित पुस्तकें इस प्रेस से मिल सकती हैं और पुस्तक विक्रेताओं को १००) की खरीदारी पर २५) सैकड़ा छूट मिलै गी ॥

हिन्दी ऋग्वेदभाष्य १० मं० पूर्वार्द्ध ... ... ॥)
उत्तरार्द्ध ... ... ॥)
तथा ... ... १६)
शिवपुराण ... ... ६)
ब्रह्म वैवर्त्त पुराण ... ... २)
ब्रह्म पुराण—तैयार हो रहा है ... ... १)
ज्ञानमोच ... ... ॥)
पद्मावली रामायण ... ...)॥
स्फुट दूती भेद कवित्त ... ...)।
गोरक्षा संगीत ... ...)।
गो उपकारी फाग ... ...)।
रसतरंगनी ... ...)॥
सस्ता मोटे अक्षरों में ...

—:(::):—

मनेजर हिन्दीप्रभा प्रेस
लखीमपुर अवध